दो शब्द

पहेलियों की छोटी-छोटी कुछ पुस्तकें मुझे अवश्य देखने को मिली हैं परन्तु ऐसी पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार की पहेलियों का संग्रह एक ही पुस्तक में हो दृष्टिगोचर नहीं हुई है। इसी अभाव की पूर्ति इस पुस्तक में की गई है। इसमें एक हजार भिन्न भिन्न पहेलियाँ हैं, जिन्हें बाल-वृद्ध नर-नारी हल-बुझौवल कर अपनी बुद्धयात्मक शक्ति का पोषण कर सकते हैं एवं समय को एक अच्छे कार्य में मनोरञ्जन के साथ व्यतीत कर सकते हैं।

ग्राम निवासी वृद्ध स्त्रियाँ वर्तमान में भी सायंकाल को अवकाश के समय कहानियाँ कहती व पहेलियाँ बच्चों से पूछा करती हैं परन्तु उन्हें इतनी पहेलियाँ स्मरण नहीं रहतीं कि वे प्रतिदिन नवीन-नवीन पहेलियाँ पूछ सकें। अतः उन्हें तथा विद्यार्थियों को यह पहेलियों का संग्रह बहुत रुचिकर होगा, ऐसी आशा है। यह पुस्तक कई वर्षों में समाप्त हो पाई है क्योंकि पत्र-पत्रिकाओं व वृद्ध जनों से जो पहेलियाँ जहाँ पढ़ी या सुनी लिख ली गई हैं। पहेलियों के उत्तर पुस्तक के अन्त में क्रम नम्बर से दिये हुए हैं यदि किसी महाशय को कहीं भ्रम हो तो कृपया उसकी सूचना अवश्य देंगे ताकि मैं दूसरे संस्करण में उसे सुधार सकूँ।

फीमेल नार्मल स्कूल जबलपुर से प्रकाशित होने वाले 'सूर्योदय' नामक पत्र से अधिक संख्या में मुझे पहेलियाँ प्राप्त हुई हैं। अतः मैं उस पत्र की सम्पादिका श्रीमती कुमाबाई अध्यापिका का अत्यन्त आभारी हूँ।

जबलपुर
४-११-३८ } शुभालालमिश्र 'अध्यापक'

—

❀ श्री ❀

हज़ार पहेलियाँ

१—हाथी कैसा सिर है जिसका, मानुस सा है अंग।
मूसा जिसका वाहन रहता, अरुण देह का रंग॥

२—वीणा जिसके कर में रहती, वाहन जिसका मोर।
धरो ध्यान तुम उस देवी का, करो न अब तुम शोर॥

३—सात नेत्र अरु दो सहस, तीन सींग जी चार।
आठ चरण दो पूँछ है, पंडित करो विचार॥

४—अम्बु सुता रिपु तासु रिपु, ता रिपु को रिपु जान।
ता तनया पति बिन सखी, विकल होत है प्रान॥

५—कनज उलट ताकी सुता, ताके पति को तात।
अर्ध नाम ताको अमर, सो कर लेवी हाथ॥

६—अर्ध नाम दरबार को, अरु कागज को तात।
सो हमको देबू करो, जामें होय सनात॥

७—मलिन नयन कर देखिये, सब कछु नबहीं भाय।
अमल दृष्टि जब रवि लह्यो, तब रवि हीं दरसाय॥

८—एक आँख उसमें भी जाला, दिन में बन्द रात उजियाला॥

९—मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण नहीं, पञ्च भूत हूँ नाहिं।
ज्ञाता ज्ञान न ज्ञेय कछु, नहिं सब हूँ सब माहिं॥

१०—ऊँच नीच निरगुण गुनी, रंगनाथ अरु भूप।
हूँ घर घट कासों कहूँ, सब आनन्द स्वरूप॥

११—आश्रम वर्ण न देव नर गुरु सिख धर्म न पाप।
पूरन आतमा एक रस महिं घट आप समा॥

१२—पीताम्बर धारण किये श्याम बरन हरि नाँ
मुरली बिनु मुरली बजे दोऊ मोहिं बताय

१३—खान धुआधम दधि मथन इतने ही में अन्त
ताक माहिं यह आयन चातुर जाना कन्त॥

१४—जटा धरे तन श्याम है सोइ हर हरि नाहिं।
मन उज्जवल माला सदा मधुर बेद उतारहिं॥

१५—नारी अंसुत एक है बिन बिया गुनवान।
श्रवन बिना सुन लेत है मरन लियन परमान॥

१६—तिल और लच्छ कपास युत माटी को आकाश।
अग्नि योग ते सहज ही करता है प्रकाश॥

१७—हाथ भी काले पाँव भी काले कारी मुँह की मूरत।
जिन्न पर मुर्दा चढ़ बैठा एक भूप की सूरत॥

१८—एक नारी के हैं दो बालक, दोना एक ही रंग।
पहिला चले दूसरा आवे फिर भी दोनों संग॥

१९—पहिले तो मैं खूब नहायी दासी से फिर उसे मँगाई।
आ छिपटी वह मेरे तन में है वह कौन तुम्हारे मनमें॥

२०—एक जानवर ऐसा जिसकी दुम पर पैसा॥

२१—सफ़ेद रंग और लम्बी गर्दन एक जानवर को ध्यान।
दबाने में वह आता है गिरी कपड़ की चाल॥

२२—पहिले पुछ और पीछे पा बूझ पहेली है यह क्या॥

२३—चार घोड़े पर तेरा काम बाहर हड्डी भीतर चाम॥

२४—चार खम्भ हम चढ़ते देखे ऊपर दीपक जलते देखे।
या पैसे पर दो महमान यही पहेली बतलाना॥

२५—मिट्टी का घोड़ा लोहे की जीन, उसपर बैठा बुलबुलिया हकीम॥

२६—बढे घटे पर चन्द्र नहीं, श्याम वरण हरि नाहिं।
चरण संहारे ईश नहीं, विहरै गुण जन माहिं॥

२७—एक तमाशा देखा जात, नाच उलट के घोड़ा खात।

२८—जो आवे तो करे अचेत, बैठत ही आँधर कर देत।
उठे देत सबको बहु पीरा, जाय दुखी करि बूझहु धीरा॥

२९—आदि कटे मैला हो जाय, मध्य कटे वह सबै सुहाय।
अन्त कटे थोड़ा हो जाय, पंडित ताकर नाम बताय॥

३०—एक चुड़ैल घर घर बसै, जाहि लखे डर लाग।
हड्डी को रस चूस कर, मुँह से उगलै आग॥

३१—धरनी रहे न चुन चुगे, जननी जने न ताय।
सूरज मिले न देखवे, जात पखेरू आय॥

३२—सत्तर जुग पहिले गये, अधर रहे जुग चार।
एक जीव तरसत रहो, लेवो को अवतार॥

३३—कन्या मीन मक्र सग जुड़ी, कुम्भराशि ले ऊपर धरी।
मेप राशि बैठार कर, वृप राशि कर लाओ।
कर्क राशि को हुक्म है, सिंह गप्प कर जाओ॥

३४—केदार है मुर्गा नहीं, नील कण्ठ नहिं मोर।
लम्बी पूँछ वानर नहीं, चार पाँव नहिं ढोर॥

३५—श्याम वरन औ दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी।
दोनों हाथ से खुशरो खींचें, और कहे तू आरी॥

३६—पवन चलत वह देह बढ़ावे, जल पीवत वह देह गँवावे।
है वह प्यारी सुन्दर नार, नार नहीं पर है वह नार॥

३७—सावन भादों बहुत चलत है, माघ पूष में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहें, तू बूझ पहेली मोरी॥

—३८—सामने आये करके देखा मारा जाय न ज़ख्मी हो।

—३९—बीसों का सिर काट लिया न मरा न खून हुआ॥

—४०—आवे तो अँधेरी लावे जावे तो सुख ले जावे।
क्या आर्दू यह कैसा है जैसा देखा वैसा है॥

४१—श्याम बरन है एक नारी माथे ऊपर लागे प्यारी।
जोमनुष्य इस अर्थ को पावे कुत्ते की वह बाली पाले॥

४२—नारी सुन्दर पतली केसर काले रंग।
ग्यारह देवर छोड़ के चली जेठ के संग॥

४३—आगे से वह गोल मटोली पीछे से वह टेढ़ा।
हाथ लगाये कहर खुदा का खूब पहेली मेरा॥

४४—धूप में वह पैदा होवे छाँव देख मुरझाय।
ऐ सखी मैं तोसों पूछूँ, हवा लगे मर जाय॥

४५—काजल की कजलौटी रूपो पेड़ों का सिंगार।
हरी डाल पर मैना बैठी, है कोई बूझन हार॥

४६—भीतर झिलमिल बाहर झिलमिल बीच कलेजा धमके।
अमीर खुसरो यह कहें ये दो दो अंगुल सरके॥

४७—एक बहादुर अजब मैं देखा उसका देखकर सुरमा देता।

४८—ऊँट कैसी बैठक मृग कैसी चाल।
एक जानवर ऐसा देखा पूँछ न बाके बाल॥

४९—बारह मास का बरसाव जो कोई देखे ताको भावे।
होवताब के पूरा कीन्हा उसबिनजगकामतलबनहींना॥

५०—एक चीज़ है मनकाप्यारी हाथ लिये सो होवे न्यारी।
दूर देश के भाव बतावे चुपके-चुपके सेन बतावे।

५१—तेली का बैल कुम्हार का डंडा
हाथी की सूँड नवाब का झंडा

५२—तीन पाँव और पाँव न एक, बैठी रही चली न नेक।
जो जाय सोही उड़ जाँय या नारीका भेद बताय॥

५३—सिर पर साहे गंगाजल, मुण्डमाल गल माहिं।
वाहन वाको वृषभ है, शिव कहिये कि नाहिं॥

५४—काल्यो पेट हरिश्री नाम, उत्तर बर में वाको ठाम।
श्रीकोअनुजविष्णुकोसाले, पंडित हो तो अर्थविचारो॥

५५—एक नारी औ पुरुष हैं ढेर सब से मिले एक ही बेर।
पहरचार का अन्तर होय, लिपटे पुरुष छुड़ावे सोय॥

५६—धामी वाकी जल भरी, ऊपर जागी आग॥
जब बजाई बाँसुरी निकसो कारो नाग॥

५७—कर बोले कर ही सुने, श्रवन सुने नहिं ताहि।
कहे पहेली बीरबल, सुनिये अकबर शाह॥

५८—रात पड़े पड़ने लगी, दिन को मरी रात को जागी।
उसका मोती नाम बताया, बूझौ तुमसे कछुक सुनाया॥

५९—बारे में यह सबको भावे, बड़ा हुआ कुछकाम न आवे।
मैं कह दिया उसका नाम, अर्थ करो कि छोड़ो ग्राम॥

६०—चहूँ ओर फिर आई, जिन देखी तिन खाई।

६१—बाबा सोवे जा घर में, पाँव पसारे वा घर में॥

६२—सींग संगा, तीन सोंगा, गाय गोरी दूध मीठा।

६३—झरे भरे झरी हरद कैसी पीली, चटाक चूमा ले गई।
बहुत दु ख दे गई॥

६४—जल में रहैं झूट नहीं भाखे, बसे सुनगर मझार।
कच्छ मच्छ दादुर नहीं, पंडित करो विचार॥

६५—नगर बुलाई परचे दाम, तन गोरी औ अभरन श्याम।
आवतही परदेश सिधारी, पहुँची जहाँ लगी अति प्यारी॥

६६—आँख चिरई की पूँछ पिसई की मुँह चूहे का पाया है।
पीठ हिरन की पेट सिंह का अजब जानवर आया है॥

६७—अमरकाया है नाम हमारा कृष्णचन्द्र जाने संसारा।
गुजरात में विचरे अविनाशी कृष्ण न होय द्वारकावासी॥

६८—छोटासा जवान बाँकी कमान मार कमान गिर जाय जवान

६९—मरग फौज गोरी चढ़ी अफसर करी शिकार।
मच्छी मार भोजन करें जाना चतुर सुजान॥

७०—पाँच पात से बना एक मन्दिर एक नार एक पुरुष है अंदर।
कर ने अपने कम कर जैसा कर वैसा भरे॥

७१—एक तरुवर का फल है नर पक्षिम नारी पीछे नर।
उस फल की तुम देखो चाल बाहर खाल भीतर बाल॥

७२—अग्निकुंड में घर किया जल में किया निवास।
परदे परदे जात है अपने पी के पास॥

७३—एक तीन अक्षरों का नाम है जिसका अर्थ सवारी है।
सीधी पीछी परन्तु शब्द वही रहता है॥

७४—गोरा पतला सबको भावे हो मीठे का नाम धरावे।

७५—मारो तो मरता नहीं छोड़त ही मर जाय।
कहें पहेली बीरबल मुर्दा रोटी खाय॥

७६—मन सब कहे तो न लगे मत कहे लग जाय।

७७—सच्चा रंग मेरे मन भाया धो धो करके रंग बनाया।
उलटत बहुत मरोरत अंग ए सखी साजन ना सखी भंग॥

७८—ऊँची अटारी पलंग बिछाया मैं सोई मेरे ऊपर आया।
उसके आये होय आनन्द ऐ सखी साजन ना सखि चन्द॥

७९—आप हिले और मोह हिलावे
उसका हिलना मन को भावे।

हिल हिला के हुआ संगा,
ऐ सखी साजन ना सखी पंखां ॥

८०—एक ईंट बावन कुँआ, सोलह सौ पनिहार।
बिना लेज पानी भरें, सरिता करो विचार ॥

८१—एक पान खाया, तीन ताल नजर आया।
दूसरा पान खाते तो मर जाते, अंड खेती बंड लोग।
हमारी जान जाती तुम्हारा क्या जाता ॥

८२—चार फूल चौदह कली, निकसे धरती फोर।
ऐसे सतगुरु न मिले, ओ लेती सीस कर जोर ॥

८३—पाँच पीपरी पदम तलाई, जो कोई न बतावे।
उसको राम दुहाई ॥

८४—काला खेत गुलगुली माटी, जिन में ठाढौ हिरणा हाथी।
राम रोवे सिया बुलावे, जो कोई होवे उसे भगावे ॥

८५—सफेद खेत काला बीज। बोने वाला गावे गीत ॥

८६—रहे कोट की ओट चोर है नइयाँ।
भरे समुद्र में कूद पड़े किलकिल है नइयाँ।
सबको देई खाने को भगवान् है नइयाँ ॥

८७—किसी में दो किसी में तीन, किसी में एक अकेला है।
जड़ से उखाड़ बगल में दाबा, ऐसा एक पहेला है ॥

८८—कुसुम कपास उर्द और रिठआ,
चार वस्तु का एक ही नउआ ॥

८९—एक चिड़िया हमरे देश,
आधी कारी आधी श्वेत।
जब चिड़िया का हुआ विनाश,
नीचे पखुडवा ऊपर माँस ॥

मॉस मॉस सबके घर आया
पालक लगा न भाजन पाया॥

१०—बारह घर पाबे चौबीस
बीमन बैठ गुनी सब तीस।
सब गुनी जुड़कर करो विचार
बारह घर को एक द्वार॥

११—छिकर कमाओ पूछियाँ दश गाड़े मुख चार।
एकन के शिष्या नहीं पंडित करो विचार॥

१२—देश देखा परदेश देखा और देखा कलकत्ता।
एक अचम्भा हमने देखा फूल पर दो पत्ता॥

१३—छोटी लकड़ी डँगली चार छे डारी भई के हार।
बत्तस कोलू बत्तस खाट रहटा चले तीन सौ साठ॥
खाट पिड़ी और माची तक लकड़िया बाची॥

१४—लकड़ी सब चोरी जब न हाट बिकाय।
बीच गैल में न रहें, कौआ गीध न खाय॥

१५—बाप पूत का एक ही नाम बिटिया का कुछ और।
सभी कहानी काम के, फिर कहाइस कौर॥

१६—झब झमझम और कर गहने, पैरी डारे दंत।
ऐसी प्यारी चीज़ को कहाँ बिसारो कंत॥

१७—एक बाड़ का घर भर भूसा।

१८—आधा सावन सुख बसे आधा गुनियन हाथ।
पूरी बैद घर देत है पुड़िया सबके साथ।

१९—एक ताल अमराई जिसमें डूब सके नहीं पत्ता॥
हाथी पीवे घोड़ा पीवे पीवे लोग।
उड़ता पंछी एक न पीता ये ईश्वर का

१००—एक सखी बैठी मुँह बाये, एक सखी मुँह में मुँह खाय।
पाँच सखी मिल पकरी डाढ़ी, त्रिया नचे मर्द पर ठाढ़ी॥

१०१—क्या जानूँ यह कैसा है, जैसा देखा वैसा है।
अर्थ तू उसका बूझेगा, मुँह देखा तो सूझेगा॥

१०२—एक मुर्गा चश्म दीदम, चलते चलते थक गया।
लाओ चाकू काटे गर्दन, फिर से चलने लग गया॥

१०३—कच्चे में अच्छे लगें, गदरे अधिक मिठायँ।
वे जीव कैसे होयँगे, पाके में करुवाय॥

१०४—तीन वर्ण का नाम सुहावन, है वस्तु उत्तम मनभावन।
आदि वर्ण विलग कर देखो, रहे जलाशय मनमें पेखो॥
मध्य कटे जो शब्द सुहावे फल तरु पत्ते सब मन भावे।
अन्त कटे सिर शोभा खोते हैं क्या वस्तु जो देखे मोहे॥

१०५—बिन पर का एक पक्षी मेरा,
घट के अन्दर करे बसेरा।
उस पक्षी के हाथ न पाँव,
पक्षी का सा वाका नाम॥

१०६—चढ़ चौकी एक बैठी रानी, सिर पर आग बदन पर पानी।
बार बार सिर काटे उसका, कोई भेद न पावे जिसका॥

१०७—एक नार देखी न्यारी, भीतर कपड़ा ऊपर उघारी।
अपने काम की बड़ी सयानी, और के हाथ से पीवे पानी॥

१०८—दुबली पतली गुण भरी, शीश चले नहुराय।
वह नारी जब आवे हाथ, बिछुड़े हमें मिलाय॥

१०९—तन एक दाग बिरोध को, नख सिख पी के अंग।
पी बिछुरे निर्जीव भई, जिय गयो पी के संग॥

११०—नर के पेट में नारी घसे, पकड़ हिलाय खिल २ हँसे।
पेट फाड़ तब नारी गिरी, सबको लागे प्यारी खरी॥

१११—एक नारी मैंने सी काली काम नहा घर पढ़ने वाली।
नाक नहीं पर सूँघे फूल जितनी अर्जी में उतनी भूल॥

११२—काकारे मैंने कबड़ देखो सपा हाथ को पकड़ देखो।
पंख है पर उड़ता नहीं गले में डोरा मालूम नहीं॥

११३—आदि कटे आगी का मारा मध्य कटे हो परती मारा।
अन्त कटे हो बिरंग शिकारी बिना उसकी साथिन प्यारी॥

११४—जब हुए बिन उस मिमामा मैं संग उसके जनम से आया।
उत्तम पैसा द्रव्य न कोई, बिना मांगन काम किये कोई॥

११५—दूजी का सबी संत कहावे पूजनीय मेरे मन भावे।
कागज पर मैंने लगवाया पिया क्या है नाम बताया॥

११६—भरी सखी बनपेरी डाले ना मार्व कूबो पर बाले।
मैना पीतर कैस देखे डी पर बीटे रहे परेपे॥

११७—वर्ष आदि के रहा तमासा पीछे घोरा संत नरासा।
ताल फाके रंगी चंगी चास कराबे ऐसा संगी॥
सबको बाते भाग प्यारा बिना भाग न होवे हारा॥

११८—साम मूड मुर्गा नहीं चार पाँव नहीं ढोर।
लम्बी पूछ बन्दर नहीं जान पहेली मोर॥

११९—माँस तिमातिम पेड़ गिलगिल मुँह चूहे का पाया है।
पीठ सिंह की पेट हरिन का अजब जानवर आया है॥

१२०—तनक सी पतली फुतकत जाय अंडा सौ सौ डारत जाय।

१२१—बाबा सोवे वा घर में पाँव पसारे वा घर में॥

१२२—शीशा जैसा बिन कुटिया तीन अवगुण देत पगावे छीम।
जो मापे उसके दरबार ताके मुख न राखत चार॥

१२३—तीन अक्षरों का नाम हमारा दरबारों में नहीं गुजारा।
अन्त कटे से पक्षी होय मध्य कटे खावे सब कोय।
आदि कटे से बनी सवारी बूझो है मैं कौन शिकारी॥

१२४—चार वर्ण तिस नाम में, सो है विष्णु पास।
आदि को अक्षर छाँड़ि के, मेरी पूरो आस॥

१२५—तीन अक्षर का नाम हमारा, बन जाता सबका बसेरा।
अन्त कटे पावे सब कोय, मध्य कटे चचल गति होय॥
आदि कटे पर श्रुति कहावे, बड़े २ शहरों का नाम बढ़ावे।

१२६—गगन नहीं तारा सही, मेघ नहीं झर लाग।
त्रिया नहीं कुछ है सही, सो है शङ्कर पास॥

१२७—तीन अक्षर का नाम, पहिला और तीसरा लेने से एक पक्षी का नाम बनता है, दूसरा और पहिला लेने से एक ऐसी चीज बनती है जो लिखने के काम आती है।

१२८—फले न फूले नवे न डार, जो फल खईये बारहों मास॥

१२९—हल चल चली जात, नेक न बिछल जात।
सीधी सीधी गली जात, अजब सफल है॥

१३०—आदि मिटाये आदमी, अन्त मिटाये तीर।
मध्य मिटाये दिन रहा, नाम बताओ वीर॥

१३१—सिर काटो तो गरा बनूं में, पैर कटे तो आग।
धड़ काटो तो बनता आरा, मुझमें है इक बाग॥

१३२—बरी रहूँ धड़ के बिना करी बनूँ सिर हीन।
पैर कटे से बक बनूँ, अक्षर केवल तीन॥

१३३—मैं पक्षी, मेरा मीठा स्वर, उलट पढो तो होता बन्दर।

१३४—रोम रोम से झरता पानी, मुझे देख झट छत्री तानी॥

१३५—हरा हाथ में चोला मेरा, मुँह मे होता लाल।
बड़े चाव से खाते मुझको, यह मेरा है हाल॥

१३६—सर काटो तो गर बन जाऊँ, धड़ काटो तो मर मर जाऊँ।
कटे पैर तो मग कहलाऊँ, कैसे तुमको नाम बताऊँ॥

१३७—दुबला पतला स्यामी हाथ रहता बादशाह के साथ।
पहन लँगोटी निकला घर से भीड़ हो गई गया जिधर से।

१३८—वर्ण तीन का नाम हमारा गाँव शहर में रहता प्यारा।
पहले अक्षर को जो टार, छिन भर दिन हाथ पसार।
मध्याक्षर को कभी मिटावे हमपर घर कभी चढ़ावे
बाधक मेरा नाम बताओ, विमल बुद्धि मित्र नाम बताओ।

१३९—आदि कटे पासी का भाई मध्य कटे से सुन्दर पक्षी
अन्त कटे से सीधूँ गठ काम सवारी का मैं देत।

१४०—कर भर ताऊ मले ना कछु करें सहाय।
घर न रहते भी सदा हूँ बाहर लगवाय॥
बिना मन पानी सदा रहती आछे धाम।
घड़ी घड़ी सुमरन करें बोलो क्या मम नाम॥

x १४१—तीन अक्षर का मेरा नाम करता हूँ मैं सब का काम।
पहला अक्षर जभी निकालो पैरों का रज मुझ बनाओ।
अन्तिम अक्षर को दो छोड़ सुर सजाता हूँ मैं जोड़।
बतलाओ बतलानेपर भी लाख लाख कह जानेपर भी॥

१४२—तीन अक्षरका नाम हमारा जिसका करते सभी सहारा।
पश्चिम अक्षर जो तू निकालो सुनने की तुम चीज बनाओ।
मध्य वर्ण को जो दो छोड़, इच्छा जिससे देते मोड़।
बतलाओ तुम उसका नाम जिसका हमने किया बखान।

१४३—औषध पाठ पढ़ा नहीं हुए व्याधी बड़ा महाप॥

१४४—तन न छेदे मन के तीन चतुर ताल बजावें बीन॥

१४५—बालक लोग बड़े हरषाते देख रूप कर चित्र विचित्र
जल्दी बतलाओ ये हमको है यह कौन तुम्हारा मित्र।
सारी दुनिया में है उसके संगी एक नहीं यह कर।
जाता छोड़ भागते बाहर, जब यह आता है घर पर॥

१४६—काले मुँह की छोटी नारी, उसके वश में दुनिया सारी ॥

१४७—कपड़े वह हरसाल बदलता, फागुन में बौराता।
सबके मुँह में पानी लाता, जब वह घर में आता ॥

१४८—तीन अक्षरों से मैं बनता हूँ, मैं हूँ बहुत पुराना।
शुरू किया है लोगों ने फिर से मुझको अपनाना ॥
पहिला अक्षर चन्दन में है, अचकन में भी आता।
और दूसरा ईश्वर में है, साक्षात् दिखलाता ॥
रहा तीसरा अक्षर उसमें, ना जोड़ो तो खाओ।
अब जो मेरा नाम बताओ, तो स्वराज्य तुम पाओ ॥

१४९—एक फूल गुलाबका न राजाके राज्यमें न भाभीके बाग में।

१५०—एक सुपारी घर से लाये, उसमें चोट तीन जमाये।
एक चोट के दो दो टुकड़े, तीन चोट के कितने टुकड़े ॥

१५१—पहिले दही जमाय के, पीछे दुहिये गाय।
बच्चा वाके पेट में, माखन हाट बिकाय ॥

१५२—खटमल के आगे रहूँ, रहूँ अलख के बाद।
पड़ वोखल के बीच में हुआ हाय बरबाद ॥

१५३—चेहरे में हूँ घिरा हुआ मैं, सभी जनों का प्यारा हूँ मैं।
सरल सलोना कहलाऊँ मैं, चलूँ फिरूँ रोऊँ-सोऊँ मैं ॥
उल्टा पढ़ो या सीधा कहो, बात एक ही जल्द कहो ॥

१५४—चढ़े नाक पर पकड़े कान, कहो कौन है वह शैतान।

१५५—देखा एक जानवर काला, काले बन में डेरा डाला।
किन्तु लाल पानी पीता है, उसको ही पीकर जीता है ॥

१५६—न तनना न बुनना न करना विचार,
बरस दिन पहन करके रखना उतार ॥

१५७—एक पीली एक लाल दिखाय, दोनों एक ही नाम कहाय।
एक मध्यम एक तेज जनाय, जानते हो तो दीजै बताय ॥

१६७—बस्ती छोटी घर घने, बसे सूरमा लोग।
आये को आदर करें, नहीं रहन के योग॥

१६८—तिल देख तिलाव देख, तिल का विस्तार देख।
डाढ़ी को बढ़ाव देख, छाया को रुकाव देख॥

१६९—जरा सा लटका लाल कमान, घर २ मारे बूढे जवान।

१७०—अत्तर पर पत्थर, पत्थर पर पैसा।
बिन पानी के महल बनावे, ये कारीगर कैसा॥

१७१—रैन अँधेरी मनहुँ दिन, दिनहु अँधेरी रात।
कवन वस्तु संसार में, उल्टी जात लखात॥

१७२—हमने देखी है सजन, अरु खाई है भ्रात।
चापी हो रघुपति शपथ, कौन वस्तु है तात॥

१७३—जरें बरें मेरे पिया, जरें बरें मोहे चैन।
गली गली डोलत फिरें, कहत रसीले बैन॥

१७४—अभय करण है नाम हमारा कृष्णवर्ण जाने संसारा।
कुञ्जन में विचरें अविनाशी, कृष्ण नहीं वह द्वारकावासी॥

१७५—एक सजन का गहरा प्यार, जिससे होवे घर २ उजियार।

१७६—एक नार है दाँत दतीली, पतली दुबली छैल छबीली।
जब तिरिया को लागे भूख, सूखे हरे चबावे रूख॥

१७७—एक लई दो फेंक दई।

१७८—मुट्ठी मुट्ठी भूसा खाय, भरी नर्मदा में उतराय।

१७९—तनक सी बारी बाई, लम्बी सी पूँछ।
जहाँ जाँय बारी बाई, तहाँ जाँय पूँछ॥

१८०—एक कुएँ में घाट हजार, एक हजार घुसती पनिहार।

१८१—एक और दो करता काम, एक तीन भूषण अभिराम॥
तीन चार है चित्त हुलसाता, चार तीन है प्यास बुझाता।

तीन था है तुम्हें पढ़ाता एक चार है तुम्हें हँसाता।
किसी शहर का नाम है मुझमें अक्षर चार।
बतलाओ मैं कौन हूँ इस पर करो विचार।

१८२—एक चार दो पिछला अंग जो है सदा तुम्हारे संग।
एक चार मिल करता काम तीन चार भूषण अभिराम॥
एक तीन और चार मिलाओ शूद्रवर्ण की जाति बताओ।
किसी शहर का नाम है मुझमें अक्षर चार।
बतलाओ मैं कौन हूँ, इस पर करो विचार॥

१८३—ईमानदार दरबान हूँ मैं ऐसा
मेरे भरोसे लोग रखते हैं पैसा।

१८४—जो कुछ पानी में गिरे, वह तो जावे भीग।
मैं तो पानी में गिरूँ, कभी न सकता भीग॥

१८५—बिन पानी यह गया था डूब बड़ी देर तक निकला खूब॥

१८६—तनक सा लाला सब घर बोला।

१८७—लाल छड़ी मैदान खड़ी।

१८८—तनक सो लड़का मदन का तिलक लगावे चन्दन का।

१८९—कारी पीली सपेद धागा सुबह शाम मैं लेकर भागा॥

१९०——इधर गई उधर गई, लाल बीबी गाड़ गई।

१९१—इस का मर्दैंगा समझना हाथी
मेरे तोरे कहना मैं सब बात पाई।

१९२—बाई पी मिरच फूली कचनार।
फरें नारियल बताओ मेरे यार॥

१९३—भरे कुआँ पत्थर उतरावें बार २ कर सब कोई खावें।

१९४—तनक सी गई सब गाँव बिथराई।

१९५—एक गाँव में अचरज हुआ आधा बगुला आधा सुआ।

१९६—एक सन्दूक काँटे जड़ी जब खोला चम्पा कली।

१९७—कटोरा पर कटोरा बेटा बाप से भी गोरा।

१९८—कुवँरी नारी गेह तजावे, आँख लगे तो नाक चढ़ावे।

१९९—अभय दान वह देत है, जानत सकल जहान।
श्याम रङ्ग द्वारका वासी, नहीं कृष्ण भगवान॥

२००—एक सींग की गाय, जितना खिलाव उतना खाय।

२०१—एक रूख अगड़घत्ता, जिसके जड़ न पत्ता।

२०२—ऐसी नारी करम की हीनी जिन देखा तिन्ह थू-थू कीन्ही।

२०३—सोने की सी चटक, बहादुर की सी मटक।
बहादुर गये भाग, लगा गये आग॥

२०४—यहाँ से आई वहाँ से आई, थोड़ी सी जगह में बैठ गई॥

२०५—अटक चली मटक चली, पहन चली भौंय्याँ।
ऐसी पति की लाड़ली, चढ़ चली कैय्याँ॥

२०६—काले पहाड़ पर गल गल ब्यानी।
जिसकी तेली बहुत मिठानी॥

२०७—काले पहाड़ पर लहू का बूँदा।

२०८—हरा था भरा था लाख मोतियों से जड़ा था।
राजा के द्वारे पर, घूरे पर पड़ा था॥

२०९—आई नदी थर्राती जाय, चौका चन्दन पारत जाय।

२१०—फले न फूले, छवलों टूटे।

२११—तनक सी टुरिया टुक टुक करे, लाख टके का काम करे।

२१२—खड़ो हिरना किच किच करे, अन्न खाय न पानी पिये॥

२१३—एक लड़की पचरंग खेले वह लड़कों के सङ्ग।
पानी की कुप्यारी, पवन की है प्यारी॥

२१४—हरी डंडी लाल कमान, तोबा तोबा करे पठान।

२१५—शिव सुत माता नाम के अक्षर चार सुघड़।
मध्य के अक्षर छोड़ के मेवा करो हमरा॥

२१६—लक्ष्मी पति के कर बसे अक्षर पाँच विचार।
आदि वर्ण का छोड़ के, दीजो बारम्बार॥

२१७—मुख मुरली तन श्याम है बसत कुञ्ज के धाम।
यमुना उसके निकट है नहीं कृष्ण का नाम॥

२१८—एक अचम्भा हमने देखा मुरदा रोटी खाय।
टेर से बोले नहीं मारे से चिल्लाय॥

२१९—काला है पर कौआ नहीं बन्दर है पर हौआ नहीं।
करे नाक से अपना काम बतलाओ तुम उसका नाम॥

२२०—तनक सी गाछ गाछ मटकी सा पेट।
कहीं पक्षी पल पल राजा के देश॥
राजा है बेईमान चार का है पट॥

२२१—इधर गई उधर गई और न मालूम कहाँ तक गई।

२२२—जब थी मैं बारी भोरी तब सहती थी मार।
अब पहनी मैं लाल पैंजनिया अब न सहों मार॥

२२३—एक चिरैया रङ्ग बिरङ्गी घड़े भर भर पानी।
भरे कुआँ में चौपर खेले और मँगावे पानी॥

२२४—एक मोरे मामा हजार मोरी माई।
धन्य मोरे मामा तू सबको निहुँराये॥

२२५—हम लेन आये तुम्हें तुम पकड़ लीन हमें।
तुम छोड़ दो हमें हम ले जाँय तुम्हें॥

२२६—फले न फूले फले न फरे, बारहों मास रहे हरियारी।

२२७—तनक सो लड़का एक मदूम पहिरें धोती नाचे कूद

२२८—काला हूँ कारङ्गा हूँ, काले वन में रहता हूँ।
लाल पानी पीता हूँ, सरकारी जुवाब देता हूँ॥

२२९—पिया बजारे जात हो, वस्तें लैयो चार।
सुआ परेवा किलकिला, बगुला की अनुहार॥

२३०—दुवली पतली गुण भरी, शीश चले निहुराय।
वह आवे जब हाथ में, विछुड़े देत मिलाय॥

२३१—चार अक्षर का नाम है, भारत का है ताज।
पहिला चौथा छोड़ दो, वाह बना क्या साज॥
चौथा पहिला जोड़ दो, शीश चढ़े गजराज।
दूजा अक्षर छोड़ दो, गरल बने रिपु काज॥
तीजा पहिला जोड़ दो, मक्का यात्रा अर्थ।
तीजा चौथा जोड़ दो, शकर देव समर्थ॥
दूजा चौथा तल सहित, बने तेज हथियार।
सही बताओ नाम वह, पुस्तक लो उपहार॥

२३२—फाटो पेट दरिद्री नाम, उत्तम घर में वाको ठाम।
सिय को अनुज विष्णु को सारो पंडित हो तो अर्थ विचारो॥

२३३—एक सखी बैठी मुँह बाय, एक सखी मुह में मुँह बाय।
पाँच सखी मिल पकड़े डाली, तिरिया नचे मर्द पर ठाड़ी॥

२३४—एक बाल का घर भर भूसा।

२३५—एक ताल उभराई जिसमें डूब सके नहिं राई।

२३६—कच्चे में अच्छे लगे, गदरे अधिक मिठायँ।
वे जीव कैसे होयँगे, पाके में करवायँ॥

२३७—हरी भरी एक सुन्दर नार, नर नारी को करे सत्कार।
भोजन पीछे काम में आवे, लोहू यहा वैकुण्ठ को जावे॥

२३८—पीली है पर बेसन की नहीं बनाते हैं।
खाने की वह चीज़ नहीं परखाते हैं॥

२३९—औघट घाट घड़ा न डूबे हाथी घड़ा नहाय।
पीपल पेड़ फलगलक डूबे चिड़िया प्यासी जाय॥

२४०—एक गोरी एक कारी नार, एक ही नाम धरा करतार।
एक छोटी एक बड़ी कहावे एक थोड़ी एक बहुत मिठावे।

२४१—आगे पीछे बाड़े बड़, नहीं दो मुँह होय।
खाय अमीर फकीर नहीं जिसका पूछे कोय॥

२४२—काले पहाड़ पर बैठ दसानें॥

२४३—देखी एक अनोखी नार, दो पाँव और मुँह है चार
आधा मानुष पीछे पड़े पूछ पहेली खुसरो कहे।

२४४—अस्सी गज का चौसरा बावन गज की डोर।
राजा जी शिकार खेलें पीछे नाचे मोर॥

२४५—चार नार दक्षिण से आईं सोलह बेटी तीन जमाईं॥

२४६—१ लगी मढ़ी में धधकी आग।
२ काला जोगी निकसा भाग॥
३ देख गुफा में किया प्रवेश।
४ लक्षण पुरुष का सब आदेश॥

२४७—आधा सूखा आधा रोय बीच बाग में भा संयोग।
जो बैठे तो उठे न पावे पंडित हो तो भेद बतावे॥

२४८—चौदह पैर दश हाथ हैं, पाँच मूड़ शिव चार।
पनिहारी को देखरा या पंडित करें विचार॥

२४९—मानिक तजे जन्म से जाय अन्त तजे थोड़ी रह जाय।
मध्य तजे तो मचान बनावे बिना तजे बहु काम बह आवे।

२५०—काली कुतिया ठहरे काम टोपी ढके वाकी पिछान॥

२५१—सोने की डिबिया में सालिगराम अर्थ करो या छोड़ो

२५२—देखत है सब जगत को, लखत न अपनो गाँव।
इक पल में फिर जात है, दो स्वरूप एक नॉव॥

२५३—काया उजरी सिर जटा, रहत एक पग ध्यान।
हम जानी तपसी कोऊ, कपटी बड़ा निदान॥

२५४—चार कान एक सींग है, एक टाग की नार।
श्याम वर्ण तामस भरी, भाई करो विचार॥

२५५—शीश जटा पोथी गहै, त्रित्त वर्ण गल माहिं।
जोगी न अवधूत न, ब्राह्मण पडित नाहिं॥

२५६—चाम मास वाके नहीं, एक हाड़ २ में वाकी छेद।
मोहि अचम्भा आवत ऐसे, वामें जीव वसत है कैसे॥

२५७—अन्त कटे सीता बने, आदि कटे से यार।
हम वन वासी जीव है, अक्षर तीन हमार॥

२५८—पग काटे पग होत है, सिर काटे फल होत।
बीच कटे तो हो परी, ज्ञानी बूझै कोय॥

२५९—पहिले दूजो बोलिये, दृष्टि पात के हेत।
चौथे तीजे से बनहिं, वस्त्र श्याम औ श्वेत॥

२६०—एक जानवर ऐसा, जो दुम से पानी पीता।
विन पानी वह तुरन्त मर जाता, पानी से वह जीता॥

२६१—एक जीव असली, जिसके हड्डी न पसली॥

२६२—छोटा मुँह वड़ी वात।

२६३—एक साग जल में उगे, स्त्री वाको नाम।
सुख से वाको खात हैं, नर नारी सब ठाम॥

२६४—वह विन सिर पर जटा दिखावें।

२६५—वीसों का सिर काट लिया न मरा न खून हुआ॥

२२६—आधा सागर में बसे आधा गिर की खान।
पंडित वाको कहत हैं देख मस्त सम्मान॥

२२७—आदि कटे से सबको पाले मध्य कटे से सबको मारे
अन्त कटे से सबको मीठा वह खुसरो मैं आँखों देखा

२२८—सकरे कुएँ ढाँक न जाय बड़ा पानी पी पी जाय

२२९—चार कबूतर चारों रङ्ग मुह देखो तो एक ही रङ्ग

२३०—घूम घुमाला लहँगा पहिने एक पाँव से रहे खड़ी
आठ हाथ हैं उस नारी के, है सुखदायक सुघड़ बड़ी॥

२३१—एक नारी मीरही खड़ी छै माथे लटकाये।
मरदों के संग जूना खेल, तौ भी मर्द कहाये॥

२३२—आकाश तावे वाघिनी पाताल रोवे बच्चा।
कुहुकी आवे वाघिनी सरक जावे बच्चा॥

२३३—गोल गोल गठिया सुपारी जैसा रङ्ग।
ग्यारह देवर छोड़ आये गई जेठ के सङ्ग॥

२३४—एक नारी करतार बनाई न वह कमाँरी न वह ब्याही।
लाल रङ्ग सदा ही रहे नारी नारी सब कुल रहे॥

२३५—एक नारी दो सींगों से रोज लड़े दो सींगों से।
जिसके घर में जावे बड़ी उसमें पानी लेकर टपी॥

२३६—एक तरुवर आयो नाम अर्थ करो या छोड़ो ग्राम॥

२३७—बड़ा पेड़ और मुँह है तंग जबड़ देख तो उसके रंग।
पढ़े लिखे के आवे काम जो बूझे तो लिख दो नाम॥

२३८—जलपति राजा नहीं ईख घर धन नाहिं।
मन पाहीं सुधी रहे विषमा है वह नाहिं॥

२३९—एक माह से चोकी चली चोरा करे हजार।
उलटी फिर पहली नहीं पंडित करो विचार॥

२८०—एक नारी जब गोली खावे, जिस पर थूके वह मरजावे ॥
२८१—देखी है एक सुन्दर बाला, लाल वदन और मुँह है काला ॥
२८२—नीचे धमके ऊपर चमके ।

२८३—चार अटक चार वटक चार सुरमा दानी ।
नौ रंग तोता उड़ गया, तो रह गई विरानी ॥

२८४—मिलनसार सुखधाम है, दो अक्षर का नाम ।
सबके अक्षर को भखे सबके आवे काम ॥

२८५—अक्षर तीन विचारो नाम आता हूँ मैं सबके काम ।
सदा रहूँ मैं सबके साथ, सबकी इज्जत मेरे हाथ ॥
प्यारे बच्चों हूँ मैं कौन, बोलो शीघ्र रहो मत मौन ॥

२८६—चले रोज पर हटे न तिल भर ।
२८७—बिन परों की उड़ती फिरे ॥
२८८—टूटा हाथ देख घर आती ।
२८९—बिन सीखे सब गावें राग ।

२९०—तीन अक्षर का मेरा नाम, आता मैं पूजा के काम ।
मेरी रङ्गत है सुखदाई, करते प्यार मुझे सब भाई ॥
पहला अक्षर दूँगा छोड़, लोगे अपनी नाक सिकोड़ ।
मध्यम अक्षर काट निकालूँ, मित्रोंके सब काम निकालूँ ॥
अन्त अक्षर को देऊँ निकाल, तौलत समय बचाऊँ माल ।
बोलो बालक मेरा नाम, फिर तुम सबको करो प्रणाम ॥

२९१—तुमने बिना धरती का देस और बिना पानी का समुद्र देखा है ?

२९२—पहिला घट मे 'तरनी' बनती, दूजा घट मे 'करनी' ।
वर्ण तीसरा घट कर मैं, बन जाती हूँ कतनी ॥
दूजा-तीजा एक दम घट यों, 'कनी' बनूँ मन हरनी ।
चतुर बालकों ! चार वर्ण की, क्या है कहो 'कतरनी' ॥

२९३—है नाम तीन अक्षर का हिन्दी भाषों की प्यारी।
जो मध्य कटे तो भाई बनती है नर की प्यारी।
पर जभी अन्त कट जावे बनता है शत्रु अनेक।
जिससे डरते हमही क्यों, हां वीर बड़े हैं टेक।
पर आदि कटे तो झटपट तुम सब लेने दौड़ोगे।
भाशा है सोच समझकर कब रोग क्यों छूटोगे।

२९४—पाँच अक्षर का नाम प्यारा पुण्य तीर्थ कहलाता है।
प्रथम तीन से स्वामी राजा और पिता कहलाता है।
दूजे तीजे के अन्तर में जो पञ्चम पड़ जाय कहीं।
तो फिर ठीक स्वर्ग का रस्ता मानो बस है और नहीं।
अन्तिम प्रथम मिलें तो भाई, हो जाता है तुच्छ पदार्थ।
भारत के भक्तों में देखो पावन गंगा के तीर्थ।

२९५—नाक की दाब कान को कसके दुनिया यह दिखलाता है।
क्या है! बता हमें बतलाओ, फैशनेबुल बनाता है।

२९६—प्रथम अन्त को अगर हटावें माँ से भेंट करावेगा।
पहिले अक्षर के हटने से नाम तेरा बन जावेगा।

२९७—तीन पदी यह फिर कहा तजत न अपनी बान।
मन भाई कह देत है पञ्चम बीच मचान।

२९८—कुमारी नारि भेद तज भावे आँख लगे तो नाक चढ़ावे।

२९९—सिर भीतर पसली बाहर।

३००—ये शोभा है काँच की रंग बिरंगी होय।
जिन पर नारी मारती और न पूँछे कोय।

३०१—दो कौड़ी का बड़ा कटोरा जिससे भागी सारी सेना।

३०२—ऊँचा दरजा नीची पदवी राज काम में आता है।
जिसके घर में यह नहिं होवे पैसा वहाँ न आता है।

३०३—एक खंभ अरु तीन विभाग, जिसके ऊपर सात द्वार।
उसमें रहता है एक पक्षी, जिसको देखा कभी न यार॥
अपने घर में आता है, वह क्षण-क्षण बारम्बार।
आते जाते कोई न देखे, उस पर करो विचार॥

३०४—छह पाँवों अरु दो तलुओं की अद्भुत देखी नार।
उसके ऊपर पूँछ लगी है इस पर करो विचार॥

३०५—मथ कर निकरो दूध से, सुन्दर चन्द्र समान।
अमृत सम मीठो लगे, कर लो तुम पहिचान॥

३०६—आदि में न और अन्त में न, मध्य में य रहता है।
अपना अपना कोई न देखे, वह सबको लख लेता है॥

३०७—बिना प्राण काटे बहुत, अद्भुत बोले बैन।
पायन से वह चलत है, नहीं होत हैं नैन॥

३०८—मन तो उसके एक है, धड़ है उसके आठ।
सिर उसके चालीस हैं, पाँव एक सौ साठ॥

३०९—कोयल के मैं पीछे रहता, पूँछ पंख नहिं मेरा नाम।
लड्डू के मैं आगे रहता, खाने के नहिं आऊँ काम॥
गिल्ली में मैं ड्योढ़ा रहता पर तुम मुझे न खेलोगे।
जरा कलम के बीच में देखो, जल्दी मुझको पाओगे॥

३१०—एक नार कर्म की हीनी बीच सभा में आई।
थू थू करते सब हैं उस पर तुम दो नाम बताई॥

३११—लाल देह और काला मुँह, सोने संग रहे नित वह।

३१२—इक लड़की पचरंगी देखी, खेले लड़कों संग।
पानी से वह डरती रहती, हवा में रहती चंग॥

३१३—घर में रहता एक मर्द है, सबको भोजन देता।
इतने पर भी खुश नहिं रहता हरदम जलता रहता॥

११४—शिव सुत माता नाम के अक्षर चार सुरेन।
मध्य के अक्षर छोड़ के मेवा करो हमेन॥

११५—लाल लाल वह होत है कोई होत सफेद।
खाने में मीठा लगे किसी कन्द के भेद॥

११६—एक पेड़ है हमने लखा हाथी पाँव समान।
पत्ते उसके दिखत हैं जैसे हाथी कान॥

११७—छोटी सी है नामा बाई छोटे घर में रहती।
मछु बड़ी गुन उसमें जानो पट पट बातें करती॥

११८—बिना रुण्ड का मुण्ड है पवन का है माप।
शीशा जड़ा बाके लगी उससे होता भाप॥

११९—धूप लगे सूखे नहीं छाँह लगे मर जाय।
मैं ताहि पूछों री सखी दे तू मोहि बताय॥

१२०—खाँड़ का वह चोर है देखे जात बिलाय।
घर घर में वह रहत है लड़के देख बताय॥

१२१—तीन मर्द और ग्यारह औरत रहत थे एक नारी साथ॥

१२२—अर्थ बसै कैलास में ताहि अर्थ गणिकान।
सर्व बसे वणिकान गृह बरतैं वैद्य सुजान॥

१२३—श्याम वर्ण का होत है माथे पर है ताज।
कोई अशुभ कहत हैं कोई शुभ की साज॥

१२४—काले रंग की होत है मुँह में जाती बहु।
गरीबों की हथियार है झाड़ कहे [illegible]॥

१२५—पुष्प कपास घास और लकड़ी चारों लगें एक ही लकड़ी।

१२६—एक फल है छोटो बालम उसके भीतर गोल गपाला॥

१२७—पाक साफ वह होती है सबको भोजन देती है।
हवा खाय वह जीती है, पानी पीकर मरती है॥

३२८—श्वेत वर्ण वह होत है, करे बहुत ही ध्यान।
देखन में सीधा लगे, निरा कपट की खान॥

३२९—जरा सी चिड़िया उड़ती रहे, जब खींचो तब ऊपर चढ़े॥
ढील देत वह नीचे गिरे, लड़का उससे प्यार करें॥

३३०—चार चौतरे आठ बजार, सोलह घोड़े एक सवार॥

३३१—खन खन बाजे चलने से, अरु बैठे छत्ता डार।
लाखों जीव मार के, आप कछु ना खाय॥

३३२—सोने सी चिड़िया काला मुँह।

३३३—फूली फुलवारी कोई तोड़ न सके।

३३४—काली लाठी कोई टेक न सके।

३३५—मुण्डा बैल कोई जोत न सके।

३३६—मोती का झुक्का कोई तोड़ न सके।

३३७—बहुत बड़ी तो होती है, इधर उधर न जाती है।

३३८—पानी रहते चमके वह, पानी सूखे मरता वह॥

३३९—दुनिया में वह आती जाती, बड़ों-बड़ों से नहीं डराती।
देश देश से खबरें लाती, पानी से डरती रहती है॥

३४०—हम होते है गोल गोल, तुम रहते कुछ लम्बे।
तुम्हरे ऊपर छत्र रहत है, हम रहते हैं नंगे॥

३४१—तालाबों में होत है, फल की जाति महान्।
उपवासों में खात हैं, साधू सन्त जहान॥

३४२—यहाँ खूँटा वहाँ खूँटा, गाय मरकही दूध मीठा॥

३४३—धरती छोड़ व्योम को जाती, लड़के पीछे जाते हैं।
दुबली होती कँपती रहती, खींचे से चढ़ जाती है॥

३४४—काला कुत्ता झबरे कान, ताज लगा कर चला विकान।

३४५—हथियारों से कट नहीं सकती, सबकी सह सकती है मार॥
साथ सभी के वह रहती, है, राजा रंक और दरबार।

१४६—धूप पड़ने पर झर-झर झरता, खाने में मैं खारा लगता।
नमक नहीं मैं ऐसा रस हूँ, चीज़ नहीं मैं करुणा रस हूँ॥

१४७—मैं तेरा भतीजा सगा तू नहीं मेरा भाई।
कौन हमारा तेरा नाता कहते लोग लुगाई॥

१४८—नाम बड़ा है रूप बड़ा है दाढ़ी लम्बी लम्बी।
बीज बहुत छोटा होता है पेड़ बहुत सी लम्बी॥

१४९—जितनी देते जाते हैं उतनी बढ़ती जाती है।
पृथा देश में मान करावे कभी न पूरी होती है॥

१५०—चार में यह सबकी सुहावे बिन चारे कछु काम न आवे॥

१५१—बिना पङ्ख उड़ती फिरे, जहाँ तहाँ देखो भाई।

१५२—रात समय वह सजकर आवे भोर भये वह घर भग जावे।
यह जादू है सबसे न्यारा क्या सखी साजन नहिं सखी तारा॥

१५३—शोभा खूब बढ़ावे हारा आँखों से नहिं होता न्यारा।
आवे फिर मेरे मनरंजन क्या सखी साजन नहिं सखी अंजन॥

१५४—अति सुन्दर जग चाहे जाको मैं भी देख भुलानी वाको।
देखत रूप भयो जग टोना क्यों सखी साजन नहिं सखि सोना

१५५—वे साजन हैं सबको प्यारा
इनसे घर होता उजियारा।
भोर हि होत पिया मैं खोया
क्यों सखि साजन नहिं सखि दीया॥

१५६—देखो यह कैसी है छोकरी मरद की गोद भीतर में बोलती।

१५७—पवन चलत वह बढ़त है जल पीवत मर जाय।

१५८—एक डिब्बी में मेरा वास सिगरट वाले रखते पास।
देश देश में मैं जाती हूँ, आगी माँगो तो देती हूँ॥

३५९—बारह पाँव की अबलक घोड़ी, चले रैन दिन थोड़ी थोड़ी।
कभी नहीं वह थकती है, जीवन पूरा करती है॥

३६०—सब्ज़ रंग और मुख पर लाली, जिसके गले में कंठी काली।
जंगल में वह है होता, क्यों सखी साजन? नहीं सखी तोता॥

३६१—काली-काली होती है, पर नहीं है सालिग्राम।
डाली पर वह बैठी रहती, बतलाओ तुम नाम॥

३६२—एक नारि अति दूबरी, छोटी किन्तु महान।
काला मुख रक्खे सदा, पर पावे जग मान॥
जिसका उससे प्यार है, वह है परम सुजान।
कहो बालको कौन है? वेसी सब गुण खान॥

३६३—मोद भरी तिय हिय-कुसुम, प्रीतम लखि खिल जात।
जब प्रीतम बिछुड़न पड़ी, नयननि मींजत प्रात॥
सुघर सुन्दरी नारि सोई, सदा बसत सर बीच।
कान्त कलंकी है तहाँ, रहो मिताई सींच॥
कौन कान्त की कामिनी? कहो कृपा करि सोय।
सखी पहेली अति सरस, बूझे ते सुख होय॥

३६४—जो मेरे नयनन बसें, वे ही बसें अकाश।
'तारे' से दमकत रहें, अरु होवे परकाश॥
कहो पहेली क्या सजन, तब पूजेगी आश॥

३६५—पथिक नीर पीवा करें, बिन लोटा बिन डोर।
गहरी और गम्भीर यह, करती कभी न शोर॥
नारी यह धर्मात्मा, उपकारी मति धीर।
पथिक ताप हरती रहे, और पिवावे नीर॥

३६६—आदि कटे ते दिल हो जावे। मध्य कटे तें शर बनजावे॥
अन्त कटे ते नारी कहावे। पूरे में बौना हो जावे॥
तीन बरण कर जासु शरीरा। अर्थ करहु तुम अति गम्भीरा॥

१२७—कूएँ से मोल निकलते हैं साहब खाना खाते हैं।
वृक्षों में भी रहता है कभी-कभी दुःख देता है।

१२८—चाँदी सोना भरे हैं उसमें सर समुद्र लहराते हैं।
अपनी अपनी सब कोई कहते पर स्वामी नहीं होते हैं।

१२९—राधा जी के हाथ में अजब फूल एक श्वेत।
राधा पूछे श्याम से श्याम नाम नहीं लेत॥
कहा जाकी जन्मभूमि पत्ता जाके साथ।
साधु संग तीरथ करे, रहे हमारे पास॥

१३०—तीन वस्तुएँ लाइयो हे मेरे प्रिय कन्त।
सिर पर टोपी पेट में गुठली अरु मुँह में दो दन्त॥

१३१—तबला क्यों नहीं पड़ता है गाँव क्यों उजड़ा रहता है?

१३२—ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है कमती होती जाती है।
जब वह कमती रहती है बहुत बड़ी वह रहती है॥

१३३—खाना क्यों हम खावें? फलेड़ा क्यों हम पीवें?

१३४—मारे से वह धम-धम बोले बिन मारे चुप रहता।
मरा हुआ वह मानी बोले जब कोई दुःख देता॥

१३५—प्रेमी के वह मन में रहे, बाबू लोग सवेरे खाएँ।
होटल की सिरताज है अंग्रेज़ों की लाज है॥

१३६—एक डंडी कई कमान जिस पर है कपड़े की छान।
वर्षाऋतु में काम पड़ जावे, गर्मी में भी मन बहलावे॥

१३७—काला बदन कौआ नहीं जो जिभ्या नहीं सर्प।
मन भाया कह देत वह पर नहीं रखत दर्प॥

१३८—बीस सहारे वह बसे पुरुष बनावत हार।
मन भाए गढ़ देत वह, श्रद्धा के अनुसार॥

१३९—सिर बिन मरो बड़ो सुभग, कर बिन भुजा सुडोल।
सीता हरण समर्थ है, लंकपति नहीं होय।

३८०—हरे वृक्ष का आम फल, खाते पीते जाय मुँह जल ॥

३८१—एक टाँग अरु चार कान हैं ऐसी अद्भुत नारी।
तामस स्वभाव अरु पान चबावे, देखन में वह कारी ॥

३८२—चढ़ चौकी बैठी इक रानी, सिर पर आग बदन में पानी।
बार बार सिर कटता उसका, कोई भेद न पावे जिसका ॥

३८३—एक पुरुष ऐसा सखी, जाके चाम न मांस।
हाड़ हाड़ में छेद है, रहे जीव का बास ॥

३८४—पहिला दूजा कम हो जावे, दूजा तीजा मैला।
पहिला तीजा कल हो जावे, कहो क्या है लाला ॥

३८५—एक पुरुष है गाँठ गठीला, बीच बीच में माठा।
गुड़ सक्कर सब उससे निकसे, खाने में वह मीठा ॥

३८६—लोहे की वह छोटी रानी, आँखों से वह है कानी।
जिसके पास वह जाती है, बिछुड़े हुए मिलाती है ॥

३८७—एक गाँव है उलटा बना, हर घर में एक ही जना ॥
सब पहिरे हैं पीली सारी, जान न पड़ें पुरुष या नारी ॥

३८८—देखी है एक अद्भुत नारी, ज्योतिष जाने वह गुणकारी।
पढ़ना लिखना उसे न आवे जीना मरना तुरत बतावे ॥

३८९—बन कटी बन में बनी, अरु रक्खे मन में शान।
हरदम वह जाल में रहे, तऊ न निकसे प्रान ॥

३९०—जल में हरदम रहत है, झूठ न बोले बैन।
कच्छ मच्छ मेंढक नहीं, तब बतलाओ कौन ॥

३९१—श्वेत अरुण है उसका रंग, रहता है वह सब के संग।
क्या उसने कोई जुर्म किया, नहिं तो फिर क्यों काट लिया ॥

३९२—नयन एक कौआ नहीं, बिल चाहत नहिं सर्प।
बिछुड़े को वह जोड़ दे, पर नहीं करती दर्प ॥

३९३—बिन पग जावे दूर लौं साक्षर पंडित नाहिं।
भावै बिन मुख सकल ही पंडित जानै नाहिं॥

३९४—एक पुरुष का काया रह गोल सीस वा लम्बी राह।
नारि को अपने लेत बचाय प्यार करे जब बिपदा आय॥

३९५—पर्वत ऊपर रथ चले भूमि बहावन हार।
वायु वेग सों चलत है पक्षी पग नहीं सार॥

३९६—गोपति है पर कृष्ण नहीं तिरशूली नहीं ईश।
चक्रपाणि पै हर नहीं, कहा मही जगदीश।

३९७—नारी पिय के साथ अमर पाय सोई नहीं।
सोई पियहिं सुलाय सोई फिर जागी नहीं॥

३९८—ऊँचे हैं घर बना लिए, सब ही नर बश कीन्ह।
दुरताई यह इच्छा रखें यह पताल घर कीन्ह॥

३९९—एक बड़ा है आग का गोला आतप ताप तपाता है।
जब वह गोला छुप जाता अन्धकार हो जाता है॥

४००—राजा का सिरताज हैं, रानी का गल हार।
जल के भीतर जन्म लिया है करने को शृंगार॥

४०१—शिर का काटा तनको छीला रही सूखी मांस है गीला।
मांस के रस को सबने पिया नहीं है बकरा तब क्या है पिया॥

४०२—ऐसा भई अनोखा देखा करते हैं सब उसका लेखा।
श्वेत रंग मल चाक समान राजा रंक करे सम्मान॥

४०३—रुई का है बाप सुदर्शन, विषयामी का है भरतार।
चलता है पर तिल नहिं हटता, भारत का करता उद्धार।
कहो सखी यह क्या है जिससे लाज हमारी रहती है॥
जीवन की यह कठिन पहेली चाट से ही कहती है॥

४०४—प्राण रहत उस नार से, प्रात खान कई जात।
यदि धुवकन को लगत है, रहत जात न पाँत॥

४०५—दाढ़ी आवे पहिले, और लड़का होवे पीछे।

४०६—जननी को संहार कर, जन्म उदर से लेय।
ऐसे वंश कुठार को, मुख देखे से हेय॥
बिना मुण्ड का रुण्ड है, हाथ पाँव विकराल।
पुच्छ कटीली अति विकट, देखे होत मलाल॥

४०७—बाल नौचकर कपड़े फाड़े गहना लिया उतार।
दुर्योधन से क्यों हुए जो नंगी कर दी नार॥

४०८—एक नारी तरुवर से उतरी, उसने बहुत रिझाया।
नाम जो उसके बाप का पूछा, आधा नाम बताया॥
आधा नाम बताओ खुसरो, कौन शहर की बोली।
नाम जो उससे उसका पूछा, अपना नाम न बोली॥

४०९—बाग, बगीचा, मन्दिर, मस्जिद, गिरजे पर चढ़ जाती हूँ।
अटा, अटारी, फूल के छप्पर, बगलों चढ़ मुसकयाती हूँ॥

४१—सोने कैसी चमचमी, नभ में उसका वास।
सुन्दर है वह अति सखी, करै प्राण का नाश॥

४१०—धागा है वह प्रेम का, भगती बाँधत ताह।
रक्षा उससे होत है, कह सखी वह है काह॥

४१—अपने मुख को देखकर कहती सकल समाज।
अब तो हम शोभित हुए कर शृंगार अरु साज॥

४१४०—एक पेड़ कश्मीरा, कुछ लौंग करें कुछ जीरा।
कुछ ककड़ी कुछ खीरा॥

४१—एक गाँव में आग लगी है, एक गाँव में धुँआ।
एक गाँव में बाँस गड़े हैं, एक गाँव में कुँआ॥

५१५—अक्षर तीन विपद के साथी युद्ध भूमि में आता काम।
युद्ध करने वाला हूँ सारा शीघ्र बताओ मेरा नाम॥

५१६—चार अक्षर, शब्द मधुर दुखी मेरी माता है।
पहिचानो तो! मेरे भय से सारा जग घबराता है॥

५१७—मिलकर सारे सुख धाम है दो अक्षर का नाम।
सबके मस्तक को भरे सबके आवे काम॥

५१८—अक्षर तीन बिचारे नाम आता हूँ मैं सबके काम।
सदा रहूँ मैं सबके साथ सबकी इज्जत मेरे हाथ।
प्यारे बच्चो मैं हूँ कौन बताओ शीघ्र रहो मत मौन।

५१९—फले न फूले अचरज न छूटे।

५२०—छोटी सी गुड़िया खुट खुट करे, सारा दफ्तर का काम करे।

५२१—फले न फूले नये न डार ये फल बाढ़े बारह मास।

५२२—बाबा रहता इस घर में पाँव पसारे उस घर में

५२३—हरी डण्डी लाल कमान तोबा तोबा करे

५२४—चार अंगुल का पेड़ सवा मन का पत्ता
फल लगे अलग अलग पक जाँय इकट्ठा

५२५—पानी में पाले गए, बसे बंगाल देश।
माता-पिता तो घर मरे, पूत मरे परदेश॥

५२६—हाड़ माँस तन है नहीं चमड़ी है बिन हाथ
वह रहती छिपकर सदा करे प्रेम मम साथ

५२७—मार भगाया सारा भारत, जिसने करके सा
अपना शान्ति प्रशान्ति मनाकर बतलाओ तुम वह

५२८—रात मरी दिन जागी।
दिन मरी रात जागी।

४३०—मकान क्यों न बना, जूता क्यों न पहना।

४३१—खाना क्यों न खाया, फोड़ा क्यों न चीरा।

४३२—इक नारी ने छ बरा बनाए, छ को परसे दो दो आए॥

४३३—बताओ एक ऐसी कौन वस्तु है जो पल, विपल और साल में एक ही बार होती है।

४३४—एक मर्द है बड़ा शतान पकड़े है वह नाक अरु कान॥
आँखों पर भी है वह चढ़ता, भगाते ही वह घर में घुसता।

४३५—रंग श्याम पर कृष्ण नहीं है, ब्रह्मा नहीं पर मुख हैं चार॥
शङ्कर का अवतार नहीं है, पर वरधा पर हैं असवार॥

४३६—एक बाण के लगते ही, जूझ गए जिव चार।
तुलसी मृगा न भाखते, तीन पुरुष एक नार॥

४३७—चन्द्र सा रूप मनोहर काया।
जिससे मानुष है लिपटाया॥
चाह है उसकी अति अलबेली।
इसकी जग में कठिन पहेली॥

४३८—मूँदी आँख को मैंने फोड़ा, उसमें निकला अंडा।
उस अंडे को खाने वाले, सब हो गए मुसंडा॥

४३९—निराकार—साकार बनावे, इन्द्रिय बिन सर्वज्ञ कहावे।
अजन्मा है पर जन्म का दाता, दया शील दुर्गों का ज्ञाता॥

४१ ऐसा उलटा कौन है, कह दो उसका नाम।
प्रातकाल सुमिरन किए पूर्ण होय सब काम॥

४४०—अपने को मैं तुम्हें बताता, आदि हीन ईश्वर बन जाता।
मध्य हीन सब कोई खावे, अन्त हीन एक नगर कहावे॥

४१ तीन वर्ण का नाम हूँ, सुख बाटूँ संसार।
बतलाओ मैं कौन हूँ मेरे राजकुमार॥

४४१—तनक सो लोनो सब घर मोनो।

४४२—हर हर हरकी हरखानेवाला कौन।
आप चली मायके लौटानेवाला कौन॥

४४३—एक गाँव में अचरज हुआ आधा बगुला आधा सुआ।

४४४—काली चिड़ी हरी पूँछ, न जाने तो बाप से पूँछ॥

४४५—एक अचम्भा देखो चल, सूखी लकड़ी लागा फल।
जो कोई उस फल को खाय पेड़ छोड़ वह अन्त न जाय॥

४४६—पन्द्रह आप पाहुने चार बनाओ एक।
थोड़ा थोड़ा सबको परसा मिल मइया को एक॥

४४७—तीस गज तन दुबरा जानो उसका पेट।
नर नारी नित आप सों करें हाथ धरि भेंट॥

४४८—आठ कुल्हाड़ी नौ तलवार, सब को सह लेती वह मार।
कुछ भी करे साथ वह रहती राजा रंक सभी को गहती॥

४४९—चीतल पड़ी पर कोई लोप न सके।
काली रस्सी कोई उठा न सके॥

४५०—देखत है सब जगत को लखत न अपनो गाँव।
एक रूप में रहत है है स्वरूप एक गाँव॥

४५१—पानी में नित रहत है वाके हाड़ न माँस।
काम करे तलवार का, फिर पानी में वास॥

४५२—सिर पर सोहे गंग जल, मुँह माह गज माँहि।
वाहन वाको वृषभ है शिव कहिए वह नाहिं॥

४५३—पहिला तृजा जोड़ के कर 'सूरदा' की याद।
पहिला दूजा छोड़ के, 'भंग' होत आस्वाद॥
पहिला अन्तर काट कर, बने 'रतन' की खान।
घर में सबके रहत है भोजन के हित जान॥

४५४—देखी एक सती हम नारी, वह सबको है अति ही प्यारी।
अपने प्यारे को ऐसा चाहे, संग सती हो प्रेम निबाहे॥
जीते जी वह करती यारी। बतलाओ वह क्या है प्यारी॥

४५५—पग काटे पग होत है, सिर काटे फल होय।
बीच कटे तो हो हरी, ज्ञानी बूझे कोय॥

४५६—एक वृक्ष है अति शर्मीला, हाथ लगे शर्माय।

४५७—सारी रैन छतियन पर राखा, गले से लिपटा रंग रस चाखा।
भोर होत ही दिया उतार, क्या सखि साजन! नहिं सखी 'हार'।

४५८—जब आवे तब रस भर लावे, तन मन की वह तपन बुझावे।
गोल मोल अरु तन का छोटा, क्या सखी साजन नहिं सखि 'लोटा'॥

४५९—उछल कूद कर जब वह आवे, धरा ढका सबही खा जावे।
दौड़ झपट जा बैठे अन्दर। क्यों सखी बालक, ना सखि 'बन्दर'॥

४६०—देखन में वे बड़े अनियारे। मेरे मनके है अति प्यारे।
सारी रैन में साथ में सोती। क्यों सखि साजन! ना सखि 'मोती'॥

४६१—द्वारे मेरे वह अलख जगावे। भभूत विरह की अंग लगावे।
सीगीं फूँकत फिरत वियोगी। क्यों सखि साजन! ना सखि 'योगी'॥

४६२—सारी रैन संग वह जागा। भोर भई तब बिछुड़ के भागा॥
उसके बिछुड़त फटता हिया। क्यों सखि साजन ना सखि 'दिया'॥

४६३—रात दिना वह संग में रहता। खोलत द्वार भीतर आ जाता॥
वह मुझको प्राणों से प्यारा। सोते जगते करूँ न न्यारा॥
वाको अर्थ बतावे कौन। क्या सखि साजन! नहिं सखि

४६४—एक नार जो औषधि खाय जिस पर थूके वह मर जाय।
साथी इसका जो कोई होय एक आँख से अन्धा होय॥

४६५—सुन्दर के काज प । एक मन्दर।
पवन न जावे पाके अन्दर॥
इस मन्दिर की रीति दिवानी।
बिठाये आग भर आई पानी॥

४६६—हाथ पैर सब सूखा सूखा ऐसी पुतली पड़ी सूखा।
जब पुतली बन ठन कर आवे हर चूमे पर बोझ सुनावे॥

४६७—मार से बढ़ जी उठे बिन मारे मर जाय।
बिन पाँवों जग जग फिरे हाथों हाथ बजाय॥

४६८—इतनी सी डिबिया जब जब करे।
माणिक मोती झर झर परे॥

४६९—एक गुनी ने ये गुन किया हरियल नार पिंजरे में दिया।
उस पिंजरे से निकली लाल जिसने पृथ्वी करदी लाल॥

४७०—चाँद सा चकला पान सा पतला
चढ़ चढ़ शब्द सुनाता है।
भोजन समय कहीं आ जाता
पहिले मारा जाता है॥

४७१—कारी नारी सुहावनी पीछे भरे रूप।
एक को भावे सबरी सभी समर्थ भेष॥

४७२—अजब तरह की है एक नार उसका मैं क्या करूँ विचार।
निशि दिन डोले पी के संग लगी रहे नित वाके अंग॥

४७३—कृष्ण मनोहर एक है पीत वर्ण का आप।
नारी के सम नाम है, मन को हरता ताप॥
रवि मुख जोहत है सदा नेह रवी से जोर।
उसी ओर देखत रहे, रवि जावे जिस ओर॥

४७४—खेत में उपजे सब कोई खाय, घर में उपजे घर बह जाय।

४७५—खेतों में इक फल उपजाया, जिसको सभी जगत ने खाया।
लेकिन जब वह उपजे घर में, सर्वनाश कर दे छिन भर में॥

४७६—भोजन की मैं वस्तु हूँ, चन्द्र समान अकार।
हर दिन मुझको चाहते, बालम नर अरु नार॥

४७७—गर्मी में वह सुख पहुँचावे, सर्दी में वह आग जलावे।
बिन पंखों के चलता रहे, ज्ञानी हो सो नाम कहे॥

४७८—बच्चों का वह राजदुलारा, छत से लटका रहता है।
रोता बच्चा चुप हो जाता, यदि उसको पा जाता है॥

४७९—दो चार हैं सन्मुख रहते, चलने में वे खटपट करते।
जब वे दोनों मिलते है, घर की रक्षा करते हैं॥

४८०—घूम घुमारा लहँगा पहिने, एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के, सरत उसकी लगे परी॥

४८१—एक नारी है अधिक सचेत, प्रेमी को कर देत अचेत।
जो उस नारी से प्रेम करे, मजनू की तरह बेहोश फिरे॥
धन खोवे अरु धर्म गँवाय, फिर भी हाथ कछू नहिं आय।
यह फूलों का सार है, ऊँची जगह बिकाय।
सोच समझ कर कह दो सजनी, कठिन पहेली आय॥

४८२—दश द्वार का मन्दिर बना, राज करे वह बेटा बना।
पट भीतर वह खोल के जाय, हरि से मिले लीन हो जाय।

४८३—फन राखे पर नाग नहीं धार रखे जल नाहिं।
चाकू चाकू उससे कहें पर चाकू कहावे नाहिं॥

४८४—आदि कटे से सबको पालै मध्य कटे से सबको घालै।
अन्त कटे से काम बनावे, पूरा हो नैना सुख पावे॥

४८५—अति घृणति कोमल बदन, सिंह राति दिन चोर।
रात बिछौने पै परे, तलफत हो गयो भोर॥

५८६—एक महल के हजारों द्वार नारी पढ़ती है दरबार।
दरबार में रस है खास बुद्धिमान और बड़ी महाल॥

५८७—चार परेवा चारो रंग मुख देखो तो एकहि रंग।

५८८—सिर बिन धड़ पर जटा दिखावे।

५८९—श्याम है पर कौवा नहीं। पतली है पर पीतल नहीं।
पेड़ पर चढ़े पर बन्दर नहीं। बढ़ता है पर पानी नहीं॥
सिर बड़ा पर हाथी नहीं। पानी में रहता पर नाम नहीं।

५९०—एक किले में बुरज हजार। हर बुरज पर पहरे दार॥
ऐसा अद्भुत किला बनाया। ना ईंट न चूना लगाया॥

५९१—डाल, पात न फल है उसमें बिना वृक्ष फल होय।
ना जानूँ इस जग में किसने ये फल खाकर बोय॥

५९२—हरी डली सफेद दाना। पक्के पड़े तब भोगे खाना॥

५९३—एक नारी करतार बनाई। ना वह क्वारी ना वह ब्याही॥
लाल रंग सदा ही रहे, बहू बहू उसको सब कहे॥

५९४—एक नारी के सींग है, मर्द रखे वह चार।
जिसके घर वह पहुँचती माथी लेकर आत॥

५९५—श्याम बरण पीताम्बर कांधे, मुरली धर नहिं सोय।
बिन मुरली वह नाद करत है बिरला बूझे कोय॥

५९६—बड़े बड़े तब पड़ी रहे वह बड़ी रहे गिर पड़ती है।
करे साथ उसका जो कोई, उसे पटा कर भगती है॥

५९७—थान भर कपड़ा बारह पाट, न द बने हैं तीन सौ साठ॥

५९८—बिन ईंटों के महल बने हैं, बिन पानी की सरिता।
जिसने ऐसा विश्व बनाया कौन है ऐसा कर्ता॥

५९९—एक मन सोना और एक मन कपास में अधिक वजनदार कौन है?

५००—एक वृक्ष पर २५ बगुला बैठे थे एक शिकारी ने बन्दूक से एक बगुला को मार गिराया, अब बताओ उस वृक्ष पर कितने बगुले शेष रहे ?

५०१—गोरी के वह गाल पर कैसी शोभा देत।
जब डालत हैं खेत में श्वेत पुष्प वह देत॥

५०२—इक तरुवर करु आधा नाम, अर्थ करो नहिं छोड़ो ग्राम।

५०३—श्याम बरण अरु दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी।
दोनों हाथ से उसको खींचो, तो कहती है आरी॥

५०४—एक नार वह नंगी, चंगी, हाट खड़ी बिकवावे।
नाक में नकबेसर पहिने, छः नाड़े लटकावे॥

५०५—सारी गुदड़ी जल गई, अरु जला नहीं एक धागा।
घर के मानस पकड़ लिये, जल मोरी में से भागा॥

५०६—एक नार ने अचरज किया, साँप मार कर ताल में दिया।
ज्यों ज्यों साँप ताल को खाय, ताल सूख साँप मर जाय॥

५०७—एक नार है रंग बिरंगी, टागे वह रखती है नंगी।
जो धोवत करती है काम, सोई उस त्रिया का नाम॥

५०८—एक गुजरिया सिरपर मटकी, मटकी में है आग।
उस त्रिया से प्रेम करे पर, लगे न कुल में दाग॥

५०९—चालिस मन की नार कहावे, सूखी जैसे तीली॥
कहने को परदे की बीबी, लाखों रंग रंगीली॥

५१०—मैं नीचे मेरा पिया आकाश, कैसे जाऊँ पी के पास।
बैरी लोग पकड़ दिखलावें, पी चाहें तो आप ही आवे॥

५११—एक थाल मुतियन से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे॥

५१२—एक नारि का मैला रंग रहती है वह पिया के संग।
उजियाले में नहीं दिखाय अँधियारे में संग छिपजाय॥

५१३—एक नार है वह बेरंगी घर से बाहर निकले नहीं।
उस नारी का यह सिंगार, पहिने नथुनी मुँह पर नार॥

५१४—नहीं दिखाई देत हैं यह पिया मतहीन।
वह मारी पत पड़ गई पी ऊपर है छीन॥

५१५—सिर धुन कर बाहर चला कानपुर में शोर पड़ा।
हस्तनापुर में पकड़ा गया नूरपुर में मारा गया॥

५१६—आस पास मोती जड़ी। बीच में कोयल खड़ी॥
देखो लोगों उसका हिया। अपना जोबन और को दिया॥

५१७—मूसी जैसा रूप यही जासा भेष।
बताओ तो बताओ नहीं जाओ हमारे देश॥

५१८—एक पहेली अगम देखी जंगल में दरवाजा।
आवेगी जब छैल छबीली भर कर देगी ताजा।

५१९—भाँति भाँति की देखी नारी। और मगी है गोरी कारी॥
अधर धरे और दौड़ी आवे। प्रेम करे तो नीर बहावे॥

५२०—एक नार है रंग बिरंगी चीजों में वह चमकती है।
एक चीज़ा है उसपर बैठ वह चीजों पर चढ़ती है॥

५२१—जग से तरुवर उपजा एक। पात नहीं पर डाल अनेक॥
उस तरुवर की शीतल छाया। नीच उसके बैठ न पाया॥

५२२—नारी काट के नर किया सब नर खड़ा अकेला।
उस नर का सब भोजन करते यही काम अलबेला॥

५२३—एक राजा मनाग्नी रानी। नीचे से वह पीवे पानी॥

५२४—एक ऐसी पृथ्वी है जहाँ बड़े बड़े महासागर, समुद्र नदियाँ और झील हैं, परन्तु उनमें पानी की बूँद नहीं है।

वहाँ बड़े बड़े पहाड़ हैं, परन्तु उनमें पत्थर तो क्या एक कंकड़ भी नहीं है। उसमें बड़े बड़े जंगल हैं, परन्तु वृक्षों के नाम एक पौधा भी नहीं है। उसमें बड़े बड़े राज्य, शहर, कस्बे और गाँव हैं, परन्तु एक प्राणी भी नहीं है। बताओ वह पृथ्वी कहाँ है।

५२५—शीश जटा पोथी लिए, श्वेत वरण गल माहिं।
भोगी नहिं अवधूत नहिं, पण्डित ब्राह्मण नाहिं॥

५२६—मुख विहीन अरु पग रहित, पर वह विश्व लखात।
देश देश में जाय के कहत हृदय की बात॥

५२७—खड़ाऊँ को नहिं पहिन सकें हम।
कपड़ों को नहिं टाँग सकें हम॥

५२८—निज मस्तक पर ब्राह्मण क्षत्री, वैश्य भी धारण करते हैं।
तुम बतलाओ झटपट बालक, उसको हम क्या कहते हैं॥

५२९—भारत में इक शहर है, विश्वनाथ का धाम।
नाम बताकर तुम सब बालक, करलो उसे प्रणाम॥

X ५३०—मैं तीन अक्षर की एक नदी हूँ। मेरा प्रथम अक्षर छोड़ देने से एक छोटा फल हो जाता हूँ। बीचका अक्षर अलग करने से श्याम मयी हो जाता है बताओ मैं कौन हूँ।

५३१—सबने मिलकर महल बनाया, लेकर उसको फिरा फिराया।
जल में लाकर उसे डुबाया, रो रोकर फिर आँख फुलाया॥

५३२—श्याम वर्ण पर हर नहीं, जटा नहीं पर ईस।
मै तोसों पूँछो सखी, अंग लपेटे कीच॥

५३३—इक पक्षी है परम सुजान, वह बोले अति मीठी बान।
कृष्ण वर्ण पद चोंच है लाल, पी पी कह कर हो बेहाल॥

५३४—एक महल में दो हैं राजा, वे हैं अपने सहित समाजा।
बारी बारी लड़ते हैं मरते हैं फिर जीते हैं॥

५३५—मैं सात अक्षरों का एक नाम हूँ। मेरा प्रथम अक्षर 'सुनीति' में है 'सरस्वती' में नहीं। मेरा द्वितीय अक्षर 'प्रभा' में है 'अभ्युदय' में नहीं। मेरा तृतीय अक्षर 'पद्मासन' में है 'शिष्टाचार' में नहीं। मेरा पञ्चम अक्षर 'पंचराज' में है 'शुभचिन्तक' में नहीं। मेरा सातवाँ अक्षर 'सरस्वती' में है 'सुनीति' में नहीं। अब आप मेरा छठवाँ अक्षर धीरज के साथ खोजिए। सुभीते के लिए इतना और बतलाए देता हूँ कि राष्ट्रपति में से एक राष्ट्रपति हूँ।

५३६—ऐसे एक पक्षी पहाड़ पर जिन्हें छुआ नहिं जाय।
माता जिन की अग्नि है, पूत पियादन जाय॥

५३७—दीवाली इनको कहते हैं पकवान का सामान।
पीते पीते मर गया आने चतुर सुजान॥

५३८—एक आग ऐसी कहलावे बिन बुझे का नाम बतावे।
खाने का पद भर भर देवे आने की पद ख़बर न लेवे॥

५३९—तरुवर पर मैं रहता हूँ पर पक्षी नहीं कहाता हूँ।
बरगद का मैं पहिन हूँ पर प्राणि भी नहीं कहाता हूँ॥
तीन नयन मैं रखता हूँ पर 'शंकर' कहता नहीं मुझे।
घट में पानी रहता है अब नाम बताओ मेरा मुझे॥

५४०—ऐसी एक पतिव्रत बाला स्वामी न है बगदो पाला।
मित्र प्यार का ऐसा नाद नाम रंग है प्यार निनाद।
मोह छोड़ कर दिया आदमी अब क्या पूछो तुमसे पहली॥

५४१—एक पहेली मैं पूछूँ तुम करो न उसमें गड़ा।
आधा नाम सिपाही का आधा नाम है पत्ता॥

५४२—स्वामी की आँखों के आगे पूरा काम बजाता हूँ।
आँखों के ज्यों ओट हुआ, चट भीतर घुस जाता हूँ॥
अंधकार के होते ही मै, काम नहीं कुछ करता हूँ।
ऐसा नौकर हूँ विचित्र मैं, खाता हूँ न पीता हूँ॥

५४३—गरमी में पैदायश मेरी, जाड़े में कम होय।
खाद्य वस्तु में यदि पड़ जाऊँ उसे न खावे कोय॥

५४४—नर-नारी की एक सास हो क्या है उसका रिश्ता।

५४५—दो अरु चार में हम तुम सब है।
एक अरु चार में चढते हम हैं॥
तीन चार से घर बह जाते।
एक अरु दो से, श्रवण कहाते॥
किसी शहर का नाम हूँ मुझ में अक्षर चार।
बतलाओ है क्या सखी, मत कर सोचविचार॥

५४६—वह कौन है जिन के हाथ पैर या शरीर ही नहीं है, परन्तु सारे जगत को देखता है, वह कौन है जो स्वयं कुछ नही खाता परन्तु सब को भाजन देता है—

५४७—बिन पग चले सुने बिन काना।
कर बिन कर्म करे विधि नाना,
आनन रहित सकल रस भोगी
बिन वाणी वक्ता गण योगी।
कहो पहेली कौन है इसपर करो विचार।
निराकार निर्गुण है यह, या है ईश्वर का अवतार॥

५४८—वह कौन सी सख्या है जिस में २ का भाग दें तो शेप १ बचे, ३ का भाग दें तो शेप २ बचे, ४ का भाग देने से शेप ३ बचे। ५ का भाग देने से शेप ४ और ६ का भाग देने से शेप ५ बचे।

५४९—वह कौन सी संख्या है जिसमें १८ जोड़ने से योग फल में उसके अङ्क पलट जायें।

५५०—वह कौन सी संख्या है जिस में ४ का गुणा करने से जो उत्तर आता है वह ठीक उस संख्या का उलटा होता है

५५१—बिना पैर पर्वत चढ़े बिन मुख मोहन खाय।
एक अचम्भा हम सुना जल पीवत मर जाय॥

५५२—टेढ़ी मेढ़ी बाँसुरी, बजैया नहिं कोय।
सीता चली मायके रुकैया नहिं कोय॥

५५३—मैं तीन अक्षर की आवश्यक वस्तु हूँ।
कुछ दिनों पहिले लोगों ने मेरा साथ छोड़ दिया था किन्तु आज कल मेरा बड़ा आदर है। कहते हैं मेरे द्वारा भारत स्वतन्त्र हो जायगा।

५५४—बड़ा नाक पर मैं रहता हूँ पकड़े दोनों कान।
बाबू लोग लगाकर मुझको बड़ी झाड़ते शान॥

५५५—पैर कटे तो पुल बनेगा कमर कटे तो बने गदर।
इसने ही था कृष्णचन्द्र को दूध पिलाया मिला आदर॥

५५६—१६ मुर्गियाँ और बतखियाँ मिली हुई हैं बताओ कितनी कितनी हैं जब कि सब का जोड़ ४) द० है।

५५७—आगे पढ़ें अक्षर के मैं अभी बोल मत कह देना।
बकरी बोल बनोगे मुझको कहीं न पर समझ लेना।
पाओगे बत्तक के पीछे, मैं नहीं पद था पर हूँ।
गौर करोगे तो समझोगे छोटा सा अक्षर मैं हूँ।

५५८—दो भाई देखन के चाकर, दो भाई सुनन के चाकर।
दो भाई सूँघें सकल चार भाई मीठ चाकर॥
चार भाई चलने के चाकर एक भाई मक्खी के चाकर।

५५९—चार घड़े दूध के भरे। जो विना ढक्कन उलटे पड़े ॥

५६०—उल्लू की घोड़ी। एक चढ़े तो लगड़ी ॥
दो चढ़े तो दौड़ी।

५६१—चरख चम्बो, पात लम्बो। फल खाओ, गुठली न पावो ॥

५६२—वह क्या है जिसे हम तुम हर दिन देखते हैं। राजा कभी—कभी और भगवान कभी नहीं देखता।

५६३—वह क्या है, जिसका आना, जाना, उठना, बैठना सब ही बुरा है।

५६४—मूरा वदन और रेखाएँ तीन। दाना खाती हाथी साथीन ॥

५६५—विन पैसे का शाह कहावे। अपनी पूँजी आग लगावे ॥
आग लगाय रहे घर सोय। होत भोर ही सौदा होय ॥

५६६—आधा सागर तलवसे, आधा गिरि की खान।
पण्डित याको कहत हैं, देश भक्त सरनाम।

५६७—उल्लू ने एक चिड़िया पाली।
पेट में उसकी रस्सी डाली ॥
रस्सी खींची चढ़ गई ऊपर।
ढील दिया तो आई भू पर ॥

५६८—देखा एक अजब चमगादर। लटका रहता है खूँटी पर ॥
जब बाबू जी दफ्तर जाते। उसको मस्तक पर बैठाते ॥

५६९—एक पेड़ से पत्थर गिरा, जो बूझे वह ज्ञानी।
फोड़ा तो सफेद निकला, और वह गया पानी।

५७०—एक महा काव्य का नाम—
य, मी, वा, मा, ल, रा, कि, ण।

५७१—प्रथम-द्वितीय से सर्प कहाऊँ।
तृतीय-प्रथम से बड़ा शहर ॥

प्रथम-चतुर्थ से मार कहाऊँ।
तृतीय-चतुर्थ से बहते घर॥
सी-पी का एक शहर हूँ मुझ में अक्षर चार।
कहो पहेली क्या सभी करके बहुत विचार॥

५७२—पहिले तीजे से 'जल' निकल कर
पंचम पहिले 'रज' पर पड़ता है
पहिले पंचम के 'जर' को प्रथम कर
दूजा पंचम 'बर' होता है
दूजे तीजे के 'बल' को पंचकर
तीजे दूजे का 'लब' बनता है।
सी पी का यह कौन शहर है
जो पंच अक्षर से बनता है।

५७३—तीजे पहिले की मध्य 'रसा' पर
पहिला दूजा 'साग' उगाता है।
तीजे दूजे की सुन्दर रग-रग में
पहिले तीजे का सार समाता है।
सागर में सी पी रहती है
पर सी पी में यह रहता है।
तीन अक्षर का कौन शहर यह
चौथे पर नहिं मिलता है।

५७४—सोने की वह वस्तु कहावे। कम कीमत में है वह भावे।
एक सिक्के में हार हजार। हर हारे पर पहरे हार।

५७५—तीन अक्षर का नाम है एक।
मिलता है वह यहाँ अनेक॥
पहिला तीजा जब है मिलाया।
तब ही 'काठ' ने सबको भाया॥

प्रथम दूसरा होय इकट्ठा।
'फाज' न करो होय तो ठट्ठा॥
दूसर तीसर है वह चीज़।
उसके गये से हो नाचीज़॥

५७६—मन की नहीं, ध्यान में नहीं, बोझ नहीं राई।
एक से वह कभी न उठे, तब दोनों ने उठाई॥

५७७—रहूँ सदा मैं सब के पास। भीतर बाहर आस पास॥
देख न सको मुझको कभी। भग जाऊँ तो रो दो अभी॥
कहो मित्र अब मैं हूँ कौन। रहूँ सदा मैं तेरे भौन॥

५७८—पहले थे हम मर्द, मर्द से नारि कहाए।
कर गङ्गा स्नान, पाप सब धोय बहाए॥
बैठ शिला के बीच घाव बरछी के खाए।
गए समुद्र में डूब, मर्द के मर्द कहाए॥

५७९—सब जीवों के साथ रहूँ, पर कोई न देखे मोय।
इक पल को मैं साथ न छोड़ूँ, रूप न देखे कोय।
याद करें सब घबड़ा जावें, बड़े बड़े बलधारी॥
कहो सखी वह कौन वस्तु है, है उसकी बलिहारी।

५८०—कौन है ऐसी सब से न्यारी, जिसको देखा पुरुष अरु नारी।
कभी नहीं अब दरशन देता, पल-पल में वह चलता जाता॥

५८१—१०००) रुपयों को ऐसी दस थैली में भरो कि चाहे जितने रुपया निकाल सकें परन्तु थैली का मुँह न खोलना पड़े।

५८२—माँ बेटे हैं दो, रोटी बनाई तीन। अब इन्हें इस तरह बाँटो कि रोटी टूटने न पावे।

५८३—एक रुपया में गाय बिकत है, चार आना में बकरी।
पाँच रुपया में भैंस बिकत है, जो है चौड़ी चकरी॥
बीस रुपये में बीस नग लाए, करो हिसाब न तोड़ो लकड़ी।

५८४—बाप-बेटा मामा-भानजे और ये साले बहनोई।
तीन रुपया ऐसे बाँटो सब को एक एक मिल जाई॥

५८५—राजा ने एक महल बनाया ऐसा विरला का रस मगवाया।
जो कोई उस महल में जावे रोग त्यागकर घर को आवे॥

५८६—एक महल में लाखों दीपक एक गैस भी जलता है।
उस गैस से तेज निकलती जब पूर्ण ज्योति में होता है॥

५८७—एक अनोखी देखी नार, बूढ़ों को वह करती प्यार।
नाक पकड़ कर कान दिखाती आँखों पर आँखें चमकाती॥

५८८—गोरा तन मन सुन्दर पैना। राजा रङ्क सभी सुख दैना॥
त्यागी उसको दूर भगावें। बाकी सब उसको अपनावें॥

५८९—श्याम वरण मुख काठ का बाँध पुरुष अरु नारी।
पर भोजन की वस्तु नहिं पत्थर का है भारी॥

५९०—रामहिं रावण न हरे, अर्जुन त्याग सुरंत।
त्रिपुर ठाकुर न हरे, सो मोहिं दीन्हीं कंत॥

५९१—हजारों मुँह की नारी देखी मर्मों से मारा जाय।
इतना मारा जाने पर भी, जाती पेट दिखाय॥

५९२—बार बार जो पैदा होवे बार बार मर जाय।
उनतिस दिन की आयु है कहो सभी वह काय॥

५९३—लम्बी काली पूँछ है, नभ में रहे मड़राय।
जब बालक हैं दौड़ते पानी पियत मर जाय॥

५९४—इस संसार में सब से आश्चर्य जनक बात क्या है।

५९५—चार पहर चौंसठ घड़ी ठाकुर के ऊपर ठकुराइन चढ़ी॥

५९६—हरे रङ्ग की एक नार है अति विचित्र गुण उसका।
जो कोई उससे हाथ मिलाए करत खून है उसका

५९७—चार पाँव है उस नारी के कर होते हैं दोय।
राज सभा में इज़्ज़त पावे, विना मुँह की होय॥

५९८—एक मरद है बड़ा अनोखा, मरा हुआ टर्राय।
कुँआ में से पानी भर कर पेड़ों को देय पिवाय।
हाथी समान सूँड़ है उसकी, पेट है झामक झोला।
दो बैलों से चलता है वह, है वह कौन पहेला॥

५९९—एक लई दो फैंक दई।

६००—मोतीचूर सा लड्डू है, खाते ही पगलाव।
पार्वती-पति प्रेम करत है, क्या है तुम बतलाव॥

६०१—मस्तक है न बाल हैं, पर हैं चोटी तीन।
गुण उन में पर एक है, दुर्गुण लेतीं छीन॥
कहो सखी वह कौन है, दौड़े उन पहँ जाँय।
उनकी जो संगत करे, तो मूँड़ देंय मुड़वाय॥

६०२—धोती बाधे फिरे कामनी, सिर पर आग जलावे।
सभा बीच में नाचत फिरती, फिर भी सब मनभावे॥

६०३—एक झाड़ पर आये बगुला, बैठें इक इक डाली पर।
इक बगुला को जगह मिली न, उड़ता था वह इधर उधर।
जब इक डाली दो दो बगुला, बैठे मोद मस्त होकर॥
तब इक डाली खाली रह गई, कहो पहेली खुश होकर।

६०४—१००) को ऐसी ७ थैलियों में अलग-अलग भरो कि उन थैलियों का मुँह खोले बिना हम १०० तक चाहे जिसको जितने दे सकें।

६०५—एक ही फल में सब कुछ होवे लगता सबको प्यारा।
मिसरी, शरबत, साग, चिरोंजी, अरु गायों का चारा॥

६०६—एक पिया की दो दो नार करता वह दोनों का प्यार।
एक संग वे कभी न आवे, गीली जावे सूखी आवे॥

१०७—दो अक्षर का नाम है, हैं प्रकार अनेक।
काले पीले श्वेत भी लाल रङ्ग के एक॥
सभ्य पुरुष खाते नहीं खाते हैं जो नीच।
कहो पहेली क्या सखी हृदय सोच करबीच॥

१०८—नारी एक है पुरुष हैं दो।
एक चले एक रहता सो॥
हर दम नार को है पति साँसा।
इन तीनों का पकड़ि धागा॥

१०९—मनुष्य को श्वेत वस्त्र बरन देत है गंध सुवास।
पूजा को मोहि चाहिए, बेग बताई खास॥

११०—गर्मी में वह हरा भरा हो वर्षा में कुम्हलावे।
गर्मी में नन्दन कहलावे पर कृष्ण नहीं कहलावे॥

१११—काला कलूटा खूब चपरा मारे से वह बोले रे।
बिन मारे वह चुप हो जावे कहो पहेली मेरा रे॥

११२—पतली जमीन पर बोना चावे सो हो चतुर सुजान॥
हाथ से बोवे मुख से काटे नयनों स करे शुमार॥

११३—देखी एक है सुन्दर बाला। सुर्ख बदन पर मुंह है काला॥

११४—तम के संग ही रहत है यहाँ रहत है मौन।
अंधकार से भगत है देखा अचरज कौन॥

११५—एक सुआ धारण किए, बैठी नारी हाथ।
सब जग बस में कर लिया नहीं मास पर खाय॥

११६—गुण त्यागे दुर्गुण गहे हैं सखियों के पास।
जाकर देखो तुम सखी बेग बताई खास॥

११७—पानी का वह है पिता गहे बिन बोल सुनावे।
आँखों बिन आँसू गिरे, वीर सा नाम कहावे॥

६१८—घट घट सब कहते उसे, पर घट करे न वास।
कच्चे से कुछ प्रेम नहिं, पके पर रक्खें पास॥

६१९—ऊपर चपकन नीचे चपकन, बीच कलेजा धड़के।
कहे बीरबल सुन लो भाई, दो दो अंगुल सरके॥

६२०—एक जानवर चिपकन, जिसके हड्डी है न लपकन॥

६२१—कौन चाहे बरसना, कौन चाहे धूप।
कौन चाहे बोलना, कौन चाहे चूप॥

६२२—बार बार डाला। डाल के निकाला॥

६२३—कौन सरोवर बाल बिन, कौन पेड़ बिन डाल।
कौन पखेरू पंख बिन, कौन मौत बिन काल॥

६२४—१२० के ऐसे चार टुकड़े बनाओ जो एक दूसरे से दूने हों।

६२५—राम और गोपाल के पास कुछ रुपया थे, राम ने कहा गोपाल तुम मुझे १) दे दो तो मेरे पास तुम्हारे बराबर रुपया हो जाय। गोपाल ने कहा तुम्हीं मुझे १) दे दो तो मेरे पास तुमसे तिगुने रुपया हो जाय। बताओ प्रत्येक के पास कितने रुपये थे।

६२६—एक बागवान २५ पेड़ों का बाग इस प्रकार लगाना चाहता था कि उनकी पक्ति १२ हों और प्रत्येक पंक्ति में ५ वृक्ष हों।

६२७—एक कोट की कीमत ३) कमीज की कीमत १) और टोपी की कीमत ॥) है तो इस तरह खरीदो कि २०) में २० वस्तुएँ आवें।

६२८—एक वृक्ष पर कुछ कबूतर और एक वृक्ष पर कुछ तोता बैठे थे, कबूतरों ने तोतों से कहा कि एक तोता इस वृक्ष पर आ जाओ तो दोनों बराबर पक्षी हो जायँगे, तोतों ने कहा कि एक कबूतर इस वृक्ष पर आ जाय तो हम

तुमसे पूरे पक्षी हो जायेंगे। कबूतर और तोतों की संख्या बताओ।

१२९—एक बगीचे के चार दरवाजे थे चारों में पहरेदार थे। एक दिन एक चोर कहीं से बगीचे में घुसा और कुछ आम तोड़ लाया। जब पहिले दरवाजे से निकला तो पहरेदार ने आधे आम तथा एक आम ले लिया। जब दूसरे दरवाजे पर पहुँचा तो बचे हुए आमों के आधे और एक आम देना पड़ा। इसी तरह चारों दरवाजों के पहरे दारों को देना पड़ा जब बाहर आया तो देखा केवल दो आम बचे हैं तो बताओ वह कुल कितने आम बगीचे से लेकर निकला था।

१३०—पहिला टूटा अमिय कहावे। तीजा टूटा राग सुनावे। पहिला तीजा जब कि मिलाया। सकड़ी औरत पैर बताया॥

१३१—*तीन अक्षर के सगरे हैं किसी शहर का नाम।*
कहो पहेली प्रीतम प्यारे नहीं छोड़ दो धाम॥

१३२—बाप बेटे का एकहि नाम।
नाती का कुछ दूसर नाम॥
यदि हम उसका रस पी जावें।
जल्दी मतवाले हो जावें॥

१३३—बड़े प्यार से मोल मँगाया अंगे बदन बसे छिपटाया॥
करती उससे देखा मेल बनु प्यार से करती खेल॥

१३४—सदा रहे अपनी जगह देता है बरदान।
निश्चय उसका जानें हैं नभ उसका स्थान॥

१३५—इस नारी की अद्भुत रीति। चुपके चुपके गावे गीत॥
जब जब इसको मारे बह। जो चाहे कह देवे वह॥

६३६—पतली कमर का है यह ज्वान, सिर पर आग जलाता है।
पेट में अपने पानी भर कर, गड़ गड़ शोर मचाता है॥

६३७—मैं एक ऐसी वस्तु हूँ कि जिसके खाने के लिये सब काँपते हैं, परन्तु उसका शिर काट लेने से सब उसके भक्त बन जाते हैं।

६३८—एक महाराजाधिराज ने महल बनाकर उसमें नीले रंग का अच्छा शामियाना लगाया है। उस शामियाने में लाखों हीरा लटका दिये हैं। इतना सब करने पर भी उस स्थान को सूना छोड़ दिया है, परन्तु कोई भी उन हीरों में से एक भी हीरा नहीं ले सकता, बताओ क्या है।

६३९—पहिले चमके फिर जा धमके।

६४०—माँस नहीं है हाड़ नहीं है, अँगुली के बस रहता हूँ।
नाम बता दे प्यारी मेरा, गर्मी से मैं डरता हूँ॥

६४१—एक कारीगर ऐसा आया। खम्भे पर है बँगला छाया॥
भोर होत ही बाजे बम्ब। नीचे बँगला ऊपर खम्भ॥

६४२—शिर है, पूँछ है पर पाँव नहीं वह रखता है।
पेट है आँख है पर कान नहीं वह रखता है॥
हाथ नहीं है पाँव नहीं है सर्पट चाल वह चलता है।
मानो मौत ही आ रही है यही सबको दिखता है॥

६४३—एक अचम्भा ऐसा देखा, गढ़ तूम्बा के पास।
तीन टाँग घर पर रही, एक गई आकाश॥

६४४—जल तो है गंग जल और जल काह रे।
फल तो है आम फल और फल काह रे॥
भोग में है स्त्री भोग और भोग काह रे।
ज्योति में है नयन ज्योति और ज्योति काह रे॥

१४५—मैं पाँच अक्षर का एक शब्द हूँ।
मेरा पाँचवा और दूसरा—हवाई जहाज।
मेरा तीसरा चौथा—कपड़ा सीने की वस्तु।
मेरा दूसरा पाँचवा—नवीन।
तीसरा दूसरा—सुन।
यदि मेरे पाँचों अक्षर मिला दो तो मैं एक सती स्त्री हूँ।
जिसका नाम बहुत प्रसिद्ध है।

१४६—एक स्त्री एक लड़के को मारने लगी दूसरी स्त्री ने कहा तू इसे क्यों मारती है यह तेरा कौन है उसने कहा इसका नाना मेरे मामा का जमाई था। बताओ क्या सम्बन्ध है।

१४७—एक स्त्री ने एक लड़के की ज़मानत की। अदालत ने पूछा यह तेरा कौन है उस स्त्री ने कहा मेरा मामा इस लड़के के मामा का मामा है।

१४८—एक मनुष्य ने १५) दो बाप और दो बेटों में बाँट दिए। प्रत्येक को ५) मिले बताओ यह कैसे हुआ।

१४९—८० के ऐसे चार टुकड़े बनाओ कि यदि पहिले में ३ जोड़ें दूसरे में से ३ घटावें तीसरे में ३ का गुणा करें चौथे में ३ का भाग दें तो सब उत्तरों की संख्या बराबर हो।

१५०—इस समय पिता की अवस्था ५८ वर्ष की और लड़के की १४ वर्ष की है बताओ पुत्र से पिता की अवस्था दुगनी कब थी और पुत्र की अवस्था पिता से एक तिहाई।

१५१—बगीचा उजाड़ा क्यों? चोर मारा क्यों?

१५२—ब्राह्मण प्यासा क्यों? घोड़ा उदासा क्यों?

१५३—मकान न छाया क्यों? जूता न पहना क्यों?

१५४—अनार क्यों न खाया? मंत्री क्यों न रखा?

६५५—मैं ५ अक्षर का एक सी पी का पुराना जिला हूँ। जिसका
पहिला और दूसरा अक्षर—मर्द है।
दूसरा और पहिला—युद्ध।
तीसरा और चौथा—सिंह है।
चौथा और पाँचवा—स्थान है।
चौथा और दूसरा—शंकर का नाम है।

६५६—एक मर्द है बड़ा हठीला, पर है जाति का छोटा।
इसके आगे सीस नवाते, राजा रंक लंगोटा॥
वर्तमान के नवयुवकों को, सदा चाह उसकी रहती।
सिरसे खून बहा देता वह, है उसमें ऐसी शक्ती॥

६५७—यदि करते हो कुछ भी गड़बड़, गालों पर चपत जमा देगा।
फिर करते हो तीन-पाँच तो सिर के बाल उड़ा देगा॥
बतलाओ वह कौन है, करके अभी विचार।
नहीं निकल जाओ अभी, कान पकड़ कर यार॥

६५८—वह क्या है जो तुम्हारी होने पर भी तुम्हारे लिए बेकाम
और दूसरों के लिए काम की है।

६५९—कहो कौन सी वस्तु है जिसे न गढ़ी सुनार।
सदा समीप रहती है, करे शस्त्र का कार॥

६६०—कहो कौन वह मर्द है करे रात दिन काम।
देखन में धनाढ्य है पर है वह बेदाम॥

६६१—एक हाथ का आला है उसमें चार हाथ के विष्णु भगवान
कैसे बैठ सकते हैं।

६६२—सब से प्यारी वस्तु कौन है,
यह तुम हमको बतलाओ।
क्या तुम उसको देख सकते हो,
यह भी हमको समझाओ॥

५३३—पिता के सिवाय मनुष्य को और कौन जन्म देता है।

५३४—चमारों ने घर क्यों न छापा। मखमल की चोरी क्यों हुई?

५३५—साधु क्यों भागा। ढोलकी क्यों न बजी?

५३६—घर क्यों अँधियारा—साधू क्यों न सीटा?

५३७—आप किसकी मदद के भाई हो।

५३८—प्रथम तृतीय से ज़हर उगलता
पंच एक से करें प्रकाश।
द्वितीय, तृतीय से शब बन जाता
पंच तृतीय से कर रस पान।
पाँच अक्षर का शहर है,
सी० पी० के दरम्यान।
बतलाओ तुम हे सखी
करके मन में ध्यान।

५३९—प्रथम तृतीय है काम का बोधक,
प्रथम द्वितीय से पक्षी।
द्वितीय तृतीय से आप के मुझको
तृतीय द्वितीय से लगती।
बतलाओ वह कौन वस्तु, आप सबके काम।
यदि होवे न जगत में हो न किसी का काम।

५४०—इस नाशवान संसार में मुख्य क्या है?

५४१—सेंदुर क्यों न मला विदेशी वस्तुएँ क्यों नहीं बिकतीं।

५४२—एक पेड़ से गिरता फल। जो देखे हो आप चपल।
जो खाय वह आय न फल। कोई दूसर खाय वह फल।

५४३—पत्तों में कलम धन क्या है?

६७४—एक घर में दो सास और दो बहुएँ रहती थीं ६) रुपया बाँटो प्रत्येक को क्या मिला ?

६७५—कहो वस्तु वह कौन है काटे में बढ़ जाय।

६७६—सिर पर बैठी हैं दो रानी। आते जाते होय गलानी ॥
इनके बिना है जग अँधियारा। बतलाओ या कसो किनारा ॥

६७७—मुँह के पैने तनके कोमल,
चाल चलें जैसे तुर्की घोड़ा।
कहो पहेली क्या है खुशीसे,
या कह दो हम सब कुछ छोड़ा ॥

६७८—उपजा जल एक वृक्ष है जिसकी डाल अनेक।
उस वृक्ष की ठन्डी छाया पर बैठ न सकते एक ॥

६७९—चार पाव की एक नार हूँ न हथनी न घोड़ी।
निश वासर मे पड़ी रहती हूँ कभी साँस न छोड़ी ॥
निशा होत मुझ पर चढ़ जाते बड़े प्रेम से प्रीतम।
सर्व रात्रि में सुख पहुँचाऊँ भोर होत जाते प्रीतम ॥

६८०—उसके सिर पर हरी मोरछल, वह होवे गज दन्त।
खाने की वह वस्तु है, बतलाओ तुम कन्त ॥

६८१—एक नर से उप-ी नारी। भीतर गोरी ऊपर कारी ॥
खाने की वह वस्तु है करे देव से प्यार।
कहो पहेली सोच समझकर नहिं पी होगा ख्वार ॥

६८२—आठ पंखुरी का फूल इक, सिर पर रक्खा रहता है।
जाड़े में वह काम न आवे, योंही रक्खा रहता है ॥

६८३—सारी जाली जल गई, जला न कोई धागा।
घर का मालिक फँस गया, घर खिड़की से भागा ॥

६८४—एक परदेसी घर पर आया, स्त्रियों ने उससे परदा किया

इसलिये उनके पतियों ने उसे बाँध कर लटका दिया जिससे पंखा हो गया।

१८५—दो नारियों का एकही पेट, कभी न हुई पुरुष से भेंट। उनने एक अचम्भा किया दोनों ने मिल बच्चा दिया॥

१८६—नारी नर के कंधे चढ़ के जहाँ तहाँ फिरती रहती है। कानों में है डोरी डाले चलने में चमकाती है॥

१८७—सामने आते ही कर दे घा। न मरता वह न घायल हो॥

१८८—सोना सोना कहत सब पर वह सोना नाहिं। पीत वर्ण बहुमूल्य है इज्जत है जग माहिं॥

१८९—आधा शंकर नाम वह आधा गणिका नाहिं। सम्पूर्ण गणितज्ञ एक सोच समझ कहो काहि॥

१९०—तीन पग हम भेजकर, विनय करी त्रिपुरारि। सखी हमको दीजिये मोहे मद कामारि॥

१९१—एक ऐसी संख्या बताओ कि जिसमें २ का भाग करें तो १ तीन का भाग करें तो २ चार का भाग करें तो ३ पाँच का भाग करें तो ४ छै का भाग करें तो ५ और सात का भाग करें तो कुछ न बचे।

१९२—के ऐसे चार टुकड़े करो कि जो एक दूसरे से दूना हो।

१९३—एक घर में इतने आदमी और इतने पलँग थे कि एक पलँग पर यदि एक एक आदमी सोता था तो एक पलँग और चाहिये यदि एक पलँग पर दो-दो आदमी सोते थे तो दो पलँग बचते थे तो बताओ कितने आदमी और कितने पलँग थे।

१९४—मैंने ४८ आम एक पैसे के ४ आम के हिसाब से मोल लिए, और ५० आम १ पैसे के ५ आम के हिसाब

से मोल लिये, दोनों को मिलाकर २ पैसे के ९ के हिसाब से बेच दिए तो बताओ क्या लाभ हानि हुई।

६९५—मैंने ५) में गाय, ३॥) में बकरी ९) रु० में बकरी का बच्चा और ॥) में तीतर खरीदा इस तरह २७) रु० में २७ नग लिये तो बताओ कौन कितने खरीदे।

६९६—एक लड़के के पास कुछ रुपये थे, उसके मित्र ने रुपया माँगे उसने कहा यदि ईश्वर की कृपा से रुपये दूना हो जायँ तो १६) रु० दे दूँ। प्रार्थना करने पर रुपया दूने हो गये। उसने १६) रु० मित्र को दे दिये। दूसरे दिन दूसरे मित्र ने माँगे, उसने फिर दूने होने को प्रार्थना की और रुपया दूने हो गये। उसने फिर १६) दे दिये। तीसरे दिन तीसरा मित्र आया उस दिन भी प्रार्थना करने पर रुपया दूने हो गए, उसने १६) रु० फिर दे दिए। अब उसके पास कुछ न बचा तो बताओ उसके पास पहिले कितने रुपया थे।

६९७—एक आदमी के ६ लड़के थे उन्हें वह अपना रक्खा हुआ गेहूँ बाँटना चाहता था। उसके पास सात सात मन गेहूँ के ७ बोरे, छै छै मन के ६ बोरे, पाँच-पाँच मन के ५ बोरे, चार चार मन के ४ बोरे, तीन तीन मनके तीन बोरे, दो दो मन के २ बोरे, और एक मन का एक बोरा था। वह अपने लड़कों को इस तरह बाँटना चाहता है कि प्रत्येक को बोरों की संख्या बराबर मिले और वजन भी बराबर रहे।

६९८—बतलाओ ५ में से ५ निकालने से ५ बचता है।

६९९—हरी टोपी लाल बदन, कौन देश से आयो सजन।

७००—डाढ़ी वाला छोकरा, हाटों हाट बिकाय।
जो कोई होवे पंडित, इसका अर्थ बताय॥

७०१—श्वेत बरन एक नारी देखा पूर्ण चन्द्र सी गोल।
प्राणों की वह रक्षक होती रस बिन कड़े न बोल॥
अग्नि कुण्ड स्नान किए से, बढ़से उसका नाम।
सखी पहेली तुम बतलाओ, मत बतलाओ नाम॥

७०२—नभ में किसने बीजा बोया जिससे उगे फूल।
डाल पात फल हैं कछु नाहीं केवल फूलहि फूल॥

७०३—सुबह शाम तो सब कोई पूछे फिर न पूछे कोई।
यदि शहरों में वह न होवे मर जावे सब कोई॥

७०४—एक नार है लम्बी-लम्बी और गोल है गात।
खड़ी-खड़ी वह जगती रहती कोई न पूछे बात॥

७०५—पान सड़े घोड़ा अड़े विद्या बीसर जाय।
बहुर पर बाटी जले, ऐसा कौन उपाय॥

७०६—अग्नि कुण्ड में घर किया जल में किया निवास।
परखे-परखे जात है पी अपने के पास॥

७०७—सोने की वह नार कहावे शाम होत ही काम में आवे॥

७०८—पहिले मैं पैदा हुआ फिर पीछे से माय।
गड़बड़ में भैया हुआ उसके पीछे बाप॥

७०९—पहिले बड़ी जमाय के पीछे दुहते गाय।
बछा वाके पेट में माखन हाट बिकाय॥

७१०—दुबला पतला पक्षी एक लम्बा बदन और पग है एक।
बीस पचीस मिल मिल के बसते जीव नहीं पर उड़कर डसते॥

७११—उठने से वह राग सुनावे बैठे से मालूम हो जावे।
जावे तो फिर कुछ न सुहावे आवे तो फिर चुप हो जावे॥

७१२—बिना परों का पक्षी देखा बड़े बहुत पड़ भी है लेखा।
साथ में करे जमीं में वास साथ में उड़ जाता आकाश॥

७१३—बिन आजा का देखा पोता, पड़ा दिवाल पर है वह रोता ॥

७१४—देश विदेश फिरे वह नारी, जिन पाई वो चीरी फाड़ी।
देखो उसका उल्टा हाल, गूँगी होकर बोले बाल ॥

७१५—न काती न औटी उसकी, न बीनी करघा में डार।
छः महीना ओढ़ के, रख दी दूर उतार ॥

७१६—छै चरण त्रिनेत्र है, द्विमुख जिह्वा एक।
त्रिया चले न सामने चातुर करो विवेक ॥

७१७—वृक्ष लगे हैं महल बने हैं, पर ईंट है उसमें नाहीं।
ताल तलैया हौज भरे हैं पर उनमें पानी नाहीं ॥

७१८—इक उपजत है खेत में, जिसको सब कोई खाय।
इक सोहे गोरे गात पर, बताओ वह काय ॥

७१९—खड़ी रहत बैठे नहीं, चलै पर हटे न नेक।
निशि दिन वह चलती रहे थके न फिर भी नेक ॥

७२०—घूम घुमारा लहँगा पहिने, एक पाँव से रहे खड़ी।
बहुत हाथ हैं उस नारीके, सुखदायक है बहुत बड़ी ॥

७२१—मनुप उसको खात हैं, पशु नहिं खात महान।
किस्में उसकी बहुत हैं, आदर करे जहान ॥

७२२—घर से चली चमकती नार सबसे करे टेढ़ा व्यवहार ॥
घर में भी रहती है टेढी। गुफा भी उसकी टेढ़ी मेढ़ी ॥

७२३—हरी, हरी सब कोई कहे, हरी हरी दिखलात।
यदि लग जावे हाथ में, खून करें करि घात ॥

७२४—नहीं देह, नहिं गेह है, नहिं धरती आकाश।
को नहि देखत ताहिको, खात मनुजको मांस ॥

७२५—बिना शीश की नार एक, दोय भुजा हैं उसके।
जब आये तब बोली बोले, अरु एक को लेकर खिसके

७२६—सब नगर में डोरे हैं जिन्हें पढ़े सब कोय।
अनपढ़ भी रखते सदा मूरख पंडित होय॥

७२७—नहीं छुरी नहिं चोंच है नहीं धनुष न तीर।
जाके लागत भूमि ढहें, घायल सकल शरीर॥

७२८—बोल लगे तलवार लगे चाहे गोली।
जो होते सच्चे शूर पाय उन्हें बोली॥

७२९—एक पैसे में १०० बेर, एक पैसे में ५५ आँवले और एक पैसे में ५ बीड़ी मिलती है बताओ एकही पैसे में तीनों चीजें बराबर—बराबर कितनी आवेंगी।

७३०—टक टक यह करती रहे टक टक बोले बैन।
निशिदिन यह चलती रहे, बिना चले नहिं चैन॥

७३१—छोकरा के पेट में से छोकरा कढ़ायो।
कहो यह अचर कैसा भयो॥

७३२—राजा नरका मांहि से मुक्ता चुगती अन्त।
ता पीछे काम्या करी सदा धारियो सन्त॥

७३३—किसकी आँखें सदा खुली रहती हैं।

७३४—कौन राज उत्तम रीति से चलता है?

७३५—एक मनुष्य के पास १ बाघ १ गाय और एक गट्ठा घास का है उसे वह नदी के पार करना चाहता है। नदी छोटी होने के कारण एक ही वस्तु एक बार में जा सकती है बताओ किस तरह ले जायँ। क्योंकि बाघ और गाय छोड़ते हैं तो बाघ गाय को खा लेता है और यदि गाय और घास छोड़ते हैं तो गाय घास को खा लेती है।

७३६—मनुष्य का कौन सा गुण धारण करने से झंझट में नहीं फँसना पड़ता।

७३७—नगरी में हैं पशु बत्तीस, पुरुष में रहते उसमें बीस॥
जब चाहे तब लड़ पड़ते हैं, घाव लगे न वे कटते हैं॥

७३८—जीन लगाम न रहता तंग, सवार अरु घोड़ा एक ही रंग॥

७३९—ऐसे चार बाँट बनाओ जिससे ४० सेर तक तौल सकें।

७४०—एक दुशाले की कीमत १९) कोट की कीमत ५) धोती की कीमत ३) टोपी की कीमत ॥) और रुमाल की कीमत ।) है तो बताओ १००) रुपये में १०० वस्तुएँ कौन कितनी आवेंगी।

७४१—ब्राह्मणों को कैसा होना चाहिए।

७४२—तुम्हारे सिर के ऊपर और चोटी के नीचे क्या है?

७४३—स्त्रियाँ पुरुषों से परदा क्यों करती हैं?

७४४—स्त्री वेश्याएँ क्यों होती हैं?

७४५—सारी रैन छतियन पर राखा, उससे किया विहार।
कहो सखी क्या साजन है वह, नहीं सखी वह हार॥

७४६—देखत के हैं वे उजियारे, लगते मन को हैं अति प्यारे।
सारी रैन मैं लेकर सोती, क्यों सखि साजन ना सखि मोती।

७४७—आँचल से लपटा कर रखती,
है वह मुझको प्राणों प्यारा।
शुभ्र वदन और गोल मोल वह,
कभी न हो नयनों से न्यारा॥
यदि विछोह कर देता कोई,
पड़ी पड़ी मैं रोती हूँ।
जब मैं पा जाती हूँ उसको,
चोली में रख लेती हूँ॥

७५७—कभी साथ छोड़े नहीं, है यह मेरी जान।
इक पल को भी छोड़ दे, निकलें मेरे प्राण॥

७५८—लम्बी—लम्बी डगाँ से आवे,
सारे दिलकी हवस बुझावे।
उठके चले तो पकड़े खूँट,
क्या सखि साजन ना सखि 'ऊंट'॥

७५९—जब मैं हिलती वह भी हिलता,
कर देता मुझको आनन्द।
मुझे याद आती है उसकी,
पवन चले जब जरा भी मन्द।
सीधा नहिं वह है अति बंका,
सजन नहीं सखि वह है 'पखा'।

७६०—एक पुरुष है अति चमकीला, अरु है बहुत हँसोड़ा।
जैसी बनकर तुम जाओगी, वैसहि बने निगोड़ा॥
जैसहि मुखको तुम बदलोगी, वैसहि बदलत जावे।
कहो सीख तुम सोच समझ कर, क्याहै नाम कहावे।

७६१—नारी से नर बनत है, फल है एक महान।
ऊपर भीतर फेंककर, खाता सकल जहान॥

७६२—देखत का तो अति उज्जवल है, पर है अति पाखंडी।
एक टाँग से करत ध्यान है, जैसे बाबा दंडी॥
समय आय पर नहीं चूकता, अपनी करनी करता है।
बतलाओ अब उस सज्जन को, जो पाखंड को रखता है॥

७६३—इक नारी के मुँह हैं सात, उसकी है न जात न पाँत।
आधा मानस लीले रहे, बूझ पहेली खुसरो कहे॥

७६४—तीन अक्षर की एक है नार, जिसका करते शिक्षित प्यार।
मध्य का अक्षर देव निकाल, दात शब्द बनता फिलहाल॥

तीसर-दूसर ऐंच मिलाय रोटी ऊपर खेत बनाय।
दूजे पहिले यदि मिल जाते, सभा बाधा कर वे जाते॥
पहिला दूजे यदि संग रहते सब पर छाया करते फिरते।
तीनों अक्षर यदि संग रहते बिन बोले सब कुछ लिख देते।
कहो सखी वह कौन है ऐसी गुण की खान।
सभा मध्य में बैठ कर सबका करे बखान॥

७१५—अचरज यह इक मैंने देखा मरा हुआ बालक है पेखा।
मुँह नहिं उसके फिर भी खाता मारेसे वह खूब चिल्लाता॥
कहो सखी वह कौन है रहे सभा के बीच।
प्यारा है गणिकाजन को लिया उन्हें वह जीत॥

७१६—पहिले छाती पैदा हो गई फिर अम्मा या बच्चा।
उस बच्चे के दाँत बहुत हैं मुंडा खाओ मत कच्चा॥

७१७—बकरी जो कुछ खात है खाल काढ़ हम खाँय।
कहो सखी वह कौन अवस्था मानुस पशु दरसाँय॥

७१८—जीव रहत है इक शरीर में जाके चाम न माँस।
हाड़ हाड़ में छेद है पर जीव करत है बास॥

७१९—जिस्म है जिसका दुबला पतला पाँव ना जिसका रूप।
माशूक की वह वस्तु कहूँ कहूँ करे अनूप॥

७२०—एक नार है अति अलबेली।
उसकी ऐसी अजब पहेली॥
प्रकाश में रहती पी के संग।
अँधियार में बसे न संग॥
कहो सखी वह कौन नार है जिसका उसका साथ।
प्रीतम के संग चलती फिरती छूनेसे रहे सदाय॥

७२१—इच्छा से जन्म है पाता धूप लगे लहराता।
पवन लगे से मुरझा जाता शीत लगे मर जाता॥

७७२—छत से नीचे लटका रहता, बच्चों को अति प्यारा है।
सावन सखियाँ प्यार करत हैं, उनका बड़ा दुलारा है॥

७७३—सब घर एक पहरुआ रहता।
आते जाते सोरह गाता॥
यह गाना जाना कर दे बन्द।
तो तुम भी हो जाय नजर बन्द॥

७७४—चार दिशा की सोलह नारी। तीन पुरुष के हाथ बिकानी॥
मरना जीना उनके हाथ। कभी न सोई पी के साथ॥

७७५—एक नारी सभा में आई। देखो उसकी हाथ सफाई॥
छेद में छेद उसका ध्यान। हर पद पर हैं उसके कान॥

७७६—एक पाँव की नारी देखी, कलीदार लहँगा पहिने।
आठ हाथ हैं उस नारी के, वर्षा, ग्रीष्म उसकी बहिने॥

७७७—देखा मैंने ऐसा घर, जिसमें रहें चवालिस नर।
चवालिस नरकी चार नार, स्वामी केनक सब भरतार॥
इनके चार पे रखने हैं, उन पर चढ़ते फिरते हैं॥

७७८—अलग अलग थे नर कहलाते, गाँठ लगा के नारी।
प्यार करें जो उस नारी से, है उनकी बलिहारी॥
बुद्धि प्रखर कर देती है वह, जाहिल पन मिट जाता।
करो प्यार तुम सब मिल, कहो कौन वह माता॥

७७९—सिंहासन पर बैठी रानी, आये वहाँ पर पंडित ज्ञानी।
जब वे अपनी बात बतावें कपट हृदय का दूर भगावें॥

७८०—पाँच धातु का है इक मन्दिर।
इक नारी एक पुरुष है अन्दर॥
अपने करसे काम करे। जैसा करे वह वैसा भरे॥

७८१—बोतल में वह अधिक रसीली। नैनों में वह रंग रँगीली।
प्यार जो उससे करते हैं। मारे—मारे फिरते हैं।

७८२—रात होते ही मैं व्याकुल होती हूँ उसके लिए।
यदि वह नहीं आता तो रोकर फिरती हूँ दिए॥

७८३—एक मारे का बना है मन्दिर।
रहता है पुरुष उसके अन्दर॥
पर भीतर के बोझ के आप।
हरि से मिले छीन होय आप॥

७८४—बिना वृक्ष एक डाल पात के फलों की वर्षा होती है।
जिस ज़मीन पर आकर पड़ते वह गीली हो जाती है॥

७८५—अरे भ्रमर बावरे तू क्यों रोय गँवार।
आँखें तो हैं रो रही पी को करत प्यार॥

७८६—दौड़-दौड़ कर मैंने देखा दुनिया है बे आकल।
हमने ऐसा मेवा देखा है गुठली न बक्कल॥

७८७—दाँत रँगीली अति चमकीली नाम धरे मतवाली।
जिसको प्यार करे यह नारी करदे उसकी ख्वारी॥

७८८—बादल में यह कड़ी पहेली। दिल में अपने सोच सहेली॥
सोच सोच बतलाते हैं। जा बुद्धि काम में लाते हैं॥

७८९—अलग-अलग हैं घर कहलाते गाँठ लगाये नारी।
कागज़ स्याही रहती उसमें लड़की को अति प्यारी॥

७९०—एक नाम के दो कहलाए। एक को खाये एक को खावे॥

७९१—हरी डंडी अरु पीला दाना। बच पड़े तो माँग कर लाना॥

७९२—किसी फूल का अर्क है फायदा का सामान।
पीते-पीते मर हुआ आगे चतुर सुजान॥

७९३—एक जात ऐसी कहलावे, बिन नुकते के नाम बतावे।
आते को वह भर-भर देवे, जातेकी वह खबर न लेवे॥

७९४—भरी भगाई रात दिन रखते हैं दूकान।
जो नग इसको चाहते उनकी करती हानि॥
अकल हवास दाम को खोवे। चातुर हो मूरख सा सोवे॥

७९५—एक नार मजलिस में आवे। रंग विरंगी रूप दिखावे॥
तीन पुरुष सङ्ग निशिदिन रहे। मारे पीटे पर कुछ न कहे॥

७९६—एक महल में दो हैं राजा। फौज सहित इन्द्र सा साजा॥
अपनी बारी आप दिया। फौज का शीश कटाय दिया॥

७९७—आग लगे और जल में रहे। आदर मान सबका वह कहे॥
तीन चीज़ का है वह खाना, एक न होय पड़े शरमाना॥

७९८—एक नार वो रंगी चंगी वह भी नार कहाती।
दिन को कपड़े पहिने रहती रात को नंगी हो जाती॥

७९९—गज भर कपड़ा बारह पाट, बन्ध लगे हैं तीन सौ साठ॥

८००—एक नारी के सिर पर नार, पिया के लगन खड़ी लाचार।
सीस धुनेपर चले न जोर, जल-जल कर वह करती भोर॥

८०१—एक रूप मैं अद्भुत देखा, डाल बहुत दिखलाय।
पत्ता उस पर एक है, हाथ छुए कुम्हलाय॥
सुन्दर बाँका छोह है, सुन्दर वाको रूप।
खुला रहे तो न कुम्हलावे ज्यों-ज्यों लागे धूप॥

८०२—एक गुजरिया सिर पर मटकी।
मोहन से बँसुरिया अटकी॥
सिर पर आग विरह से जारी।
खड़ी [illegible] में देत पुकारी॥

८०३—मैं नीचे मेरा पिया आकाश कैसे जाऊँ पिया के पास।
हरी लोग पकड़ रिझावें पी चाहे तो आपी आवे॥

८०४—एक बीज मोती के समान पिया ने ही मुझको दान।
पाई न पीई गल गल गई, स्वर्ग की मुझको बख्शन भई॥

८०५—अहो आदमी पिया प्यारी एक पहेली बता हमारी।
नार नहीं पर नार कहावे अपने नाम पर नार बुझावे॥

८०६—मानुष सी मैं मोती बोई, हूँ मैं चतुर सुजान।
मैं-ना रंगी पीव संग रंगी रंगीली जान॥

८०७—एक नाम और एक ही दाम जग में है और सबके पास।

८०८—एक थाल मोतिन से भरा सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे पर उससे मोती एक न गिरे।

८०९—एक नारी का मैला रंग रहे सदा वह पी के संग।
उजियारे में साथ दिखाय अँधियारे में छोड़ भगाय॥

८१०—एक नार है वह बहुरंगी, घर से निकले बाहर नंगी।
उस नारी का यही सिंगार, मधुमी पहिने मुँह पर वार॥

८११—छोटा सा तो मुँह है उसका, उदर उसका मोटा है।
केवल उदर नहीं आत है और आत वह रागन है।
एक खेत की रानी है वह अपने पिय की प्यारी है।
कहो सखी वह कौन वस्तु है करे चतुर जो रवानी है॥

८१२—लाल फूल नहीं कली नस-नस में कीड़ा।
चातुर हो सो पावे उसे के जड़ ही में पाया॥

८१३—घर के अन्दर घर एक माता एक नर।
नर की पत्नियाँ कारी माता बेचारी सारी॥

८१४—सखी मैं तुमसे पूछूँ बात अन्दर दिन और बाहर रात॥

८१५—आस पास मोती की लड़ी, बीच में कोयल काली खड़ी।
देखो लोगों उसका हिया, अपना जोबन औरों को दिया॥

८१६—श्याम वरण पर हर नहीं, जटा नहीं पर ईश।
मैं तोसों पूछूँ सखी, अङ्ग लपेटे कीच॥

८१७—श्याम वरण एक नार कहाय।
दशन पुरुष की प्यारी आय॥
जो कोई उसको मुँह पर लाय।
रंग वह अपना जभी दिखाय॥

८१८—नीचे नीचे श्याम वरण है, ऊपर आम दिखावे।
जब लालों को लीला पावे, फाग काम वह आवे॥

८१९—काला रंग मुसाहब काले, लम्बे लम्बे टाँग निकाले।
कभी चबावे एक नादान, ना गरदन हाथ ना शान॥

८२०—ऊदे-ऊदे बैंगना पिटारी भरे जाँय।
राजा माँगे मोल को तो नाहीं दिए जाँय॥

८२१—पानी की क्रिया उसे अन्न ही अन्न चबाय।
वह चिड़िया है कौन सी बिन पानी रह जाय॥

८२२—मूली का सा कतरा, दही कैसा भेष।
कहो सखी वह कौन है, नहिं चलो हमारे देश॥

८२३—भाँति भाँति की देखी नारी, नीर भरी हैं गोरी कारी।
अधर बसे और जग को धोवें, रक्षा करें जब नीर बहावें॥

८२४—बारह मास का वह कहलावे।
सबके मन को वह अति भावे॥
तोल ताल के कीन्हा पूरा।
उसके बिन मानुष है कूरा॥

८८५—एक चीज है मन को प्यारी बुद्धि देती सबको न्यारी।
रंग रंग के भाव बताये चुपके चुपके सैन बताये॥

८८६—चार घड़े चार घड़े चारों के मुँह में दो दो बड़े।

८८७—बड़े सुन्दर सुन्दर पत्ते
और तुम बिन रहा न जाय।
जब हम तुम मिल बसत थे
वह दिन गये पलाय॥

८८८—प्रीतम आया शिकार को लायो ताजा मांस।
आपके ऐसा लाइयो हाथे छत्तिस दांत॥

८८९—एक नार देखन को आवे जो देखे सो आँख लगावे॥

८९०—सोने की डिबिया अमृत भरी।
कसौटी की जिस पर ढकनी धरी॥

८९१—एक त्रिया सुखदाया ताल तिल न डूबे ताई।
हाथी पीवें घोड़े पीवें पीवें लोग लुगाई॥
पंख पखेरू एक न पीवें देखा यह चतुराई॥

८९२—नारी कमर में नर किया नर है बड़ा अकेला।
कहो सखी वह सर देखें नर-नारी का मेला॥

८९३—एक राजा मनोखी रानी नीचे से वह पीये पानी॥

८९४—चार अक्षर का फल है एक जिसके नाम होंय अनेक।
पहिला दूजा हर कर देता पहिला चौथा जग 'रज' देता।
दूजा तीजा सब में 'रत' है चौथा दूजा 'नर' का घर है॥
मजलिस में फबता है बिपता में आता काम।
कहो सहेली सोचकर क्या है इसका नाम॥

८९५—चार अक्षर का फल है एक, जिसको खाते लोग अनेक।
प्रथम-द्वितीय पोथी का प्रेमी द्वितीय-चतुर्थ का हाथी मेमी॥

दूजा-चौथा 'जर' का घर है, फल नहो वह फल ववर है।
ग्रीष्म ऋतुमें होत है अति सुन्दर दिखलाय।
कहो सखी वह कौन फल, जो खाते अधिक मिठाय॥

८३६—चार अक्षर का तीरथ एक, छुआ छूत का नहो विवेक।
पहिला-दूजा संसार वनाता, पहिला 'चौथा' जस है पाता॥
दूजा पहिला लक्ष्मी वाहन, दूजा चौथा चक्कर खावन॥
पूरव भारत में वसे, हिन्दू तीरथ राज।
जो दरशन कर लेत हैं, सफल होत हैं काज॥

८३७—कलियुग की यह काली माता, हवा से वातें करती।
आगी खाती पानी पीती, जहँ तहँ भगती रहती॥

८३८—सोने का सा रग है, पंखी की अनुहार।
विच्छू कैसा डंक है, कौन जीव है यार॥

८३९—शिव सुत माता नाम के अक्षर चार सुवेप।
युगुल मध्य को छाँड़ि के भेजा करो हमेश॥

८४०—तीन अक्षर का शब्द है, सुन लो मेरे कन्त।
हर घर में वह रहत है, खोजो कहीं न अन्त॥
महिला यदि पा जायँ तो, कर लें रूप दुगन्त।
विधवा उससे प्रेम कर कर लें दूजा कन्त॥
जल वनता है उसी शब्द से, काम-काज भी वनता है।
दृष्टि तेज कर देता है वह, प्रेम जो उससे करता है॥

८४१—फाटो पेट दरिद्री नाम उत्तम घर में वाको ठाम।
श्री को अनुज विष्णु को सारो,पडित हो तो अर्थ विचारो॥

८४२—हरा भरा इक सुन्दर ज्वान, नर नारी का करता मान।
भोजन पीछे आता काम। करे प्रेम तो रक्खे नाम॥

८४३—प्राण संजीवन नाम है मेरा। सवके घरमें करूँ वसेरा

रहूँ सदा मैं तेरे पास। भीतर बाहर बारह मास।
जब तुम रहो पिया के संग। तब भी रहूँ मैं उनके संग।

८४४—चार मार्ग चारो रंग। मिल जावें तो एकही रंग।

८४५—पापी जिससे बहुत डरते हैं। धर्मी उससे प्रेम करते हैं।
सुख करते ही वह याद आवे। संग छोड़ वह कभी न भागे।
सब जीवों से करती प्रेम। पैसा उसका सदा से नेम।
कहो सखी वह कौन नार है। पति मरण होते छिनाल है।

८४६—शीश जटा पोथी गहे खेत वसन मन माहिं।
जोगी-जंगम है नहीं, ब्राह्मण पंडित नाहिं॥

८४७—वृक्षों पर है वास हमारा पर पक्षी नहिं कह देना।
कलकल चीर सभी हैं मेरे, ऋषि-मुनि समझ नहीं लेना।
यद्यपि तीन नेत्र हैं मेरे, शिवशंकर मत कह देना।
ऊपर पूर्ण है जल से मेरा घर गगरी न समझ लेना।
सुर नर मुझसे प्रेम करत हैं अल्प मूल्य में मिलता है।
कहो सखी क्या नाम है मेरा पर दिल माया आता है।

८४८—गाँठ गठीला अति गर्वीला खाने में है अधिक रसीला।

८४९—'ह' हरफ को दूर भगाते 'हंडी' ही रहजाती है।
कागज की यह केवल माया काम नहीं कुछ आती है।

८५०—पुष्प को जो उलटा कर दूधे मोती कैसा हो आकार।
महिलाओं का कवच बना हो कह दो तुम क्या है करतार।

८५१—मकान तंग है उसका नाम वृक्षों के यह आता काम।
दीवान के भी काम में आता जो देने यह नाक बहाता।

८५२—एक नारी का सुन्दर रूप गाल गुलाबी रूप स्वरूप।
वर्षाऋतु में हो मतवाली फिरती है वह मारी-मारी।

८५३—काला-रूप और पीला रंग मिलते हैं तो हो एक रंग।

८५४—तीन सींग की गाय इक देखी, है श्वेत।
पानी में वह वास करत है, धोय न जाता खेत॥

८५५—एक वृक्ष का सार है, श्याम वही है रंग।
सब जन उसको खात हैं, चढा देत है रंग॥

८५६—देखत में वह हरी हरी है, गुण है उसका लाल।
प्यारी है वह अबलाओं को, कर दे उन्हें निहाल॥

८५७—बारहों महीना चलत रहत है, वर्षा में अधिकारी।
घर उसका गन्दा हो जावे, जो न करे मिताई॥

८५८—श्याम, श्वेत और रंग बिरंगी होती हैं कुछ नार।
कई पुरुषों से मिलती एक दम कुलागार॥

८५९—काला लड़का चून चपेटा चून पियासा चेला रे।
जब मारूँ तब गिरगिट गन्ना बूझ पहेला मेरा रे॥

८६०—श्वेत वर्ण वह वस्तु है, देवे वास सुवास।
पूजा के भी काम की लेन पटाई खास॥

८६१—लक्ष्मीपति के कर बसे, पाँच अक्षर के बीच।
पहलो अक्षर छोड़कर सो मोहिं दीजे मीत॥

८६२—आकाश में उड़ता एक पखेरू झुक झुक उड़ता जाता है।
बालक उससे प्रेम करत हैं पानी वह नहिं पीता है॥

८६३—हरदम चलती रहती हैं। तिल भर नाहीं हटती है।

८६४—पीत वर्ण है अति अमूल्य है, जग को है अति प्यारा।
भूषण भी अति सुन्दर बनते हैं जग से वह न्यारा॥

८६५—तू मा तू मा कहता है बालक निपट अजान।
मा माता वह है नहीं वह फल एक सुजान॥
गरीबी का वह पात्र है योगियों का आराम।
शिव को प्यारा बहुत है कहो सखी क्या नाम॥

८६६—आधा काशी में बसे आधा जमजम माहिं।
पूरा बनियन घर रहे चार महर के माहिं॥

८६८—बच्चा सूरज का जो कुसमन चोरों को अति प्यारा है।
स्वर्ग जगत में पैदा होता दुनिया से वह न्यारा है॥

८६९—२४० के ऐसे चार टुकड़े बतायो जो एक दूसरे से दूने हों।

८६९—५) रु० में एक पुस्तक १) में एक फाउन्टेनपेन और ।-) में एक स्लेट मिलती है तो २) रुपया में २० वस्तुयें लाओ।

८७०—नारी क्या है लक्ष्मी रूप गुण हैं उसमें बहुत अनूप।
घर घर में यह वास करत है शिक्षित उससे प्रेम करत हैं॥
द्रव्य न होवे जिनके पास हो जावे वे उसके दास॥
तब होगा लक्ष्मी का ढेर, कहो नाम अब करो न देर॥

८७१—१२०० के ऐसे चार टुकड़े करो जो एक दूसरे से दूने हों।

८७२—२०० घ र ८ खूँटों में इस बाँधो कि वे इस संख्या में बँधे जिसमें २ का भाग पूरा पूरा जा सके याने उन्हीं संख्या में न बाँधे जावें बताओ कितने-कितने घोड़े बाँधे जावेंगे।

८७३—यदि एक थान जो २१ गज का है उसके २१ टुकड़े करना है तो उसको कितने बार फाड़ना पड़ेगा॥

८७४—कुछ मनुष्यों ने चन्दा करके ९ रुपया दिए। जितने चन्दा देने वाले थे उतने ही आने चन्दे में दिए तो बताओ कितने आदमी थे॥

८७५—एक मनुष्य को १॥) रु० एक स्त्री को १॥) और एक लड़के को ॥) दिए जाते हैं तो ५०) रु० ५० व्यक्तियों में बाँटो।

८७६—एक व्यापारी ने ५ घोड़ा २८) में दूसरे ने ४ घोड़ा १०००) रु० में और तीसरे ने एक घोड़ा १००) में खरीदा।

अब बताओ कितने कितने में अपने घोड़े बेचें कि सबको बराबर नफा हो।

८७७—२४ आम एक पैसे का एक और २४ आम एक पैसे के दो अलग अलग बेचने से छै आने और तीन आने इस तरह ४८ आने के नौ आने आते हैं और यदि २४ x २४ = ४८ आम इकट्ठे करके दो पैसे के तीन आम बेंचते हैं तो कुल ॥) पैसे आते हैं इसका कारण क्या है।

८७८—पाँच लड़कों की उमर का योग ७५ वर्ष है प्रत्येक की अवस्था में ३ वर्ष का अन्तर है तो बताओ हरेक की अवस्था क्या है।

८७९—अब मेरी अवस्था श्याम से २॥ गुनी है और १० वर्ष पहिले ५ गुनी थी तो बताओ इस समय हम दोनों की अस्था क्या है।

८८०—१०० के ऐसे चार खंड करो जिसके पहिले खंड में ४ जोड़ें, दूसरे में ४ घटावें तीसरे में ४ का गुणा करें चौथे में ४ का भाग दें तो योग फल शेष, गुणनफल और भजनफल सब बराबर आवे।

८८१—क, ख, ग, और घ इन चारों के पास एक घोड़ा है इन्हें छै मील रास्ता तय करना है और हरेक चाहता है कि हम दो मील घोड़े पर चढ़ें, भला बताओ चार आदमी छै मील रास्ता तय करने में किस तरह दो दो मील घोड़े पर चढ़ सकेंगे।

८८२—६ तोता ४ मैना कीमत ३२) है तो ८ तोता तथा ३ मैना की कीमत ३१) है तो बताओ तोता और मैना की अलग अलग कीमत क्या होगी।

८८३—मनुष्य में सबसे बड़ी चीज क्या है?

८८४—सत्य गवाही कौन देता है ।

८८५—संसार में बादशाह कौन है ?

८८६—कभी-कभी बड़े-बड़े बलवान निर्बल से क्यों डर जाते हैं ?

८८७—राज्य क्यों नष्ट हो जाता है ।

८८८—सदा जो चितवत रहता है उसका नाम बतलाओ तुम ।

८८९—जिसकी वस्तु तुम्हारी सबकी तुम्हारे काम ना आती है।
अन्य जनों के काम वह आती कहते क्यों शर्माती है ॥

८९०—इह लोक में सुख जो भोगे परलोक में दुःख [illegible] ।
कहो सखी यह कौन व्यक्ति है करके मन्थन अपना शास्त्र ॥

८९१—कहो सखी वह कौन शस्त्र है तुम्हारे पास सदा रहता।
कारीगर का गढ़ा नहीं वह जन्म-जन्म से बढ़ता रहता ॥

८९२—गया हुआ वापिस नहिं आता चाहे करो कोटि उपाय।
धन-लक्ष्मी उसकी ही दासी नाम सखी तुम देव बताय ॥

८९३—किसके फल बहुत मीठे होते हैं ।

८९४—देखी है एक सुन्दर नारी । बदन लाल और मुँह की कारी।

८९५—पहिले चमके फिर चिल्लाय । ऐसी नारी अजब दिखाये ॥

८९६—सोन की यह नारि है जरी एक दिन माँय ।
रात होत वह पड़त जब बढ़त उस पर आय ॥

८९७—हाथ में उसको लेते हैं । उसको देखा करते हैं ॥

८९८—आदमी बीमार क्यों पड़ा ? साग अच्छा क्यों न बना ?

८९९—जग में सबसे प्यारा कौन । बतलाओ या रह जाओ मौन ॥

९००—पानी नहिं बरसा है क्यों ? तुम्हारा तकिया मैला क्यों ?

९०१—चिता से बढ़कर कौन है कहो मोह समुझाय ।
अग्नि बिना जलता रहे दिवस पहर माँय ॥

९०२—मूरख कैसे जानोगे। कैसे तुम पहचानोगे॥

९०३—संसार में सबसे नीच कर्म क्या है?

९०४—यदि तुम्हें कोई एक वरदान देने को कहे तो ईश्वर भजन के बाद तुम क्या मॉगोगे?

९०५—चार अक्षर का शब्द हूँ 'बनारस' नाम सुजान।
क्या क्या बनता मोहि से बतलाओ कर ध्यान॥

९०६—सबसे निकृष्ट दशा कौन है?

९०७—अति द्रुत ग्रामी कौन है पवन वेग का बाप।
छोड़ो अपने गॉव या, बतला दो कर भॉप॥

९०८—अकेला कौन चक्कर खाता है?

९०९—यदि विद्वान हो तो सबसे बढ़कर संसार में कौन मित्र है?

९१०—वह क्या है जिसके लिये दूसरों को मना करने के लिये तुम स्वय कह रहे हो।

९११—मैंने एक नौकर ८०) और एक घोड़ा पर रखा। नौकर १० दिन काम करके घोड़ा लेकर चला गया तो बताओ घोड़े की क्या कीमत होगी।

९१२—१२ में से १ निकाल दें तो क्या बचेगा?

९१३—भारत के नीचे लिखे शहरों को पूरा करो।
ब—र—। का—पू—। —ग—र। —ला—बा।
दे—रा—न। —हौ—। —द्रा—। ब—ई।

९१४—काला है, पर सर्प नहीं, डसता है पर दॉत नहीं।
बल देता पर देव नहीं, मर्द कहाता ऑत नहीं।

९१५—तेज हवा से है उड़ान, पर नहिं उसके पर।
हाथी से भी बहुत-अधिक, बल है उसके अन्दर॥
लगा रात दिन दौड़, नहीं थकती वह दम भर।

जा सकती है सभी कहीं यह भीतर बाहर ॥
घोड़े पर बैठे बिना यह चल सकती है निडर।
है महत्व तो भी इसे, उससे सारे नारि-नर ॥

२१६—जिसका शीश काट दें तो प्राण नहीं निकलता।
धड़ काट देने से भी वह कम ही रहता है।
पैर काटने से भी उसकी लम्बाई नहीं घटती।
तो बताओ यह क्या है ?

२१७—पीछे तो दीखे नहीं सबसे आगे आवे।
पड़े हर कहीं पर नहीं कभी पकड़ में आवे ॥

२१८—क्यों न आप ठण्डा जल पीते
चुप क्यों हो क्यों करते लाज ?

२१९—भाई क्यों न आपने पिया। रहे मूर्ख ही कैसे आप ॥

२२०—नर करता तप कभी महान, नारी करती रहती स्नान।
मंगल दायक सखि अनमोल साथ साथ आ बोलें बात।

२२१—सास—जो जीते तो लाजती तू विधवा के साज।
बहू—आह ! पी लिया इसलिये हूँ मैं सधवा आज ॥

२२२—चार पगों से चले एक पग रखता भीतर।
आँख पाँच हैं मुख्य एक यह बसके सुन्दर ॥
बोझ उठाता कई मुखों से बहुत जोर कर।
रंग रंग के रूप बदलता बड़े मनोहर ॥
दुख देता, दुख दे कभी दौड़ लगाता भूमि पर।
बड़े सांस लेता हुआ ऐसा है क्या जानवर ?

२२३—जल में तैर सके, न डूबता किन्तु नहीं है वह जलचर।
नभ में उड़ता पंख पर रहता, पर न उसे कहते हैं पंख धर।
सदा हवा ही खाकर जीता किन्तु नहीं वह योगी नर।
पृथ्वी भी वह नहीं कहाता महा क्षमा का होकर घर।

९२४—आग खाय, पर नहीं चकोर, पीहूँ करे नहीं वह मोर।
गज वह नहीं मचाता शोर, सिंह नहीं पर रखता ज़ोर।

९२५—दस दिन चलै, एक दिन खावै, देवै ज्ञान और मन भावै।

९२६—सबसे बड़ा शस्त्र अभिराम, शीश कटा कर देता काम।

९२७—रंग बदलती भला अनेक, पर निज में गुण रखती एक।
अँगरेजों को डरवाती है, वृक्षों के ऊपर आती है।

९२८—नारी है वह, गाकर गान, रखती है सबका सम्मान।

९२९—अर्थ सोचिये देकर ध्यान, दो जीवों के वाहस कान।

९३०—पवन समुद्र बीच ते गिरता है, पर उसको कहते न विहंग।
रंग रंग का वह होता है, तरह तरह के रखता अंग।
चर्म और दो हड्डी तन में, पर वह माँस रुधिर से हीन।
प्रेस बन्द होंगे न मिलेगी, जब उसकी तनु-चर्म सुभीन।

९३१—जगत् में किसके सिर पर पैर होते हैं।

९३२—लघु जीवों का वह मल होता, किन्तु रक्त के मल को धोता।
निर्माता मरते खा गोता, अंगूरों का मद वह खोता।

९३३—जो जननी जननी-जनक, उसका धाम ललाम।
भय से वश जिनको हुआ, उनको करो प्रणाम।

९३४—अचल निवासी वन करे, अचल भुजंग बलात।
अचलराज—पति शिर चढ़े, अचल तदपि दिन-रात।

९३५—द्युतिमय होकर द्युति रहित, कामी, कुटिल कुरूप।
तनु-बर-छवि मुख का तदपि, वह उपमा न अनूप।

९३६—सकल जगत के जनक का, है वह पुत्र विचित्र।
और जनक भी है वही, जगत जनक का मित्र।

९३७—सुख आने पर पीछे जाती, दुख पड़ने पर आगे आती।
चार आँख, फूला तनु पाती, मनुजों के मन वह भाती।

९३८—पद कटने से उसको लावें पर कहें डोहा बन जावें।
पूरा पद सबको हरपावें रामचन्द्र के वंश में आवें।

९३९—रंग-रंग के घर में रहती एक नदी मेरी बह रहती।
सुख देती प्राणों को हरती, मार,मारकर कभी न मरती।

९४०—रहती है वह करके मन्दर, कहती करके बातें कर कर।
जो पहचाने उसको नर-वर, ता निष्फल है थर्मामीटर।

९४१—हिरण्याक्ष-सुत-रद दंत के भक्त शास्त्र वे कहलाते।
ज्यों-ज्यों बढ़ते त्यों त्यों घटते भाव गीत सित बन जाते।

९४२—एक बार सब मुझे देखते नहीं मुझे फिर कभी देखते।
कहो कौन हूँ मैं बकधाम सुनकर डरते जिसका नाम।

९४३—सब चीजों के संग में पाती अन्धकार में मैं मर जाती।
सदा कृष्ण है मेरी देह सभी जगत है मेरा गेह।

९४४—रुधिर-माँस से हीन सदा, हम तो भी मरकर आ जाते।
हम हैं प्राणी बिना खिलाकर नहीं कभी भी कुछ खाते।

९४५—मैं हूँ ऐसी वस्तु महान, जीती फिर दिन में दे प्राण।
मुझमें तब गिरि डूबे सारे, पर जग फिरें प्यास के मारे।

९४६—राम-पितामह-श्रेष्ठ नाम से जो आधा ही बन जाता।
कौन नगर वह ! जिसके आगे कनक-गिरि का जाता।

९४७—रुधिर-पान करने पर भी नर नहीं उसे कहते निशिचर।
गान सुनाने पर भी उसको कहते सभी कुटिल वनचर।

९४८—सीधा कहें नर उसका जाता जाता वह जब पर चढ़ जाता।
...र-माया से भी बन जाती पूर्ण हिन्दू वाणी कहलाती।

९४९—नाम की सूँड हाथ पा चलता मध्य कटे से जिसका नाम।
ऐसा कौन महात्मा है, जो सीधा कटे भी है बकधाम।

९५०—रण में वीर कायरों को कर, काम खुशी में मैं आता।
मारे से मे जी उठता हूँ, विन मारे मे मर जाता॥

९५१—आ, के साथ सभी में पाता, वि, के साथ अवगुण बन जाता।
आ-वि-हीन उर्दू का काम, अंग्रेजी गाड़ी का नाम॥

९५२—मुझमें कुछ भी वोझ नहीं है, पर मेरा है ऐसा भार।
दो के विना न जो उठता है, हार जीत का दे उपहार॥

९५३—चौथा अक नाम मम आधा, सुख-दुख में मे आती काम।
पैसे का वारहवाँ हिस्सा, वाकी का है मेरा नाम॥

९५४—स्थावर देह, रत्न है सिर पर, पर मैं मणिधर सर्प नहीं।
उँगली को मैं मुख मे रखती, डाढ़, दाँत पर नहीं कहीं॥

९५५—मैं पदार्थ हूँ बड़ा काम का, दो नारी जिसके सुन्दर।
चार पुत्रियाँ, आठ पोतियाँ, लड़के हैं सोलह घर पर॥

९५६—स्पष्ट वात तू मुझको कहता, संमुख तुझमें मुझसा रहता।
मेरे विना न वह आ सकता, मुझसा वस तुझमें आ सकता॥
उसमें मुझसे अन्तर पाता, किन्तु न वह अन्तर कहलाता।
तू सवको छोटा सा करता, नहीं वड़प्पन को पर हरता॥

९५७—कई सेर का मैं होता हूँ, तो भी मुझमें वोझ नहीं।
मुझको दास वनानेवाले, मिलते मानव कहीं कहीं॥

९५८—जो भू को धरते है उन पर, जिनसे सतत शयन किया।
उसके सुत के सहारक के, सत का है क्या नाम पिया॥

९५९—मैं आधी वसती कैलास। आधी हूँ गायकजन पास॥

९६०—विना काम भी जिसको रखते, छैल छवीले अपने पास।
जिसका गिरना हार बताता, नृप की यह सवको विश्वास॥
जिससे रुकता सुर-पति-पतिके, प्रखर नेत्र का प्रगुण प्रभाव।
क्या है वह जो निर्जर पति की, तरल प्रकृति से करै बचाव॥

९११—माता के सम दे उपदेश तरह तरह के करती वेश।
विद्वानों का है वह प्राण जीव-रहित पर देती ज्ञान॥

९१२—वन में लेकर जन्म वास वह करे नगर में।
शीशा कटाकर करे काम मानव के घर में॥
काला मुख दो जीभ रहें लम्बा तनु सुन्दर।
ऐसा कौन पदार्थ बूझ कर कहो न विषधर॥

९१३—पत्थर सारे कभी कभी तरल सरल है।
कभी दृश्य है और कभी अदृश्य अमल है॥

९१४—जननी-जनकी-पिता उसे कहते हैं सारे।
मित्र सदा अभाव उसीका रखते सारे॥

९१५—चार अंगुलियाँ एक अंगूठा रखता हूँ पर जीव नहीं।
कई वस्तुओं से बनता हूँ मिलूँ शीत में कहीं कहीं॥

९१६—सागर की शोभा से हूँ मैं धरती के सम गोलाकार।
पक्षी सम नभ-चर हूँ, भरता धीम बना भू का आधार॥

९१७—पूरे पुण्य नाम मय भर जो चाहे उसका प्यार।
सुन्दर हूँ तो भी सब मुझको नाक चढ़ाता जग सारा॥

९१८—दो हैं पंख नहीं मैं नभ-चर, जाता हूँ मैं सभी कहीं।
एक पंख कटने पर पहुँचूँ बना जहाँ से वहीं मना॥

९१९—उज्ज्वल है पर पय नहीं शीतल चन्दन नाहिं।
बिना छेद के वास है, मिश्रि मैं छूवे जाहिं॥

९२०—तीन वर्ण का नाम मम मध्य हटे सिर जाय।
मध्य आदि के मिलन से है पानी की आस।
अन्त आदि से उठुम मधु जीवन दाता आम।
कामरूप पहचानिये, तब कुछ कीजै काम॥

हजार पहेलियाँ

की

उत्तर-माला

उत्तर	नं० उत्तर	नं० उत्तर
गपति	२ सरस्वती	३ महादेवजी
कृष्णजी	५ यश	६ दर्शन
९७	८ चन्द्रमा	९ आत्मा
र्णाश्रम	११ चार आश्रम	१२ भौंरा
गोरइया	१४ कसेरू	१५ नाड़ी
दिया या दीपक	१७ पानी की मसक	१८ चक्की
ोती	२० मोर	२१ बगुला
९७७—क पुष्प	२३ कछुआ	२४ सजा हुआ हाथी
९७८—ा, तवा और	२६ रबड़	२७ चना
९७९—	२८ आँख	२९ कमल
सिलाई	३१ गुलर का कीड़ा	३२ राजा त्रिशंकु
९८०—ह.	३४ गिरगिट	३५ आरी
	३७ मोरी	३८ दर्पण
९८१—नीचे घ	४० आँख	४१ भौं या भौंह
९८२—चाल की र	४३ बिच्छू	४४ पसीना
९८३—गोलम गोला	४६ कैंची	४७ मच्छर
बगल दबाके	४९ रुपया	५० चिट्ठी या पुस्तक
९८४—हाथ मे लीजे,	५२ तिपाई	५३ रहँट
९८५—सच्चा साक्षी	५५ कंघी	५६ हुक्का

६ मगर	१३७ महात्मा गांधी	१३८ मैदान
९ मोटर	१४० घड़ी	१४१ सूरज
२ मकान	१४३ ओस	१४४ मच्छड़
५ बालसखा	१४६ कलम	१४७ आम
८ चरखा	१४९ चाँद	१५० अचार की गुठली
११ कपास	१५२ 'ख'	
३ नयन	१५४ ऐनक	१५५ जूँ
५६ साँप की केंचली	१५७ बर्र	१५८ सुई
	१५९ बिजली का पंखा	१६० रुपया
६१ मगर	१६२ छाया	१६३ आराम
१६४ नाड़ी	१६५ ढाल	१६६ कलम
१६७ बर्रे का छत्ता	१६८ चड़का झाड़	१६९ बिच्छू
१७० लखेड़ी	१७१ छाया	१७२ खाई
१७३ कुचबधिया (एक जाति)	१७४ ताला	१७५ दिया या दीपक
	१७६ आरा	१७७ दतून
१७८ गुफा	१७९ सुई	१८० चलनी
१८१ हाथरस	१८२ कानपुर	१८३ ताल
१८४ परछाईं	१८५ डूबता सूरज	१८६ दीपक
१८७ सकला	१८८ उड़द	१८९ भैंसका दूध
१९० आगी	१९१ मिरचा	१९२ भैंस
१९३ मक्खन	१९४ तारे	१९५ मूली
१९६ कटहर	१९७ नारियल	१९८ चश्मा
१९९ ताला	२०० चक्की	२०१ अमर बेल
२०२ पीक दानी	२०३ बिच्छू	२०४ लाठी
२०५ तलवार	२०६ शहद	२०७ घुँगची
२०८ ज्वार का भुट्टा	२०९ चक्की	२१० राख
२११ हथौड़ी	२१२ किवाड़	२१३ पतंग
२१४ मिरचा	२१५ पाती	२१६ दर्शन

२९५ चश्मा	२९६ कमान	२९७ कलम
२९८ ऐनक	२९९ चरखा	३०० चूड़ियाँ
३०१ आँख	३०२ बहारू	३०३ प्राण
३०४ तराजू	३०५ मक्खन	३०६ नयन
३०७ जूता	३०८ एक मन	३०९ 'ल'
३१० पीकदानी	३११ घुमची	३१२ पतंग
३१३ चूल्हा	३१४ पानी	३१५ शकरकंद
३१६ केले का पेड़	३१७ जीभ	३१८ नारियल
३१९ पसीना	३२० खटमल	३२१ पाँसे
३२२ हरताल	३२३ भंटा	३२४ कुल्हाड़ी
३२५ सेमर का फल	३२६ कटहल	३२७ आग
३२८ बगुला	३२९ पतंग	३३० रुपया
३३१ मछली मारने का जाल	३३२ तेंदू	३३३ तारे
	३३४ साँप	३३५ सिंह
३३६ बरैयोंका छितना	३३७ दिवाल	३३८ दीपक या मछली
३३९ चिट्ठी	३४० आलू भंटा	३४१ सिंघाड़ा
३४२ सिंघाडा	३४३ पतंग	३४४ भंटा
३४५ परछाईं	३४६ आँसू	३४७ भाई-बहन
३४८ बड़ का वृक्ष	३४९ विद्या	३५० दीपक
३५१ पतग	३५२ तारे	३५३ अंजन
३५४ सोना	३५५ दीपक	३५६ ताला
३५७ आग	३५८ दियासलाई	३५९ घड़ी
३६० तोता	३६१ जामुन	३६२ लेखनी
३६३ कुमुदनीका फूल	३६४ तारागण	३६५ बावली
३६६ वामन	३६७ काँटा	३६८ पृथ्वी
३६९ तुमा	३७० भिलावाँ, आम, अनार	३७१ बसता न था
३७२ अवस्था		३७३ पका नहीं है
३७४ नगाड़ा	३७५ चाह	३७६ छत्ता

३७७ कलम
३७८ कुम्हार का चाक
३७९ कुरता
३८० मिरचा
३८१ सींग
३८२ मोमबत्ती
३८३ पीजड़ा
३८४ कमल
३८५ गधा
३८६ सुई
३८७ बरैयों का छाता
३८८ गाड़ी
३८९ नाव
३९० पनपड़ी
३९१ नाखून
३९२ सुई
३९३ बिल्ली
३९४ चिमटा
३९५ कुम्हारका चाक
३९६ सांप
३९७ गाड़ी
३९८ रतन
३९९ सूरज
४०० मोती
४०१ गधा
४०२ रुपया
४०३ चरखा
४०४ हवा
४०५ मच्छड़ का मुख
४०६ बिच्छू
४०७ मुर्देकी गिल्ली
४०८ नीम की निबोली
४०९ सतायें
४१० बिजली
४११ रक्षा बन्धन
४१२ दर्पण
४१३ मधुमा का फूल
४१४ हुक्का
४१५ बन्दूक
४१६ गूल
४१७ जल
४१८ कपड़ा
४१९ रास
४२० हथौड़ी
४२१ नमक
४२२ दरवाजे का खटका
४२३ मिरचा
४२४ मिट्टी का घड़ा
४२५ मखाने
४२६ लाठी
४२७ गान्धी जी
४२८ पर्लंग नीवाला
४२९ कपड़ा टाँगने की अलगनी
४३० नापा न था
४३१ पका न था
४३२ छ ऋतुयें
४३३ 'ख'
४३४ चश्मा
४३५ पचास जिसे मिश्री खाकर बैल पर लाद कर चलते हैं
४३६ पान का बीड़ा
४३७ रुपया
४३८ बादाम
४३९ ईश्वर
४४० आराम
४४१ दीपक
४४२ नदी
४४३ सूची
४४४ मेंढा
४४५ बरछी
४४६ चन्द्रमा
४४७ अँगूठी
४४८ परछाईं
४४९ नदी और सर्प
४५० आँख की पुतली
४५१ कुम्हार का धागा
४५२ रहँट की घड़ियाँ
४५३ बरतन
४५४ गाड़ी
४५५ पगड़ी

४५६ लज्जावती का वृक्ष ४५७ हार ४५८ लोटा
४५९ बन्दर ४६० मोती
४६१ योगी ४६२ दीपक ४६३ हवा
४६४ बन्दूक ४६५ हम्माम ४६६ हुक्का
४६७ ढोल ४६८ आँख ४६९ पान का बीड़ा
४७० पापड़ ४७१ भजिया ४७२ परछाँई
४७३ सूरज मुर्गी ४७४ फूट ४७५ फूट
४७६ रोटी ४७७ पंखा ४७८ झूला
४७९ दरवाजा ४८० छतरी ४८१ शराब
४८२ शरीर ४८३ चाँद ४८४ काजल
४८५ खटमल ४८६ शहद की मक्खी ४८७ पान का बीड़ा
४८८ चँवर ४८९ चींटा ४९० शहद की मक्खी
४९१ आकाश के तारे ४९२ अजवायन ४९३ बीर बहूटी
४९४ डोली ४९५ भौंरा ४९६ बाइस्किल
४९७ वर्ष, माह, दिन ४९८ चित्र और चित्रकार ४९९ दोनों बराबर
५०० एक भी नहीं ५०१ तिल
५०२ नीम ५०३ आरी ५०४ तराजू
५०५ मछली का जाल ५०६ दिया या दीपक ५०७ धोती
५०८ चिलम ५०९ चिलम ५१० कबूतर की छतरी
५११ आकाश ५१२ परछाई ५१३ तलवार
५१४ चटाई ५१५ जूँ ५१६ मिस्सी
५१७ रुपया ५१८ बहारू ५१९ बदली, मेघ
५२० पीनस ५२१ फव्वारा ५२२ चावल
५२३ दीपक ५२४ नकशा ५२५ लहसुन
५२६ चिट्ठी ५२७ खूँटी न थी ५२८ तिलक
५२९ काशी ५३० कावेरी ५३१ ताजिया
५३२ कसेरू ५३३ कोयल ५३४ शतरंज
५३५ सुभाषचन्द्र बोस ५३६ घुंगची ५३७ शराब

पड़े रहना ६०२ चिलम ६०३ तीनडाली चार बगुला

६०४ एक, दो, चार, आठ, सोलह बत्तीस, सैंतीस

६०५ तरबूज

६०६ धोतियाँ

६०७ जूता

६०८ नाक

६०९ कपूर

६१० गधा (वैशाख नन्दन)

६११ मृदङ्ग

६१२ लिखना

६१३ घुङ्घची

६१४ परछाई

६१५ चक्की

६१६ चलनी

६१७ बादल;

६१८ घड़ा

६१९ कैंची

६२० जोंक

६२१ किसान चाहे बरसना,
धोबी चाहे चूप।
बालक चाहें बोलना,
चोर चाहै धूप॥

६२२ आम की गुठली।

६२३ बैन सरोवर बाल बिन,
धरम मूलबिन डाल।
जीव पखेरु पंख बिन,
नींद मौत बिन काल॥

६२४ आठ सोलह,
बत्तीस, चौसठ

६२५ तीन, पाँच।

६२६

१२					
+	+	+	+	+	१
+	+	+	+	+	२
+	+	+	+	+	३
+	+	+	+	+	४
+	+	+	+	+	५
११ १०	९	८	७	६	

६२७ तीन कोट पाँच कुरता,
बारह टोपी

६२८ पाँच और सात

६२९ बासठ आम

१३० आगरा
१३२ महुआ
१३४ ध्रुवतारा
१३६ हुक्का
१३८ आकाश और तारे
१४० हाथ का मोजा
१४२ सर्प
१४४ जल तो है गङ्गा जल
और जल काह रे।
फल तो है पुत्र फल
और फल काह रे॥
भोग में है मध भोग
और भोग काह रे।
ज्योति में है सूर्यज्योति
और ज्योति काह रे॥
१४६ दस वर्ष पहिले पुत्र से पिता
की अवस्था दूनी थी और
आगे वर्ष पहिले पुत्र की
अवस्था पिताकी अवस्था से
एक तिहाई था।
१५६ नाई
१५८ नाम
१६० कंजूस
१६२ अपना जीव नहीं दे सकता।
१६३ खिस्ता
१६४ बन्द न थे
१६५ मद्दा न थी
१६७ स्त्री के

१३१ आगरा
१३३ तेल
१३५ लेखनी
१३७ ग्रहर
१३९ बिजली
१४१ मथानी
१४३ कुत्ते का पेशाब करना
१४५ मन ख़ुरपा
१४६ बंटा
१४७ पुत्र
१४८ लड़का बाप और भाञ्जा।
पानी। या बाप भी और दो
लड़के भी।
१४९ बारह अठारह पाँच
पैंतालीस।
१५१ पंख नहीं गया था
१५२ कौवा नहीं था
१५३ पैसा न था
१५४ दाना न था
१५५ नरसिंहपुर
१५७ नाई
१५९ नाखून
१६१ विष्णु भगवान के चार हाथ
की होते हैं इस लिये मूर्ति
चाहे जितनी छोटी हो उसके
चार हाथ ही रहेंगे।
१६६ दिया न था
१६८ बिलासपुर

६६९ कागज	६७० धर्म और कर्तव्य
६७१ माँग न थी	६७२ आँख, पैर, हाथ, मुँह
६७३ विद्या	६७४ प्रत्येक को दो रुपया
६७५ गट्टा	६७६ आँखे
६७७ खटमल	६७८ फव्वारा
६७९ खटिया	६८० मूली
६८१ नारियल	६८२ छत्ता
६८३ जाल	६८४ कपड़े का परदा
६८५ सीप	६८६ डोली
६८७ दर्पण	६८८ सोना
६८९ हरताल	६९० वेलपत्ती
६९१ एक सौ उन्नइस	६९२ बीस, चालीस, अस्सी एक सौ साठ।
६९३ छ आदमी ५ पलङ्ग	
६९४ ३ पैसेकी हानि	६९५ एक गाय, दो बकरी, छ बकरी बच्चे अठारह तीतर।
६९६ चौदह रुपया	

६९७ प्रत्येक को

चार	बोरा	बोरा	संख्या	वजन
सात	छ	पाँच	दो =	२० मन
सात	सात	पाँच	एक =	२० मन
छ	छ	चार	चार =	२० मन
सात	छ	पाँच	दो =	२० मन
सात	सात	तीन	तीन =	२० मन
सात	पाँच	चार	चार =	२० मन
छ	छ	पाँच	तीन =	२० मन

६९८ हाथ के एक दस्ताने को निकालने से दस्ताने की पाँच अँगुलियाँ निकल जाती है। हाथ की अँगुलिया शेष रह जाती है।

६९९ मिरचा
७०० नारियल
७०१ रोटी
७०२ तारे
७०३ पायखाना

७०४ मोमबत्ती
७०६ धुवें का धुआं
७०८ दूध दही मक्खन घी
७१० तीर
७१२ पतंग
७१४ पक्षी
७१६ शुक्र जी अपने वाहन मेंढक पर सवार हैं।
७१९ मक्खी
७२१ तम्बाकू
७२३ मेंहदी
७२५ टोपी
७२७ नयन श्यामवदन
७२९ एक पैसे में पाँच चिड़ी खरीदी। एक चिड़ी देकर ५ आँवले लो। फिर एक आँवला देकर ४ बेर लो इस तरह ५, ४ प्रत्येक फल पा जाओगे।
७३६ हुमा
७३७ शतरंज
७३८ गिलहरी
७३९ एक सेर, नौ सेर और सत्ताइस सेर
७४० दो दुशाले चार कोट चार धोती तीस टोपी सात रुमाल।
७४४ समाज के अत्याचार से।

७०५ पचरते आप
७०७ चारपाई
७०९ अफीम
७११ मोच
७१३ पोतने का पोता
७१५ साँपकी केंचुली
७१७ तसवीर
७१८ छिद्र
७२० छतरी
७२२ तलवार
७२४ एक, चिन्ता
७२६ राम राम
७२८ कच्ची कौड़ी
७३० मक्खी
७३१ नारियल
७३२ रुपया
७३३ मछली
७३४ जहाँ राजनीति अच्छी है।
७३५ पहले गाय को उस तरफ ले जाओ। फिर लौटकर घास ले आना। लौटने पर गायको साथ लेते आओ। फिर बाघ को ले जा कर छोड़ो फिर गाय को ले आओ।
७४१ पेड़ पत्ती
७४२ नाक
७४३ पुरुष स्त्रियों से बलवान व अत्याचारी होते हैं। तथा

स्त्रियाँ लज्जाशील हैं।

७४५ गले का हार

७४६ मोती
७४७ रुपया
७४८ योगी

७४९ पपीहरा
७५० मोर
७५१ मोर

७५२ दीपक
७५३ चन्द्रमा
७५४ चन्द्रमा

७५५ गन्ना
७५६ तोता
७५७ हवा

७५८ ऊँट
७५९ पङ्खा
७६० दर्पण

७६१ आम
७६२ बगुला
७६३ पायजामा

७६४ दावात
७६५ तबला
७६६ मका का भुंटा

७६७ पान
७६८ पिंजड़ा
७६९ पापड़

७७० परछाँई
७७१ पसीना
७७२ झूला

७७३ किवाड़ा
७७४ चौसर
७७५ बाँसुरी

७७६ छतरी
७७७ चार इक्का, चार मेंम और चवालिश पत्ता याने ५२ गंजीफा
७७८ पुस्तक

७७९ चोली
७८० प्राणी

७८१ शराब
७८२ चन्द्रमा

७८३ मनुष्य का शरीर
७८४ ओला

७८५ बरसात
७८६ ओला
७८७ आरी

७८८ पहेली
७८९ पुस्तक
७९० अनार = ऊधम को छोड़ना फल को खाना

७९१ अजवायन
७९२ दारू

७९३ कलम
७९४ शराब

७९५ चौसर
७९६ शतरंज
७९७ हुक्का

७९८ अरगनी
७९९ साल
८०० दियासलाई

८०१ छाता
८०२ हुक्का
८०३ कबूतर

८०४ ओला
८०५ अनार
८०६ मैना

८०७ नाम
८०८ आकाश
८०९ परछाँई

८१० तलवार
८११ तोप
८१२ जवास

८१३ चिड़िया, चिड़ौआ
८१४ कसेरु
८१५ मिस्सी

८१६ कसेरू
८१७ मिस्सी

८१८ टेसू का फूल
८१९ छाता
८२० आँख

८७७ इसका कारण यह है कि एक पैसे वाले बारह आमों के स्थान एक पैसे के दो वाले चौबीस आम बिक जाते हैं और फिर बारह आम पैसे वाले बच रहते हैं। जिन्हें एक पैसे में एक बिकने के बदले एक पैसे का डेढ़ आम बिकना पड़ता है, इस लिये एक आने की हानि हुई।

८७८ नौ, बारह, पन्द्रह, अठारह इक्कीस वर्ष।

८७९ सोलह और चालीस वर्ष।

८८० बारह, बीस, चार और चौंसठ।

८८१ दो दो आदमी साथ चढ़ेंगे।

८८२ तोता की कीमत दो रुपया
मैना की कीमत पाँच रुपया

८८३ अक्ल
८८४ अपना मन
८८५ स्वार्थ
८८६ साहस हीन होने से
८८७ राजनीति न जानने से
८८८ मछली
८८९ नाम
८९० वेश्या
८९१ नाखून
८९२ समय
८९३ धीरज के
८९४ घुगची
८९५ बिजली
८९६ चारपाई
८९७ दर्पण
८९८ सोया न था
८९९ प्राण
९०० बदली नहीं
९०१ चिन्ता
९०२ बोलने पर
९०३ भिक्षा माँगना
९०४ उत्तम स्वास्थ्य
९०५ नार = स्त्री
वर = दूल्हा
रस = सार
सब = पूरा
सर = तालाब
नास = सुंघनी
९०६ दास होना
९०७ मन
९०८ सूर्य
९०९ पत्नी
९१० शोर
९११ चालीस रुपया
९१२ दो
९१३ बनारस, कानपुर, नागपुर, इलाहाबाद, देहरादून, लाहौर, मद्रास, बम्बई।
९१४ अफीम
९१५ बिजली
९१६ कदम
९१७ हवा
९१८ जनेऊ का अशुद्ध होना
९१९ मन नहीं लगाया
९२० नगारे की जोड़ी
९२१ मृत सर्प

९२२ मोटर	९२३ फुटबाल	९२४ रेलवे एंजिन
९२५ फाउन्टेन पेन	९२६ कलम	९२७ लालमिर्च
९२८ चक्की	९२९ रावण मन्दोदरी	९३० पतंग
९३१ परिन्द	९३२ शहद	९३३ राम
९३४ [illegible] न	९३५ चन्द्रमा	९३६ विष्णु नाभिकमल
९३७ [illegible]	९३८ सागर	९३९ तलवार
९४० नाड़ी	९४१ नल	९४२ भूतकाल
९४३ छापा	९४४ दाँत	९४५ ओस
९४६ अजमेर	९४७ मच्छर	९४८ गागरी
९४९ कबीर	९५० नक्कारा दुन्दुभी	९५१ मोटरकार
९५२ कढ़ाई	९५३ चारपाई	९५४ अँगूठी
९५५ रुपया	९५६ काँच	९५७ मन
९५८ राजा [illegible] न	९५९ हरदास	९६० छाता
९६१ पुस्तक	९६२ कलम	९६३ सर्प
९६४ जाल	९६५ साँप का मोजा	९६६ ओला
९६७ चश्मा	९६८ जवाबी पोस्टकार्ड	९६९ ओस
९७० बादल	९७१ पलका	९७२ १–सोलह रुपया प्रतिवर्ष चुकाया २–पचीस रुपया कर्ज लिया।
९७३ परछाँईं	९७४ सूर्य की किरणें	
९७५ नाड़ी	९७६ मक्खी	
९७७ नीम	९७८ प्याज	
९७९ बिच्छू	९८० मकान	९८१ बिजली
९८२ सारस	९८३ सीताफल	९८४ दर्पण
९८५ अपना मन	९८६ राजनीति	९८७ समय
९८८ दूसरे की गुलामी	९८९ मैना	९९० अग्नि
	९९१ गजरा	९९२ तीन सौ छत्तीस मोती
९९३ पैंतीस सौ साठ रुपया	९९४ तीन दुशाले तीन पगड़ी चौरान्बे टोपियाँ	९९५ एक दो चार आठ
९९६ तीन घोड़े एक पचास सोलह कटोरी	९९८ सोना	९९७ चालीस अस्सी एकसौ साठ तीन सौ बीस
९९९ ईश्वर प्रेम	१००० गजराज	

* समाप्त *

—शिवनाथ प्रसाद [illegible] मुद्रक काशी। १९५९—

प्रकाशक–भार्ग तकालय गायघाट बनारस

मृदुहास्य

संग्रहकर्ता

श्रीपन्नालाल अग्रवाल विशारद, हरदा।

प्रकाशक

भार्गव पुस्तकालय बनारस

मूल्य १)

प्रथम संस्करण फरवरी १९३५
द्वितीय संस्करण नवम्बर १९३८

भूमिका

प्रिय पाठक गण ! आपने बीरबल-विनोद आदि हँसी-दिल्लगी की पुस्तकें पढी होंगी पर यह पुस्तक अपने ढंग की निराली है। इसमें प्राचीन और अर्वाचीन सभी प्रकार के हृदय को प्रफुल्लित कर देने वाले चुटकुले हैं। जिनमें से कतिपय सत्य घटनायें हैं।

यदि आप उदास हैं या कोई चिन्ता आप पर सवार है, तो जरा इसे हाथ में ले लीजिये। आपकी स्थिति में आश्चर्य जनक परिवर्तन हो जायगा। आपकी मुख मुद्रा फड़क उठेगी, बत्तीसी खिल जायगी और मनमयूर नाच उठेगी। इस तरह सारी उदासी निकलकर आनन्द-प्रवाह शरीर म प्रवाहित हो उठेगा। इस पुस्तक के पढ़ने से जो प्रसन्नता होगी, वह न केवल आपके स्वास्थ्य को ही संवर्धित करेगी, किन्तु इससे आपकी मानसिक शक्तियो पर भी भारी प्रभाव पड़ेगा। आपके जीवन में सरसता, नवीनता और विनोद आ जायगा। हाजिर जवाबी की अनेक घटनायें मालूम होने से व्यवहार में सफलता और स्वाभिमान झलक उठेगा।

इस 'मृदु-हास्य' से बच्चों, युवकों, वृद्धों, महिलाओं, विद्यार्थियों, शिक्षकों, डाक्टरों, दूकानदारों अन्य व्यवसायियों और श्रम-जीवियों सभी को इच्छित मनोरञ्जन प्राप्त हो सकता है। यदि कहीं नीरसता समझ पड़े तो दो तीन बार धीरज से वही चुटकुला पढ़ने पर आप उसकी घुली हुई मिठास का आस्वादन कर सकते हैं।

यद्यपि इसमें स्थानर्मित चुटकुलों का सख्या तीस से अधिक नहीं है, तो भी इस संग्रह को मधुर करने के लिये यथासाध्य परिवर्तन यत्र तत्र किया गया है। इसमें अश्लीलता को स्थान नहीं दिया गया, पर तो भी कहीं कहीं यह आई है मर्यादानुसार मजे की है।

इसकी विशेष प्रशंसा व्यर्थ है क्योंकि यह स्वतः ही उसकी प्रशंसा प्रत्यक्ष करेगी। आशा है बुद्धिमान पाठक इसे अपनाकर श्रम सफल करेंगे।

विनीत—
श्रीपन्नालाल अग्रवाल 'विशारद'
हरदा (सी पी)

सूची-पत्र ।

मृदुहास्य

* श्रीगणेशाय नम *

मृदुहास्य

अर्थात

चुटकुलों का चाचा ।

१—चोट कहाँ लगी ?

डाक्टर—क्यों जी तुम्हें चोट कहाँ लगी ? क्या जाँघ के पास ?

मरीज—जी नहीं स्टेशन के पास ।

२—कमर भी टूट जायगी ।

एक मसखरा अपने बीमार मित्र को देखने गया और पहुँचते ही पूछा —

"कहो जी कैसे हो ?"

उत्तर मिला—जाड़े से बुखार आता था पर अब टूट गया है । लेकिन कमर का दर्द बाकी है ।

मसखरे ने कहा —बुखार टूट गया । कोई हर्ज नहीं । ईश्वर ने चाहा तो कमर भी टूट जायगी ।

३—मैं आपका ही पुत्र हूँ।

नाराज पिता—तू निरा गधा है।

पुत्र—बाबूजी माफ करिये। मैं आपका ही पुत्र हूँ।

४—हाथ खाली नहीं है।

एक भिखारी ने आकर भीख माँगी, तो मालकिन ने कहा—'अभी हाथ खाली नहीं है।

भिखारी—हाथ में होते करते तो देती नहीं माँ जी। अब हाथ खाली होगा, तब क्या दोगी?

५—बीबी घर में नहीं हैं।

फकीर—अल्लाह नाम पर कुछ देना बाबा?

मकान मालिक—बीबी घर में नहीं हैं।

फकीर—मैं बीबी नहीं माँगता बाबा। मुझ तो मुट्ठी भर दाना चाहिये।

६—लड़की कहाँ ब्याही है?

एक जाट—(टिकिट बाबू से) मुझे कहाँ का टिकिट दे दो। जहाँ मेरी लड़की ब्याही है।

बाबू—तेरी लड़की कहाँ ब्याही है?

जाट—अरे इतना भी नहीं जानता बाबू बन गया!

७—मुझ लुटवाओगे।

एक बहरा, एक अन्धा, एक लँगड़ा एक नंगा और एक

कगाल पाँचों जगल में से भिक्षा के लिये दूसरे गाँव को जाते थे। इतने में बहरा बोला—ऐसी आवाज आती है मानो चोर आ गये हों।

अन्धा—हाँ, दीखता तो ऐसा ही है।

लँगडा—चलो, जल्दी भाग चलें।

लूला—भागते क्यों हो? मै ही उन्हें पकडकर पीट डालूँगा।

कगाल—और कुछ नहीं। तुम सब मिलकर मुझे यहाँ लुटवावोगे।

८—पलंग पकडो सलंग जाने दो।

एक साहब जिनको मकान बदलना था, मजदूर से बोले—'इतने सामान को उस जगह ले जाने का क्या लोगे?'

मजदूर—दो रुपये।

साहब—सामान तो बहुत नहीं है।

मजदूर—वाह साहब। देखो न। कुर्सी उर्सी, मेज बेज, बेग फेग, पलङ्ग सलङ्ग, विस्तरा फिस्तरा बहुत तो है।

साहब—अच्छा एक रुपया लो और आधा सामान ले जाओ कुर्सी उठाओ, उसी फेंक दो। मेज ले चलो, वेज रहने दो। वेग लो, फेग छोडो। पलग पकडो, सलग जाने दो। विस्तरा उठाओ, फिस्तरा रहने दो।

९--तेरा नाम।

एक डिप्टी-इन्सपेक्टर ने प्राइमरी स्कूल की दूसरी कक्षा में एक लडके से पूछा—'तेरा नाम?'

लड़का—सत्तरह सौ ।

इन्सपेक्टर—अरे तेरा नाम ?

लड़का—(सोचकर) एक सौ सत्तर ।

जब कई बार यही प्रश्न करने पर यही उत्तर पाया तो कक्षा के शिक्षक ने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ?

लड़का—मेरा नाम गोविन्ददास है ।

१०—भरता बनाऊँगा ।

एक मित्र ने बहिरे से राह में भेंट होने पर कहा—'भाई साहब राम, राम ।

बहिरा—बाजार से आये हैं ।

मित्र—चित्त तो प्रसन्न है ?

बहिरा—बैंगन (भण्टा) लाये हैं ।

मित्र—बाल बच्चे तो मजे में हैं ?

बहिरा—आज सबका भरता बनाऊँगा ।

११—घोड़े पर निबन्ध कैसे लिखता ?√

शिक्षक—क्यों मक्खन घोड़े पर निबन्ध लिखकर क्यों नहीं लाये ?

मक्खन—पण्डित जी ज्योंही मैं उस पर लिखने लगा त्यों ही हवा से कागज उड़ गये, जिससे घोड़ा चमक पड़ा तो दावात झुक गई मैं गिर गया और घोड़ा भाग गया । कहिये, मैं कैसे घोड़े पर निबन्ध लिखता ?

१२—दो दो की एक धुलाई।

आदमी—(धोबी से) तुम बुरी तरह कपडे धोते हो। फाड़ कर एक-एक के दो-दो कर लाते हो।

धोबी—लेकिन हुजूर, एक-एक कपड़े के दो-दो कर लाने पर भी धुलाई एक ही लेता हूँ।

१३—गधा बनोगे या बैल ?

एक जज ने दिल्लगी में वकील से पूछा—

"आप अगले जन्म में गधा बनना पसन्द करते हैं या बैल ?"

वकील—गधा।

जज—क्यों, बैल क्यों नहीं ?

वकील—बैल तो अगले जन्म मे जज लोग होते है।

१४—हल्ला करने वालों को निकाल देंगे।

अदालत में बहुत हल्ला होने पर मजिस्ट्रेट बोला—"जो कोई हल्ला करेगा, वह यहाँ से निकाल दिया जायगा।"

अपराधी—(चिल्लाकर) जय हो, जय हो, जय हो।

(मजिस्ट्रेट से) हुजूर, कृपया मुझे निकाल दीजिये क्योंकि व्यर्थ शोर गुल करता हूँ।

१५—ईसाई नाम।

परीक्षक—तुम्हारा ईसाई नाम क्या है ?

विद्यार्थी—महाशय, क्या ?

परीक्षक—(नाराज होकर) तुम्हारा ईसाई नाम क्या है?

विद्यार्थी—मैं ईसाई नहीं हूँ।

१६—सायकल से दूध।

एक सायकलवाला देहाती के माथे सायकल मढ़ना चाहता था।

देहाती—मैं सायकल मोल न लेकर गाय लूँगा।

सायकलवाला—पर जब तुम गाय पर बैठकर घर जाओगे तो क्या मूर्ख न कहलाओगे?

देहाती—पर यदि मैं सायकल से दूध दुहूँगा तो क्या मूर्ख न कहाऊँगा?

१७—वैयाकरणी की अन्त्येष्टि क्रिया।

एक वैयाकरणी कालेज देखने गये और एक विद्यार्थी से प्रश्न किया। तुम्हें अंग्रेजी का कौन सा कवि पसन्द है।

विद्यार्थी—गोल्डस्मिथ।

वैयाकरणी—उसकी कौन सी कविता सबसे अच्छी है?

विद्यार्थी—महाशय मुझे तो 'वैयाकरणी की अन्त्येष्टि क्रिया' पसन्द है।

✓ १८—लड़ाइयाँ गिनो।

शिक्षक—अंग्रेजों की मराठों से कितनी लड़ाइयाँ हुई?

विद्यार्थी—पाँच।

शिक्षक—उनको गिनो।

विद्यार्थी—एक, दो तीन, चार, पाँच।

१९—छड़ी की सीध में गधा है।

एक लड़का शिक्षक की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। इससे उसने छडी का एक सिरा उसकी ओर करते हुए कहा—"इस छडी की सीध में आखीर वाला गधा है।"

असावधान लड़का—महाशय, किस सिरे की ओर वाला ?

२०—ढोल वजाने जाता हूँ।

एक छोटा पर मोटा आदमी राह में एक पतले पर, ऊँचे आदमी से वोला—

"क्या आप सारगी वजाने जा रहे हैं ?"

पतला,पर ऊँचा आदमी—जी नहीं, ढोल वजाने जा रहा हूँ।

२१—भ्रातृ-स्नेह।

शिक्षक "दया" पर व्याख्यान दे रहा था। उसने एक वालक से कहा—"देवीप्रसाद ! यदि मैं एक लडके को, जो गधा को मार रहा है, ऐसा करने से रोक दूँ, तो मैं ऐसा करने से कौन सा सद्गुण वताता हूँ ?"

देवीप्रसाद—भ्रातृ-प्रेम।

२२-सा. री. गा. मा.।

गायक शिक्षक—(विद्यार्थी से) क्या तुम्हें सा री गा. मा. आता है।

लडका—जी, नहीं, हमें तो स्कूल मे वास्कोडी गाना वताया गया है।

२३—वकील ने ठगा।

वकील—(किसी के गवाह से) क्या तुम कभी जेल गये हो ?

गवाह—हाँ एक बार।

वकील—कितने समय के लिये ?

गवाह—जितनी देर में मैं उस जेल की कोठरी को पोत सका क्योंकि उस कोठरी में एक वकील को बन्द करना था जिसने मुझ को ठगा था।

२४—बड़ी अदालत में अपील की।

पिता—(अपनी पुत्री से) क्या वह मिस्टर हेनरी नहीं था, जो मेरे आने के पूर्व यहाँ से गया है ?

लड़की—जी हाँ, था।

पिता—क्या मैंने उसे यहाँ आने की मनाही न की थी ?

लड़की—पर उसने अपील बड़ी अदालत में की और माँ ने आपकी आज्ञा रद्द कर दी।

२५—सर सीताराम।

मालिक—आदमी से (जो नौकरी चाहता है) तुम्हारा नाम क्या है ?

नौकर—सीताराम।

मालिक—तुमको बोलना नहीं आता। पहिले 'सर' लगाना

चाहिये फिर पीछे जो कुछ कहना हो सो कहो। अच्छा, फिर कहो, तुम्हारा नाम क्या है।

नौकर—सर, सीताराम।

२६—भैंस कम पतली है?

मालकिन ग्वाले के लड़के से कहा—क्यों रे? भैंस का भी इतना पतला दूध?

ग्वाले का लड़का—माँ जी! हमारी भैंस क्या कम पतली है?

२७—इतना पतला दूध?

होटलवाला—क्यों ग्वाले, आज इतना पतला दूध लाया?

ग्वाला—मालिक रात को भैंस पानी में भींज गई थी।

२८—कुछ हिसाब है?

साहूकार—क्यों लछमन! पाँच,छ बार माँगने पर भी तुम उधार लिये हुये रुपये नहीं देते?

लछमन—परन्तु आपने मुझे कर्ज देते समय कितनी खुशामद कराई थी, इसका भी कुछ हिसाब है?

२९—परचा ठीक किया है?

पिता—(लड़के से गणित का परचा करके आने पर) आज का परचा कैसा किया?

लड़का—बाबू जी एक सवाल गलत है।

पिता—कितने सवाल किये थे?

लड़का—दस सवालों का परचा था।

पिता—तो सवाल तो ठीक किये हैं न ?

छटकू—बाकी तो मैंने किये ही नहीं।

२०—दो हाथ का अन्तर ?

एक समय अकबर और बीरबल बैठे थे। अकबर ने बीरबल से एक काम करने को कहा। बीरबल से वह काम न हुआ। इससे वह दो एक हाथ के अन्तर से फिर बैठ गया।

अकबर [गुस्से में]—जब तुम इतना सा काम न कर सके तो तुम में और गधे में क्या अन्तर है ?

बीरबल—दो हाथ का।

२१—जल्दी से क्या ?

सोहन—भाइ जल्दी-जल्दी चलो, देखो न सूरज ऊपर चढ़ा आता है।

मोहन—तो फिर जल्दी चलने से नीचे थोड़े ही उतर आवेगा।

२२—महाभारत किसने लिखा ?

मास्टर—(एक लड़के से) बता महाभारत किसने लिखा ?

लड़का—मास्टर साहब मुझे नहीं मालूम किसने लिखा। मैंने तो नहीं लिखा।

२३—हम पैदल चलेंगे।

यात्री तांगेवाले से बोला—यहां सराय से स्टेशन तक मुझे ले जाने का क्या लोगे ?

तांगेवाला—बाबू जी, केवल चार आने ।

यात्री—और हमारे सामान का ?

तांगेवाला—सामान का कुछ नहीं ।

यात्री—अच्छा हमारा सामान ही ले चलो हम पैदल ही चलेंगे ।

३४—मोटर में रहूँगा ।

एक मोटरवाला मोटर लेकर होटल के पास गया और मैनेजर से पूछा, कि "एक रात मोटर रखने का क्या किराया लगेगा ?"

मैनेजर—एक रुपया ।

मोटरवाला—मेरे ठहरने का क्या लगेगा ?

मैनेजर—पाँच रुपया ।

मोटरवाला—मोटर रखवा दीजिये मैं एक रात उसी में रह लूँगा ।

३५—झाड़ पर चढ़ जायँगी ?

तीन लडके एक तालाब के पास से जा रहे थे ।

पहिला लडका—क्यो जी यदि तालाब में आग लग जाय तो मछलियाँ कहाँ जायँगी ?

दूसरा—जायँगी कहाँ ! पास ही झाडों पर चढ जायँगी ।

तीसरा—वाह भाई ! वाह !! क्या मछलियाँ ढोर हैं ! जो झाडों पर चढ जावेंगी ।

३६--विचित्र न्याय ?

नवाब—क्यों ब्राह्मण ! क्या कहना चाहते हो ?

ब्राह्मण—जनाब मेरे दामाद को मार डाला। अब मेरी लड़की बिना पति के रह गई।

नवाब—क्यों धोबी यह बात सच है?

धोबी—जी हुजूर सच है पर मैं भी तो बिना गधेका रह गया!

नवाब—मुझे दोनों पर दया आती है। अच्छा, ब्राह्मण! यह धोबी तुम्हारी लड़की का पति हो जायेगा। (धोबी से) तेरे गधा नहीं है इससे यह ब्राह्मण तेरे गधे का काम करेगा। जाओ!

१७—साठ और पैंसठ के बीच में।✓

पिता—क्यों मोहन! तुम्हें गणित में कितने नम्बर मिले?

मोहन—पिताजी ६० और ६५ के बीच में मिले।

पिता—इस बार तो तुमने खूब परिश्रम किया। जरा परचा तो दिखाओ।

पिता—(परचे पर केवल पाँच नम्बर देखकर) क्यों! इतना झूठ क्यों बोलता है?

मोहन—नहीं पिताजी ६ और ६५ का अन्तर अर्थात् ५ तो मैंने भी कहा था।

१८—बोली मीठी है।✓

मेहमान—मुन्नी तुम्हारी बोली तो बड़ी मीठी है।

मुन्नी—क्यों कि मैं रोज शक्कर खाती हूँ।

१९—शीशी की क्या कीमत?

ग्राहक—(दुकानदार से) शीशी की क्या कीमत है?

दूकानदार—यदि शीशी में कुछ लोगे तो शीशी की कीमत नहीं लगेगी।

ग्राहक—अच्छा तो उसमें काग दे दीजिये। दूकानदार ने काग लगा कर शीशी दे दी। ग्राहक चलने लगा तब दूकानदार ने कहा "पैसे तो दीजिये"।

ग्राहक—आपने तो कहा था कि शीशी के कुछ दाम नहीं लेंगे।

दूकानदार—मैं शीशी के दाम नहीं माँगता, मुझे काग की कीमत दो आना दे दीजिये।

इस पर ग्राहक ने लज्जित होकर दाम चुकाये और अपनी राहली।

४०—पैसे कम गिनना पड़ेंगे।

ग्राहक—(हलवाई से) क्यों जी आपने तो मिठाई कम तौली।

हलवाई—मैंने आपकी तकलीफ कम की। क्योंकि इससे आपको कम वजन ले जाना पडेगा।

यह सुन ग्राहक ने दाम दिये पर बहुत कम।

हलवाई—आपने तो कम पैसे दिये।

ग्राहक—मैंने आपकी तकलीफ कम की। क्योंकि आपको भी कम पैसे गिनने पड़ेंगे।

४१—आज करै सो अब।

माँ—बेटा रोज का काम रोज करना चाहिये। जैसा कहा है—

काल करै सो आज कर,
आज करै सो अब्ब।

बेटा—माँ! तो आप भी मुझे वह मिठाई जो कल के लिये रखी है, अभी दे दो।

४२—भाग्य फूट गया।

एक आदमी—हाय! मेरा भाग्य फूट गया।

दूसरा—क्या काँच का बना था?

तीसरा—(दया के साथ) अब उसे लोहे का बनवाने में ही आराम रहेगा।

४३—दो पैसे का दूध।

एक आदमी ने अपने नौकर से दो पैसे का दूध मँगवाया मालिक को उस दूध में गिरी हुई मक्खी दिखी। मालिक बोला—दो पैसे में मक्खी ही आया!

नौकर—तो क्या दो पैसे में हाथी घोड़े आवेंगे!

४४—अवस्था क्या है?

प्यारेलाल तुम्हारी अवस्था कितनी है!

"२१ वर्ष की"।

अरे! गये वर्ष तो १ ही वर्ष के थे!"

जी हाँ! गये वर्ष १ का था पर अब ११ वर्ष का हूँ। १ + १=२१ हुये या नहीं?"

४५—दिया क्यों नहीं दिखता?

पिता—मोहन! इतना अँधेरा हो गया तो भी दिया नहीं जलाया?

मोहन— मैंने तो कब्र का जला दिया ।

अँधेरे में कोई चीज भी दिखती है, कि दिया ही दिखेगा ?

४६—चिट्ठी डाली ।

मालिक—(नौकर से) जा, इस चिट्ठी को बम्बे (लेटर ब्राक्स) में डाल आ ।

नौकर ने चिट्ठी को ले जाकर रास्ते में पानी के बम्बे मे डाल दिया ।

४७—चीनी घोल दो ।

मोहन—यार सोहन ! तुम्हारी बोली में मिठास नहीं है ।

सोहन— तो चीनी घोल दो मीठी हो जायगी ।

४८—भले आदमी को देखकर कचरा फेंकना ।

मालिक—अरे दीना, जब तुम ऊपर से सड़क पर कचरा फेको तो किसी भले आदमी को देखकर फेंका करो ।

दीना—जी !

कचरा इकट्ठा करके दीना छत पर खड़ा रहा । कुछ देर बाद एक सेठ जी घर मालिक से मिलने आये । उन्हें देख दीना ने सारा कचरा उनके ऊपर डाल दिया ।

सेठ जी ने मालिक से शिकायत की । मालिक ने दीना से कारण पूछा । दीना ने कहा—

"आपने ही तो कहा था, कि कचरा किसी भले आदमी को देखकर डालना ।"

४९—मैं ही खो गया होता।

एक कुम्हार ने गधा खो जाने पर अपने मित्रों को पार्टी दी। एक मित्र— भाई, आज पार्टी क्यों दी जा रही है?

कुम्हार—आज मेरा गधा खो गया है। भगवान की दया से इतने से ही खैर है। यदि उस गधा पर मैं बैठा होता तो मैं ही खो गया होता।

५०—आपने मुझे चाटा।

अकबर—बीरबल आज स्वप्न में मैंने देखा कि मैं शक्कर कुण्ड मे गिरा हूँ और तुम मैले कुण्ड में।

बीरबल—मैंने भी यही स्वप्न देखा पर थोड़ा ज्यादा यह देखा कि, आप मुझे चाटने लगे और मै आपको।

५१—चाभी मेरे पास है।

एक आदमी को खबर मिली कि उसका ट्रंक चोरी चला गया है। यह सुन वह अफसोस के साथ कहने लगा कि उसमें कई कीमती चीजें थीं। पर थोड़ी देर बाद बोला 'है! है!! है!!!' मुझे याद आगया चाभी तो मेरे ही पास है ट्रंक गया तो क्या हुआ।

५२—नक्शे में पानी कहाँ है?

मास्टर सा —केदार, नक्शे में पानी कहाँ-कहाँ है? बताओ।

केदार—पंडित जी यदि नक्शे में पानी होता तो यह गल न जाता।

५३–ठहरो।

एक दिन मास्टर साहब को एक लडका रास्ते में मिला। वह स्कूल में बहुत समय से गैरहाजिर था, इससे वह भागने लगा, तो मास्टर साहब बोले "ऐ लडके ठहरो।"

लडका—जी हाँ, जरा घर से आपके बैठने के लिये आसनी ले आऊँ।

५४–मुझे दण्ड क्यों।

गुरुजी—(सोहन से, मोहन के पाठ याद न करने पर) सोहन, मोहन को कान पकड कर यहाँ से १०० गज दौडाओ।

सोहन—पर गुरुजी! मुझे भी दौडना पडेगा। इससे मुझे दंड क्यों?

५५–सत्तू न खाऊँगा।

मालिक—(नौकर से) अब मेरी नौकरी छूट गई है। आमदनी का कोई जरिया नहीं रहा। आज बाजार से सत्तू ले आओ।

नौकर—सरकार, मै तो सत्तू न खाऊँगा, नौकरी तो आपकी गई है, मेरी तो बहाल है।

५६–वह आपकी माँ है या मेरी?

पिता पुत्र भोजन करने को बैठे, माँ की गल्ती से पुत्र की थाली में अधिक खीर परसा गई थी। इससे पति स्त्री से बिगड़ कर कहने लगा, "वह तेरा पति है या मैं?"

इस पर लडका बोला, "वह आपकी माँ है या मेरी?"

५७—एक बेवकूफ।

एक बेवकूफ ने अपनी धोती उतार कर सूखने के लिये फैला दी। हवा के झोंके से वह कुयें में गिर गई। इस पर बेवकूफ बोला, अच्छा हुआ जो मैंने अपनी धोती खोल कर रख दी थी वरना मैं भी धोती के साथ कुयें में गिर जाता।

५८—रेल कैसी होती है।

एक गँवार ने टिकिट लेकर बाबू से पूछा रेल कैसी होती है? बाबू ने कहा काली होती है और उसके मुँह से धुंआ निकलता है। इतने में गँवार ने एक साहब को गेट पर देखा। वह साहब काली पोशाक पहिने था और सिगरेट पी रहा था। गँवार ने सोचा, हो न हो यही रेल है। ऐसा सोच वह गँवार झट उस साहब की पीठ पर उचक कर बैठ गया।

उस साहब ने कहा "अबे, यह क्या करता है!"

गँवार बोला "मरे काहे जात है, हम टिकट ले लीन हैं!"

५९—पिता की सहायता।

शिक्षक—राम, क्या तुमने यह सवाल अपने पिता की सहायता से किया है?

राम—नहीं गुरु जी मैंने जरा भी सहायता नहीं ली।

शिक्षक—तो फिर तुमने कैसे किया?

राम—पिता जी ने ही इसे पूरा करके मुझे दिया।

६०--खजाना ढूंढ रहा हूं।

एक लडके ने एक बूढे से जो झुककर लकडी के सहारे चल रहा था, पूछा—"क्या कब्र के लिये अच्छी जगह ढूँढ रहे हो ?"

बूढ़ा—नहीं जी, जमीन में पडे खजाने को ढूँढ रहा हूँ।

६१--डाढ़ी काली क्यों।

किसी ने एक दिल्लगीबाज से पूछा, "क्यों जनाब आपके सिर के बाल तो सफेद हो गये, पर डाढ़ी अभी तक बिलकुल काली क्यो है ?"

दिल्लगीबाज—भाई साहब, सिर के बालों से यह बीस वर्ष छोटी है।

६२--पुत्र का नाम सागर रखिये।

एक मित्र (अपने पुराने दोस्त से)—क्यों भाई, आपके कितनी सन्ताने हैं ?

दोस्त—चार पुत्र हैं—गंगा, यमुना, कृष्ण और नर्मदा तथा तीन पुत्री हैं—गोमती, गोदावरी और सरस्वती।

एक मित्र—अबकी पुत्र हो तो उसका नाम सागर रखिये, सब कमी पूरी हो जावेगी।

६३—क्या स्कूल ले जाते हो।

एक आदमी एक बकरी का बच्चा लिये जा रहा था। बच्चा चिल्लाता जा रहा था। एक स्कूल में जाने वाले लडके ने पूछा ?

लड़का—इसे कहाँ ले जाते हो ?

आदमी—बलिदान देने के लिये ।

लड़का—यह मूर्ख बकरा इतनी सी बात के लिए इतना चिल्लाता है हम समझे थे कि शायद इसे स्कूल में पढ़ने के लिये ले जा रहे हो ।

६४—कब तक कड़वी चीजें खाऊँगा ?

रोगी—डाक्टर साहब, मैं कब तक कड़वी चीजें खाऊँगा ? स्वादिष्ट कब मिलेगी ?

डाक्टर—जब तक हमारा बिल अदा न हो जायगा, तब तक तुम्हें इसी प्रकार रहना पड़ेगा ।

६५—मुझे नहीं जानता ।

एक आदमी—(ठग से) हमने सुना है तुम्हें बैंक में नौकरी मिल गई है । शायद बैंक के मैनेजर तुम्हें जानते होंगे ?

ठग—नहीं तो, मुझे नौकरी इस लिये मिल गई है, कि वह मुझ को कुछ नहीं जानता ।

६६—मूर्ख के भाई । ✓

एक मित्र ने अपने दूसरे मित्र से कहा, 'भाई' जरा हमारी कलम तो बना दो ।

दूसरा मित्र—क्या मैं भाई हूँ ?

पहिला मित्र—अबे रे मूर्ख !

दूसरा—वाहरे मूर्ख के भाई ।

६७-माई हेड (मेरा सिर) ।

लड़के को शिक्षक ने बताया, कि "My head = मेरा सिर" । लडका घर जाकर रटन लगा "**माई हेड** (My head) माने मास्टर का सिर" ।

इतने में उसके पिता ने कहा, "अरे **माई हेड** माने मास्टर का सिर नहीं **माई हेड** माने मेरा सिर" ।

पिता के चल जाने पर लडके ने फिर रटना शुरु किया, "**माई हेड** माने पिता का सिर" ।

दूसरे दिन स्कूल मे मास्टर ने लडके को **माई हेड** माने पिता का सिर कहते सुन कर कहा, नहीं **माई हेड** माने मेरा सिर"

इस पर लडका लगा याद करने, "स्कूल में **माई हेड** माने मास्टर का सिर और घर म **माई हेड** माने पिता का सिर ।"

६८-एक तमाशा ।

एक शतान लडका हलवाई से मिठाई लेकर खा रहा था और हसता जाता था ।

हलवाई—क्यों हसते हो भाई ?

लड़का—एक तमाशा होगा ।

हलवाई—कौनसा तमाशा ?

लड़का—अभी बताता हूँ, खा लेने दो ।

खा चुकने पर हलवाई ने लडके से पैसे माँगे ।

लड़का—भाई यही तो तमाशा है, कि मेरे पास पैसे नहीं हैं ।

६९—मैं खजान्ची नहीं था।

शिक्षक—शाहजहाँ के खजाने में कितना रुपया था?

विद्यार्थी— मैं उसका खजान्ची थोड़े ही था! जो रहा हो उससे पूछिये।

७०—'श' का उच्चारण।

एक पंडित जी हमेशा 'श' अक्षर का अशुद्ध उच्चारण किया करते थे। उनके मित्र खूब हँसा करते थे। एक दिन पंडित जी ने प्रण किया, कि अब मैं 'श' को अस्त्य सदा शुद्ध बोलूँगा और बोले शायिये बीश शरीश को एक शुनार शड़क पर गिर पड़ा'। पंडित जी और बोलना चाहते थे, कि सब हँस पड़े और पंडित जी शर्मा गये।

७१—लम्बोदर कौन समास है।

विद्यार्थी—गुरूजी लम्बोदर कौन समास है?

गुरूजी—बहुव्रीहि।

विद्यार्थी—कैसे? समझ में नहीं आया।

गुरूजी—बहुव्रीहि वह समास है जो अपने अर्थ को साफ करे। जैसे—लम्बा हो उदर जिसका वह है लम्बोदर (जिसका पेट लम्बा हो) अर्थात् गणेश।

विद्यार्थी—गुरूजी आपका पेट भी तो लम्बा है इससे आप भी लम्बोदर हुये।

७२—कमाने के यही दिन हैं।

मजिस्ट्रेट—(चोर से) मै तुम्हें ६ माह की सजा देता हूॅं।

चोर—(हाथ जोड़ कर) दो माह तक न दें नहीं तो मुझे बड़ा घाटा होगा।

मजिस्ट्रेट—क्यों ?

चोर—क्योंकि हम लोगों के कमाने के यही तो दिन हैं।

७३—परिवार बढ़ेगा।

जान—मिस्टर पीटर आप हमेशा हमारी लड़की से क्यों मिला करते हैं ?

पीटर—मैं आपके परिवार में एक व्यक्ति की सख्या और बढाना चाहता हूँ।

जान—नहीं जी आप एक व्यक्ति और घटा देंगे।

७४—शीशी बन्द है।

डाक्टर—(रोगी से) आज आपकी तबीयत ठीक मालूम होती है ?

रोगी—जी हां। मैने आपके बताये नियम का ठीक रीति से पालन किया है।

डाक्टर—सो कैसे ?

रोगी—आपकी दी हुई शीशी का मुँह अच्छी तरह बद रखा।

७५—बच्चे की खुराक।

डाक्टर—(रोगी से) आज क्या खाया ?

रोगी—आपकी बताई हुई तीन साल के बच्चे की खुराक।

डाक्टर—कौनसी खुराक?

रोगी—एक दो मुट्ठी धूल, चिलम का थोड़ा सा गुल, या एक बटन दो चार पिनें पर मुश्किल से।

७६—पैजामा कौन वचन है।

शिक्षक—पैजामा कौनसा वचन है?

विद्यार्थी—ऊपर से एक वचन और नीचे से बहुवचन।

७७—कक्षा में तीसरे नम्बर।

पिता—तुम कक्षा में कैसे चलते हो?

पुत्र—तीसरे नम्बर।

पिता—कक्षा में कितने लड़के हैं?

पुत्र—केवल तीन।

७८—पूँछ में दाँत नहीं है।

माँ—बेटा कुत्ते की पूँछ मत खींचो वह काट खायगा।

लड़का—नहीं माँ पूँछ में दाँत नहीं है।

७९—भाव वाचक संज्ञा।

शिक्षक—(उदाहरण द्वारा संज्ञा समझाकर एक लड़के से) अमिकार कौन संज्ञा है?

लड़का—भाव वाचक।

शिक्षक—क्यों?

लड़का—आपने बताया था, कि जो न दिखे उसे भाव वाचक सज्ञा कहते हैं ।

८०--आँखें भी चली जायँगी ।

मित्र—आपका भाई कैसा है ?

दूसरा मित्र—खाँसी आती थी सो तो गई अब आँखें आई हैं ।

मित्र (पहला)—कोई हर्ज नहीं, ईश्वर चाहेगा तो आँखें भी चली जायँगी ।

८१-नहीं, नहीं ।

एक दिन शिक्षक ने लड़कों को पढ़ाया कि जहाँ दो निषेध-वाचक शब्द हो वहाँ निषेध मिट जाता है । जैसे:-"यह काम असम्भव नहीं है ।" असम्भव् और नहीं मिलकर "सम्भव" का अर्थ देता है ।

दूसरे दिन एक लड़के ने कहा, "गुरुजी ! मै बाहिर जाना चाहता हूँ ।"

शिक्षक-(बहुत काम में लगे होने से चिढ़कर) "नहीं, नहीं ।" लडका बाहिर चला गया ।

शिक्षक-(लड़के के लौटने पर) बिना आज्ञा बाहिर क्यों गये ?

लड़का-आपने 'नहीं' दो बार कहीं था जिससे कल बताये नियम के अनुसार निषेध मिट गया था ।

८२--अनुभव था ।

मित्र-आप इतने जल्दी धनवान् कैसे हो गये ?

सेठ—मैंने एक धनवान् के साझे में दूकान खोली थी।

मित्र—पर धनवान् कैसे हुये ?

सेठ—शुरू में मेरे पास अनुभव था और उसके पास धन, पर अन्त में जब उसके पास अनुभव हुआ तब तक धन मेरे हाथ में आ गया।

८३—गाय पर निबन्ध।

मास्टर—तुमने गाय पर निबन्ध लिखा ?

विद्यार्थी—नहीं।

मास्टर—क्यों नहीं ?

विद्यार्थी—मैंने सोचा कागज पर लिखना ज्यादा अच्छा होगा। गाय यदि लात मार देती तो आपको छड़ी से ज्यादा लगती।

८४—बहिन को लौटा दो।

दाया—(एक आठ वर्ष की लड़की से) भगवान ने तुम्हारी बहिन भेजी है।

कन्या—ऐसा क्यों ? मैं तो भाई के लिये प्रार्थना करती थी।

दाया—इस समय भगवान् के स्टाक में लड़के मौजूद न थे।

कन्या—तो फिर मुझे जल्दी नहीं थी, एक दो माह और ठैहर सकती।

दाया—पर अब क्या हो सकता है ?

कन्या—बहिन को लौटा दो।

८५--स्कूल जाने का समय ।

पिता--(छोटे बच्चे से) तुम स्कूल जाना कब पसन्द करते हो ?

बालक---जब वह बन्द हो जाता है ।

८६--उपकार का बदला ।

रमेश---(एक बालक से) क्यों जी, तुम अपने पिता को उसके उपकार का क्या बदला दोगे ?

बालक---जिस तरह वे मुझे मेला दिखलाते हैं उसी प्रकार मैं भी उन्हें मेला दिखलाया करूँगा ।

८७--ब्याह कर दीजिये ।

बालक---(५ वर्ष का) बाबूजी मेरा ब्याह कर दीजिये ।

पिता---क्यों बेटा किसके साथ ?

बालक---बाबूजी, दादी के साथ ।

पिता---क्यो बे नालायक तू मेरी माँ के साथ विवाह करेगा ?

बालक--बाबूजी,और आपने मेरी माँ के साथ विवाह किया है सो?

८८--स्त्री किसे कहते हैं ?

शिक्षक---(उच्च कक्षा के विद्यार्थी से) स्त्री किसे कहते हैं ? सब लडके कुछ न बोल सके पर एक लड़का जो गणित में होशियार था बोला ।

लड़का---वह जोड़, घटाना, गुणा और भाग है ।

शिक्षक---कैसे ?

विद्यार्थी—यह पति के लिये चिन्ताओं का जोड़ है। उसके धन के लिये घटाना है। आपत्तियों का गुणा है और सम्बन्धियों के लिये भाग है।

८९—गधा।

जेल का सन्तरी—(जेलर को अंधेरे में न पहिचानते हुये जाते देखकर) कौन जा रहा है?

जेलर—(क्रोध से) गधा।

सन्तरी—अच्छा गधे आओ रजिस्टर में हस्ताक्षर करते जाओ।

९०—बड़े गधे हो। ✓

अफसर—तुम बड़े गधे हो।

सहकारी—आप हमारे सरदार हैं। जो चाहे सो कहिये।

९१—वाक्य गलत है।

शिक्षक—(व्याकरण पढ़ाते हुये) क्यों जी, 'मैं गधा गया' वाक्य ठीक है?

छात्र—जी नहीं।

शिक्षक—क्यों?

छात्र—क्योंकि आप तो अभी यहाँ मौजूद हैं।

९२—क्या संसार मोल लोगे?

खिलौना वाला—यह रबर की चिड़िया ले लो।

मोहन—नहीं यह मेरे पास है कुछ और लूँगा।

खिलौने वाला—तो चीनी की गाय ले लो।

मोहन—नहीं, यह भी नहीं चाहिये।

खिलौने वाला—तो क्या दो आने में सारा ससार मोल लोगे?

मोहन—अच्छा तो वही दिखाइये ठीक होगा तो ले लूँगा।

९३—हम टो टुप्पई टाप।

एक ब्राह्मण के तीन पुत्र थे। वे तोतले वोलते थे। वडे होने पर सेगाई की वात चीत चली। नाई देखने को आया तो पिता ने लडकों से कह दिया कि वे उस नाई से वातचीत न करें।

नाई—(एकान्त में वडे लडके से) मोहन तुम तो वडे अच्छे लगते हो।

मोहन—अवी टडन मडन तो ल्डाया नई। नहीं टो और वी अट्ठे लगटे।

दूसरा—(यह सुन कर) डड्डा ने टा तई ती, कि नाई से वोल्यो नहीं।

तीसरा—टुम वोले, टुम वोले, हम टुप्पई टाप।

९४—पेड़े की गुठली।

एक वीमार वालक की माँ ने उसे कुनेन खिलानी चाही उसने न खाई। तव माँ ने उस कुनेन की गोली को पेडे में रख कर उससे कहा, "लेओ वेटा, पेडा खालो।"

वालक ने पेडा खा लिया। थोडी देर वाद माँ ने पूछा "वेटा पेडा खा लिया?

"हाँ खा लिया, पर उसकी गुठली फेंक दी।

९५–डकैती।

डाकू—(राहगीर से) आपको रास्ते में पुलिस का सिपाही तो नहीं मिला?

राहगीर—नहीं।

डाकू—तो, आप अपनी घड़ी और रुपयों की थैली चुपचाप मुझे दे दीजिये।

९६–अनोखा प्रण।

राम—मोहन चलो, गङ्गा नहाने चलें।

मोहन—क्या आपने मेरा प्रण नहीं सुना, कि जब तक मुझे तैरना न आवेगा, तब तक पानी के पास न जाऊँगा।

९७–कितने जल्दी जाता हूँ।

साहब—(क्लर्क से) केडू बाबू! तुम रोज दफ्तर में देर आते हो

क्लर्क—हुजूर, आपको यह भी तो ध्यान में रखना चाहिये, कि मैं घर भी कितने जल्दी जाता हूँ।

९८–डाक्टर की शेखी।

डाक्टर—(अपनी प्रशंसा करते हुये घमंड से अपने एक मित्र से) मेरा इलाज किया हुआ कोई भी रोगी यह नहीं कह सकता कि मैंने काम में कभी ढिलाई की है।

मित्र—(धीरे से) शायद इसी लिये कि मरे आदमी कुछ कह ही नहीं सकते।

९९—मेरी नारंगी।

राम एक नारगी खा गया; पर माँ से फिर माँगी।

माँ—कितनी नारगी है ?

राम-(गिनकर) तीन।

माँ—एक तुम्हारे पिता की, एक मेरी और एक तुम खालो।

राम एक नारगी खाकर फिर माँगने लगा।

माँ—अब कितनी बची ?

राम—दो बची है। एक पिता की और एक मेरी।

माँ—और मेरी ?

राम—वह तो मै पहिले ही खा चुका।

१००-लडकी से शादी हुई।

मास्टर—कल तू स्कूल में क्यों नहीं आया ?

लडका—भाई की शादी में गया था।

मास्टर—शादी किसके साथ हुई ?

लडका—एक लडकी के साथ।

मास्टर—बेवकूफ क्या तूने कभी किसी लड़के के साथ भी शादी होते देखी है ?

लडका—हाँ मेरी वहिन की शादी एक लडके के साथ हुई है।

१०१—डाक्टरों के वैरी कहाँ ?

डाक्टर—डाक्टरों से वैर करने वाले इस लोक में थोड़े हैं।

रोगी—हाँ, इससे भी अधिक परलोक में है।

१०२—उपदेश मानना।

उस्ताद—करना है सो पूर्ण करना।
कभी न काम अधूरा करना।
लड़का—जगत में जब हमने जनमा।
तब उपयोग इसी का करना॥

१०३—उम्र क्या है ?

आदमी—बच्चा तेरी उम्र क्या है ?

बच्चा—घरमें १४ वर्ष की, स्कूल में १० और रेलगाड़ी में ८ वर्ष की।

१०४—दूध पिया ?

"क्यों जी तुम पड़ोसी का दूध पी रहे थे ?"

"नहीं बाबू जी !"

"ठीक कह रहे हो ?"

"एक ही घूँट में तो मुँह जल गया था।"

१०५—कोट, बूट को ढूँढने गया।

फर्स्ट क्लास के डिब्बे में एक अंग्रेज और एक हिन्दुस्तानी यात्रा कर रहे थे। जब हिन्दुस्तानी सो गया, तब अंग्रेज ने उसका एक बूट चलती गाड़ी से बाहिर फेंक दिया। जब वह जागा और बूट न पाया तो समझ गया कि इस अंग्रेज ने बदमाशी की है। वह कुछ न बोला। जब अंग्रेज सो गया तब उसने अंग्रेज का कोट बाहिर फेंक दिया। जब अंग्रेज जागा तो कोट न देख

बोला, "मेरा कोट तुमने लिया है, बताओ कहाँ है ?"

हिन्दुस्थानी-मेरे पास नहीं है, वह कोट मेरे एक बूट को ढूँढ़ने गया है।

१०६—विद्वान कैसे बन सकते हो ?

शिक्षक-केशव, तुम विद्वान् कैसे बन सकते हो ?

विद्यार्थी-'विद्' धातु से।

१०७—क्या जूँ भी न पालें।

एक आदमी-(अपने मित्र से) कैसे आलसी हो। अपने सिर के जूँ भी नहीं निकाल सकते।

मित्र—वाहजी वाह! हमारे चचा सैकड़ों आदमी पालते थे। क्या हम जूँ भी नहीं पाल सकते ?

१०८—आप ही फूल हैं।

एक साहब साइकल पर बैठे जा रहे थे। रास्ते में एक जाट आ गया। वह घंटी बजाने पर भी न हटा। साहब साइकल के टकरा जाने से साइकल समेत गिरपड़े और पतलून झाड़ते हुये बोले, "ओ, यू, फूल (O, you, fool)"

जाट—हुजूर फूल तो आपही हैं, हम तो काँटे हैं।

१०९—टेलीफोन पर कौन है ?

रामू—(आवाज बदल कर टेलीफोन द्वारा) क्या मास्टर साहब हैं ?

मास्टर-हैं।

रामू—(फोनद्वारा) रामू को बुखार आ गया है। आज वह स्कूल नहीं आवेगा।

मास्टर—अच्छा, टेलीफोन पर कौन है?

रामू—मेरे पिताजी श्रीमान्।

११०—घर सड़क के दोनों ओर है।

नरेन्द्र—महेन्द्र तुम्हारा घर सड़क के किस ओर है?

महेन्द्र—दोनों ओर।

नरेन्द्र—कैसे?

महेन्द्र—आते समय दाहनी और जाते समय बाईं ओर।

१११—शक्कर का प्रयोग।

गुरुजी—इन्द्र, एक ऐसा वाक्य बनाओ जिसमें 'शक्कर' का प्रयोग हो।

इन्द्र—मैंने दूध का प्याला पिया।

गुरुजी—इसमें शक्कर का प्रयोग कहाँ है?

इन्द्र—दूध में शक्कर तो डाली ही जाती है।

११२—कुत्ते का पट्टा।

ग्राहक—कुत्ते के लिये एक पट्टा दिखाइये।

दूकानदार—यह है लीजिये कहाँ है कुत्ता? लाइए नाप कर देखूँ।

ग्राहक—मैं ही डाक्टर दरजा हूँ।

दूकानदार—तो क्या कुत्ते के लिए दूसरा निकालूँ?

११३—ब्रजनाथ का टिकट।

"बाबूजी, ब्रजनाथ का टिकिट दीजिये।"

"ब्रजनाथ या वैजनाथ ?"

"ब्रजनाथ"।

"जानते हो वह कहाँ है ?"

"जी हाँ, बाहिर मुसाफिरखाने में बैठा है।"

११४—जानवरों को मनाही नहीं है।

एक मनुष्य को कन्या पाठशाला में प्रवेश करते देख चपरासी ने कहा, "कैसा जानवर है, देखता नहीं, पुरुषों को जानेकी मनाही है।" आगन्तुक-लेकिन मैं तो जानवर हूँ न ? जानवरों को अदर जाने की मनाही नहीं है।

११५—बापका श्राद्ध।

अहीर—पडित जी, कल पिता का श्राद्ध करना है, क्या-क्या लगेगा ?

पडितजी—कोई हजार दो हजार चीजें थोड़े ही चाहिये। यही थोडे चॉवल-सॉवल, जों-सों, खाँड-साँड, तिल-सिल और थोड़ी सी कुश फुग। "बहुत अच्छा" कहकर अहीर चला गया और बनिये से चाँवल और साँवल (नमक) लाया। गिन कर जौं भी सौ रख लिये। कहीं से थोडे तिल माँग लाया। सिल (पत्थर) घर ही में था। कुग और फुस (फँस) कानेको प्रवन्ध कर लिया। खाँड (शक्कर) पडोसी से माँग ली, पा।

के लिये उसे तीन कोस भटकना पड़ा पर उसे भी हाँक ही लाया। पंडित जी साँड़को देख कर दरवाजे पर ही से भाग चले अहीर भी पीछे भागा।

पंडित जी—अरे मूर्ख, साँड लाने को किसने कहा था!

अहीर—पंडित जी! आपने ही तो कहा था। इसलिये सब चीजें तैयार हैं। साँड को भगा देने पर पंडितजी आये, पर सिल, मसक और फूँस देख अपनी गल्ती पर शर्माये। अब श्राद्ध शुरू किया। पंडितजी—देख जैसा मैं करूँ वैसा ही तू भी करना, ले कुशा हाथ में।

अहीर—अच्छा।

पण्डितजी—'तृप्यन्ताम्' कहकर जल छोड़ने लगे। अहीर भी वैसाही करने लगा। इतने में पंडित जी ने चींटी के काटने पर नाक मली। अहीर ने भी यह देखकर अपनी नाक मली। पंडित जी ने समझा कि यह मेरी मज़ाक करता है। इससे क्रोध में आकर उसके एक थप्पड़ जड़ दिया। भला अहीर कब चूकने वाला था। उसने भी एक थप्पड़ जमाई। अब पण्डित जी ने अपना डंडा उठाया तो अहीर ने अपना धान कूटने का मूसल धर पकड़ा। यह देख पण्डित जी घबरा गये और बोले—"बस श्राद्ध हो गया दक्षिणा लाओ।"

अहीर—अच्छी बात है पण्डित जी!

११९—परीक्षक का उत्तर। ✓

किसी लड़के ने परीक्षा में प्रश्न पत्र पर लिख दिया—हजारों की कुन्जी तेरे हाथ है।

अगर पास कर दे तो क्या बात है ॥"

इस पर परीक्षक ने लिख दिया—

"किताबों की गठरी तेरे पास थी।

अगर याद करता तो क्या बात थी ॥"

११७—चन्दा की चाह।

किसी व्याख्यानदाता ने चन्दे के लिये अपील की और चन्दा इकट्ठा करने के लिये अपनी टोपी पेश की। जब टोपी चारों ओर फिर कर आई तो उसे बिलकुल खाली पाई। व्याख्यान दाता ने ठण्डी आह भरी और कहा—

"बेशक मुझे आप लोगों को धन्यवाद देना चाहिये। मुझे तो यह डर था कि कहीं मेरी टोपी ही गायब न हो जावे।"

११८—सब कुछ।

"कौन से शब्द में से 'सब' निकालें कि फिर भी 'कुछ' रह जावे?

"सब कुछ"।

११९—दो आने की सिन्नी।

एक फकीर—(सवेरे उठकर) हे परवरदिगार! अगर आज मुझे एक रुपया मिले तो दो आने की सिन्नी बाटूंगा।

थोड़ी देर बाद रास्ते में उसे एक चिन्दी में १४ आना पैसे मिले। यह देख वह बोला—हे अल्लाह मियां, तुम बड़े सयाने हो दो आने पहिले से ही काट लिये, जरा तो सब्र किया होता।

१२०—रेल ऊपर से निकली।

श्याम—आज रेलगाड़ी मेरे ऊपर से निकल गई।

राम—फिर बचे कैसे?

श्याम—मैं पुल के नीचे था।

१२१—मास्टर की शकल।

शिक्षक—लड़को तुम लोग गीदड़ की शकल नहीं जानते। इधर देखो मैं बतलाता हूँ।

दो लड़के आपस में बात करने लगे। यह देख शिक्षक बोला—गोविन्द बात क्यों कर रहे हो?"

गोविन्द—गुरुजी सुन्दरलाल मुझसे पूछता है, कि किधर देखें? मैंने कह दिया "आपकी तरफ ध्यान से देखो।"

१२२—कहाँ जाते हो?

एक सूरदास कुएँ पर पानी लेने जा रहा था। रास्ते में एक मसखरे ने पूछा—कहो सूरदास कहाँ जाते हो?"

सूरदास—सड़क पर।

१२३—सड़क पड़ी है।

राहगीर—(एक आदमी से) यह सड़क कहाँ जाती है?

आदमी—दिखाता नहीं? सड़क तो यहीं पड़ी है जाती कहाँ?

१२४—जल्द फाँसी दो।

एक जज अपराधी को फाँसी की सजा देने वाले थे। उसने

में उनका एक दोस्त मिलने आया। जज ताड गया कि यह अपराधी की शिफारिश करेगा। इससे उसके बैठते ही बोला—"खबरदार आप उस अपराधी के बारे में कुछ न कहना, मैं इस बारे में तुम्हारी बात बिल्कुल नहीं मानूँगा।"

मित्र—मै तो कहता हूँ कि आप उसे जरूर फाँसी दें।

प्रतिज्ञानुसार जज ने उस अपराधी को छोड़ दिया।

१२५—किसी मूर्ख से पूछना।

श्याम—क्यों राम, मनुष्य क्या खाते है?

राम—यह सवाल किसी मूर्ख से पूछना।

श्याम—तभी तो मै आपसे पूछता हूँ।

१२६—नोट ठीक है?

एक आदमी—(रास्ते से जल्दी जाते हुये वकील से) क्या यह नोट ठीक है?

वकील—(नोट जेब में रखते हुये) चार रुपये मेरी फीस हो गई, एक रुपया घर से ले आना।

१२७—रसोईघर का उपहार।

रसोइया—रसोई घर में रात दिन रहता हूँ, पर बदले में क्या पाता हूँ? कुछ भी नहीं!

मालिक—तुम भाग्यवान हो, मुझे तो यहाँ थोडी देर आने में ही कभी पेट का दर्द मिलता है और कभी बदहजमी।

१२८—जलती लालटेन।

पहिरेदार—(अधिक रात में घूमने वाले से) क्यों जी, राज्य का हुक्म है कि दस बजे रात के बाद लेम्प लेकर चलना चाहिये।

घूमने वाला—(बुझा बुझा लेम्प दिखाकर) देखिये यह लेम्प मेरे पास है। राज्य की ओरसे कहा गया था, लेम्प लेकर चलना चाहिये। यह नहीं कहा था कि जलता हुआ लेम्प लेकर चले।

पहिरेदार—अब जलता लम्प लेकर निकलना।

घूमनेवाला—अच्छा।

पहिरेदार—(उसी घूमनेवाले से कुछ दिन बाद) तुम बड़े उजड्ड हो। कहा था कि जलती लालटेन लेकर चलो, पर तुम नहीं माने। चलो दरबार में इसका फैसला होगा।

घूमनेवाला—(लालटेन पर का कम्बल हटाकर) देखो यह लालटेन जल रही है।

(और उसने उसे फिर ढाक लिया)

पहिरेदार—क्यों रे, उसे ढाक कर क्यों रखा?

घूमनेवाला—सरकारी आज्ञा जलता लम्प लेकर चलने की है सो यह जल रहा है।

पहिरेदार—(अपनी गल्ती मालूम हो जाने पर) अब से आप जलती लालटेन लेवें पर उसका प्रकाश सब दूर फैलने दें, रोकें नहीं।

१२९–मुशीखाने का ऊँट।

एक सौदागर के यहाँ कई जानवर थे। हर एक प्रकार के जानवर के लिये एक-एक मुशी था। एक दिन उसने सब मुशियों से कहा, कि कल मैं सब के जानवर और इन्तजाम देखने आऊँगा। सब मुशी अपने २ दरवाजो पर खडे हो गये। ऊँटों का मुशी सोच रहा था, कि जब सौदागर मुझसे पूछेगा, कि तुम कौन हो तो मै कह दूँगा, कि मै ऊँट खाने का मुशी हूँ। वह ऐसा मनमें कह-कह कर दुहरा रहा था, कि एकाएक सौदागर आकर उससे पूछ बैठा, "तुम कौन हो?"

मुशी–(घबरा कर शीघ्रता से) हुजूर, मै मुशीखाने का ऊँट हूँ।

१३०–पूछकर चोरी करना।

एक गन्ने के रखवाले ने आधी रात को एक तरफ से चोर को ऐसा कहते सुना "क्यो रे खेत, ले लूँ गन्ने दो चार?" इतने में रखवाले ने सुना "ले ले भाई ले ले।" वह सुन रखवाला दौडा और चोर को गन्ना लेकर भागते देखा। वह और तेजी से दौडा और चोर को पकड लिया तथा उसे तालाब के किनारे ले जाकर बोला, "क्यों रे ताल इसको दे दूँ गोते दो चार?" इसके बाद ही उसने उत्तर दे दिया, "दे ले भाई दे ले"। यह कह उसने खूब ठडे पानी में चोर को गोते दिये। उसी दिन से चोर की आदत छूट गई।

१११—लड्डू का हिसाब।

मालिक ने नौकर को १ पाव मिठाई लेने भेजा। हलवाई ने चार लड्डू दे दिये। नौकर ने सोचा कि मालिक मुझे कितना देंगे और वह कितना खायेंगे। कुछ सोचकर और ज्यादा भूखा होने के कारण उसने सब लड्डू खा लिये। और दरवाजे पर आ बैठा। देर हुई जानकर मालिक ने दरवाजे पर आकर देखा तो नौकर को बैठा पाया।

मालिक—(क्रोध से) क्यों रे, लड्डू लाया?

नौकर—हाँ महाराज, हिसाब सुन लो।

मालिक—कैसा हिसाब?

नौकर—मिठाई का महाराज जी।

मालिक—यह क्या कहता है?

नौकर—हलवाई ने ४ लड्डू दिये थे। मैंने सोचा आप मुझे एक अवश्य देंगे तो मैंने एक खा लिया।

मालिक—अच्छा तीन बचे।

नौकर—मैं आपका बूढ़ा नौकर हूँ। आपको मैंने गोद में खिलाया है। यदि मैं आपसे एक लड्डू मांगता तो आप अवश्य देते। मैंने एक और खा लिया।

मालिक—खैर दो ही दे।

नौकर—जब मैं आपको गोद में खिलाता था और यदि आप कुछ मिष्टान्न खाते थे, उसमें से छीनकर खाया करता था। यदि

मैं एक खा गया तो क्या महाराज जी कुछ कहेंगे ? कभी नहीं।

मालिक—अरे एक ही देरे पानी का आधार हो जायगा।

नौकर—आप वडे आदमी हैं, कई को खिला कर खाते हैं। मैंने सोचा एक लड्डू क्या खायँगे। यह सोच मैं उसे भी खा गया।

मालिक—ऐसा हिसाव देख कर चुप हो रहे।

१३२—पर आपकी उमर में सम्राट थे।

पिता—किशन तुम्हारी रिपोर्ट आई है कि तुम याद नहीं करते। देखो शिवाजी ने तुम्हारी अवस्था में सब धर्मशास्त्र पढ़ लिये थे।

किशन—(पहिले तो शर्माया और फिर कुछ सोच कर) पर वाबू जी, जव वे आपकी अवस्था के हुये तब भारत के एक सम्राट भी तो थे।

१३३—इंग्लेंड की आबादी।

मास्टर—लडको इग्लेंड की इतनी घनी आबादी है, कि—जितनी देर में एक साँस लेते हैं उतनी देर में वहाँ एक आदमी मर जाता है।

थोडी देर वाद मास्टर ने एक लडके को जल्दी-जल्दी साँस लेते देखकर पूछा—

मास्टर—गोपाल, जोर-जोर से साँस क्यो ले रहे हो ?

गोपाल—इग्लेंड की आबादी कम करने के लिये।

१३४—मुक्के का गणित।

मास्टर—(एक विद्यार्थी से) एक आदमी १ मिनट में १० मुक्के और दूसरा १२ मारता है। तो ५ मिनट में कौन अधिक मुक्के मारेगा?

विद्यार्थी—मैं इस प्रकार के बारे में कुछ नहीं जानता, क्योंकि न तो मैं कभी लड़ा और न मैंने कभी लड़ाई देखी।

१३५—देहाती का समझ।

एक शहर में एक गँवार छिड़काव की गाड़ी को देख रहा था। वहीं से एक भला आदमी निकला।

गँवार—क्यों साहब, शहरवाले देहातियों को गँवार कहते हैं पर उनकी अक्ल देखिये। इसमें इतने छेद हैं कि एक बूँद पानी भी घर तक न पहुँचेगा।

शहर वाला—तू ठीक कहता है।

१३६—नाई।

एक मित्र—क्यों भाई ऐसा कौन आदमी है जो पंचम जार्ज की टोपी निकाल सकता है?

दूसरा—ऐसा कौन होगा?

पहिला—नाई।

१३७—दस कुत्ते हुए।

शिक्षक—मान लो तुम एक कुत्ता देते हो और आठ फिर देते हो तो कितने कुत्ते हुए

गणेश—नव।

शिक्षक—कैसे।

गोपाल—मेरे घर भी एक कुत्ता है।

१३८—विचार करूँगा।

जज इस बार मैंने तेरा कुसूर माफ किया; मगर अब ऐसा न करना।

अपराधी—अच्छा विचार करूँगा।

१३९—हमेशा एक बात।

शिक्षक—राम तुम्हारी क्या उम्र है?

राम—१५ वर्ष की है।

शिक्षक—परसाल भी यही बताते थे। यह क्या बात है?

राम—मैं वह नहीं हूँ जो कभी कुछ कहूं और कभी कुछ।

१४०—हुजूर गधे।

रईस—अबे गधे वाले हट जा।

कुम्हार—मैं तो पहिले से ही कह रहा हूँ, कि हुजूर गधे आते हैं।

१४१—मैं क्यों कहूँ।

तांगे वाला—हुजूर चार आने दीजिये क्यों कि बहुत दूर आना पड़ा।

मियाँ जी—क्या मैं इतना नालायक पाजी हूँ जो इतना भी न जानूँ?

तांगे वाला—मैं अपने मुँह से क्यों कहूँ?

१४२—जी हाँ महरबान।

मियाँ जी—(गाड़ीवान से)—देख बे, तू नालायक है। मुझे मालूम

है, कि जिनके नामके आगे 'खान' लगा रहता है वे नालायक और हरामजादे होते हैं। जैसे—नुतरखान, फीलखान, गाड़ीखान आदि। गाड़ीखान—जी हाँ, महरखान।

१४३—खुदा आपको दो हजार जूते दे।

एक दिन बीरबल के जूते सभा में चोरी चले गये तो जाते समय अकबर ने कहा, अच्छा हमारी तरफ से इनको दो जूते दो।"

बीरबल—(जूते पहिन कर चलते हुये) खुदा आपको दोनों जहान में हजार जूते दे।

१४४—आधा बाप आपका।

"जमीन की ओर देखकर क्यों चलते हो ?"

मेरा बाप खो गया है।"

'यदि ढूँढ दूँ तो क्या दोगे ?"

आधा (बाप) आपका।"

१४५—प्रमाण दो।

जज—(फैरी से सफाई का प्रमाण माँगते हुये) अच्छा जो कुछ तुम्हारे पास हो पेश करो।

फैरी—हुजूर जो कुछ था वह पहिले ही वकील साहब को भेंट हो चुका।

१४६—एक सेर मटे दीजिये।

ग्राहक—सेठ जी एक रुपये के पैसे दे दो।

सेठ—कुछ सामान लो।

ग्राहक—अच्छा एक सेर मेट दे दो।

१४७—पट्ठा चढ गया होगा।

एक बार बेगम साहिबा के शरीर में पीडा हो रही थी। बादशाह ने बीरबल से कारण पूछा।

बीरबल—हुजूर, कोई पट्ठा चढ़ गया होगा।

१४८—अच्छा मास्टर मिल गया होगा।

शिक्षक—तुम बडे गधे हो। तुम्हारी उम्र में मै मजे से पुस्तकें पढ़ सकता था।

विद्यार्थी—आपको अच्छा मास्टर मिल गया होगा।

१४९—मेरा दूध पी लेना।

एक खाँ साहिब खुद के लिये और बीबी के लिये अलग २ दूध लाया करते थे।
एक दिन खाँ साहब के हिस्से का दूध बिल्ली पी गई।

खाँ साहब—(चिल्लाकर) मै अब क्या पिऊँगा?

बीबी—रज न कीजिये, आज आप मेरा दूध पी लेना।

१५०—ईमानदारी उठ गई।

"ससार से ईमानदारी उठ गई?"

"आपने कैसे जाना?"

"कल मैंने एक नौकर रखा था और वह कल ही मेरा नया बैग लेकर चपत हुआ।"

"बैग कितने को खरीदा था?"

"रेल में एक मुसाफिर भूल गया और उसे मै उठा लाया था।"

१५१—एक रुपया दो।

एक सराय में एक यात्री गया; पर दरवाजा बन्द पाकर चौकीदार को पुकार कर कहा,—

"फाटक खोल दीजिये, मैं अन्दर आ जाऊँ।"

चौकीदार—रात अधिक हो गई है, दरवाजा बन्द हो गया है पर यदि १) दो तो खोल सकता हूँ।

यात्री—अच्छा एक रुपया दे दूँगा किवाड़ तो खोलो।

चौकीदार—नहीं रुपया किवाड़ की दरार में से डाल दो, तभी खोलूँगा।

यात्री ने ठंड से व्याकुल हो एक रु० किवाड़ की दरार में से डाल दिया। इससे किवाड़ खुला और वह सामान ले भीतर गया, पर इसने चौकीदार से कहा कि मेरी एक पेटी बाहिर रह गई है उस को आओ तो कुछ और दे दूँगा। ज्योंही चौकीदार बाहिर गया त्योंही उसने भीतर से किवाड़ लगा लिया। जब चौकीदार को पेटी न मिली तो वह लौटा, पर वहाँ तो किवाड़ लगा गये थे। इससे वह बोला किवाड़ खोलो।'

यात्री (भीतर से)—रात अधिक हो गई है इससे दरवाजा बन्द हो गया है पर यदि एक रु० दो तो उसे खोल सकता हूँ।

चौकीदार ने ठंडसे मरते हुए कहा—अच्छा दे दूँगा खोलो।

यात्री—नहीं पहिले दरार में से रुपया डाल दो।

ठंड के कारण चपरासी लाचार हो गया और किवाड़ के दरार में से वह रुपया फेंक दिया। यात्री ने दरवाजा खोल दिया।

१५२--अंग्रेज को बनाया।

एक अंग्रेज साहब किसी मालगुजार के यहाँ जाना चाहते थे। गाँव के पास एक मसखरा मिला।

साहब—"यहाँ का ठेकेदार कौन है ?

मसखरा—यहाँ तो बहुत ठेके वाले हैं, कोई ठेका रखाये है, कोई दाढ़ी रखाये हैं, और कोई पखे रखाये हैं। किसे बताऊँ ?

साहब—हम यह नहीं पूछते, यह बताओ कि यहाँ का अमली कौन है ?

मसखरा—हुजूर यहाँ अमली बहुत से हैं। कोई गाँजे का (नशेबाज) अमली है, कोई भाँग का, कोई अफीम का और कोई शराब का। मैं किसे बताऊँ ?

साहब—नहीं, यहाँ का ठाकुर कौन है ?

मसखरा—हुजूर एक होते तो बताऊँ। पुराने मन्दिर में ठाकुर हैं, पुरोहित जी के घर ठाकुर हैं। और ब्राह्मणों के तो घरों घर ठाकुर हैं।

साहब—(नाराज होकर) यू , फूल, हम पूछते हैं कि यहाँ का राजा कौन है ?

मसखरा—साहब, यहाँ तो घर घर के राजा हैं। कल एक चमार मर गया उसकी स्त्री रो, रो, कर कह रही थी, "हाय मोरे राजा, हाय मोरे राजा!" इससे मुझे मालूम हुआ है, कि अपने अपने घर के सब राजा है। यह सुन अंग्रेज वहाँ से नाराज होकर चला गया।

१५३—देता ही रहता हूँ।

फकीर—(मास्टर से) बाबू तू तो कुछ देता ही नहीं।

मास्टर—कुछ कैसे नहीं देता, रोज लड़कों को सजा देता हूँ। रोज छुट्टी देता हूँ, रोज नया सबक देता हूँ, रोज मक्खी में पानी देता हूँ, धोती को काछ देता हूँ, मूँछों पर ताव देता हूँ, किसी के लेने देने में भी माँची मार देता हूँ, और कामों को ताला देता हूँ। क्या कैसे नहीं देता।

१५४—सूर्य को जल पहुँच गया।

एक ब्राह्मण गङ्गास्नान करके सूर्य को जल दे रहा था, इतने में एक ईसाई ने पूछा "क्या यह जल सूर्य को पहुँच गया?"

यह प्रश्न सुनकर ब्राह्मण उस ईसाई के बाप दादों को गालियाँ देने लगा।

ईसाई—(नाराज होकर) तुम उनको गालियाँ क्यों देते हो?

ब्राह्मण—वे यहाँ नहीं हैं, न जाने कहाँ हैं। क्या उनको गालियाँ पहुँच गईं?

१५५—बैल बाप है।

ईसाई—क्यों जी गाय तुम्हारी माँ है?

हिन्दू—जी हाँ!

ईसाई—तो बैल तुम्हारा बाप हुआ!

हिन्दू—अवश्य।

ईसाई—लेकिन वह तो कल मैला खाता था।

हिन्दू—वह ईसाई हो गया होगा ।

१५६—पादरी को उत्तर ।

एक घमडी पादरी–(मित्रो से) हाय, मुझे ऐसे गधों से आज काम पड़ा जो ।

एक मित्र–(बीच ही में) तभी तो आप कह रहे थे, 'ऐ मेरे प्यारे भाइयो" ।

१५७—डिस्ट्रिक्ट जज की अक्ल ।

डिस्ट्रिक्ट जज–(वादीसे) जब तुम्हें उसने खेत में मारा, तब वहाँ कौन खडा था ?

वादी—और तो कोई नहीं थे, ज्वार और बाजरा खेत में खडे थे ।

जज—(जो ताजी विलायत थे) उन्हें गवाही मे बुलाओ । हम हाल पूछेंगे ।

वादी—हुजूर वे तो कट गये ।

जज—कहाँ की लडाई में कट गये ? उन्हें किसने मार डाला ?

वादी–हुजूर, ज्वार बाजरा आदमी नहीं होते, वे तो अनाज के पौधे होते है। वे पकने पर काट लिये गये। वे कैसे आ सकते हैं ?

(जज साहब अपनी ल्याकत पर शर्मा गये)

१५८—तपती में की मेंड़की ।

एक आर्यसमाजी तापती में स्नान करने गया । उसे देख

एक ब्राह्मण वहीं की रेत उठाकर उसे देते हुये बोला।

'मन में कर विश्वास, तुम लीजे यजमान।
तपती में की रेत को, गङ्गा जल कर जान॥"

आर्यासमाजी ने झट एक मेंढकी पकड़ कर, ब्राह्मण को दे हुये कहा —

"अति हर्षित हो लीजिये, पण्डित परम सुजान।
तप्ती में की मेंढकी, कपिला करके जान॥'

(पण्डित जी शर्मा गये)

१५९—मजदूर को मजदूरी।

एक दिन अकबर बादशाह अपनी बेगमो के साथ बगीचे में फूल चुन रहे थे। बीरबल भी कुछ देर बाद आकर फूल चुनने लगे।

बेगम—(बादशाह से बीरबल को फूल चुनते देख) यह मजदूर बिना कुछ ठहराये ही काम कर रहा है।

बीरबल—(यह सुनकर) हुजूर एक मजदूर पहिले से ही काम कर रहा है, जो आप उसे देंगी वही मुझे भी देना।

१६०—कौन मनहूस है?

एक राजा ने एक मनुष्य की परीक्षा करके जाना कि यह पूरा मनहूस है। यदि इसका सबेरे मुँह देख लिया जावे तो दिन भर अन्न न मिले।

राजा—(ऐसा सोच) यह पूरा मनहूस है। मेरे, कारण आज मुझे दिन भर भोजन ही न मिला। इससे इसे प्राण दंड देना ठीक होगा।

मनहूस—श्रीमान्, मेरे देखने से तो आपको दिन भर भोजन ही नहीं मिला, पर आपके देखने से तो मुझे फाँसी की नौबत आई। अब बताइये कौन पूरा मनहूस है?

१६१--नालायक से काम पड़े तो।

अकबर—बीरबल, यदि नालायक से काम पडे तो क्या करना?

बीरबल—कल बताऊँगा। (ऐसा कह घर चले गये और दूसरे रोज एक आदमी के साथ आये) बादशाह ने उस आदमी से कई प्रश्न किये पर उसने उत्तर एक का भी न दिया।

अकबर—(उत्तर न सुनकर) यह तो बोलता ही नहीं, प्रश्न का उत्तर कैसे देगा?

बीरबल—वह तो आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा है।

अकबर—सो कैसे?

बीरबल—यही कि, नालायक से काम पडे तो न बोलना। (बादशाह शर्माये)

१६२—मनुष्य के भूखे हैं।

एक लड़का अपने बहिनोई के साथ भावी ससुराल को वर दिखाइ में गया, क्योंकि उसे देखने को बुलाया था।

एक—(लड़के को देखकर) देखो साहब, हम किसी का धन दौलत नहीं चाहते और न घर बार ही। हम तो आदमी के भूखे हैं।

दूसरा—पर भाई लड़का तो कर्रा (कडे मिजाज का) मालूम होता है।

मनोर्ई—अजी साहब, आपको करें छड़के से क्या करना आप तो दूसरे मरम मरम लोगों को सा जना।

१६३—गोतेबाज नाई।

एक नाई मालिक के साथ ससुराल (मालिक की) गया। उसे सेमई और दूध परोसा गया। दूध पतला था। खाते खाते दूध में सिमई कम रह गई और हाथ में न आने लगीं। तो वह कमर कस कर थाली के पास खड़ा हो गया।

एक—(उसे खड़ा और कमर कसते देख) क्यों खवास क्या करते हो?

नाई—कुछ नहीं मालिक, एक एक सिमई को गोते लगाकर न पकड़ लूँ तो मेरा नाम नहीं।

१६४—गधे तमाखू नहीं खाते।

बीरबल तमाखू खाते थे अकबर नहीं। एक दिन अकबरने तमाखू के खेत में गधे को दूध चरते देखा, वह तमाखू नहीं चरता था।

अकबर—(बीरबल से) देखो, तमाखू कितनी खराब वस्तु है, गधे तक उसे नहीं खाते।

बीरबल—सच है हुजूर गधे तमाखू नहीं खाते।

१६५—यहन दीजिये।

अकबर के हाथ से एक माला यमुना में गिर गई तो वह बीरबल से बोला "माला पकड़।

वीरबल—वहन दीजिये ।

१६६—परदा न था ।

एक मित्र—सितार क्यों न बजा, स्त्री क्यों न नहाई ?

दूसरा—परदा न था ।

१६७—फेरा नहीं ।

"पान सड़ा क्यों, घोड़ा अड़ा क्यों ?"

"फेरा नहीं"

१६८—लोटा न था ।

"गधा उदास क्यों ? ब्राह्मण प्यासा क्यों ?"

"लोटा नहीं ।"

१६९—गला नहीं था ।

मॉस क्यों न खाया, गाना क्यो न गाया ?"

"गला नहीं"

१७०—दिमाग नहीं होता ।

अकबर बुढ़ापे में खिजाब लगाया करता था । एक रोज उसने वीरबल से पूछा, "क्यों वीरबल खिजाब से दिमाग को नुकसान तो नहीं ?"

वीरबल—बिल्कुल नहीं; क्योंकि खिजाब लगाने वाले के दिमाग (सदसद विवेक) ही नहीं होता ।

१७१—हथेली में बाल क्यों नहीं ।

अकबर—वीरबल, मेरे हाथ में बाल क्यों नहीं है ?

बीरबल—आप दान देते हैं इससे हथेली के सब बाल गिर गये।

अकबर—तो तुम्हारे हाथ में क्यों नहीं है?

बीरबल—मैं बहुत इनाम पाता हूँ इससे मेरे हाथ के बाल झड़ गये।

अकबर—और दरबारियों के हाथ में न होने का क्या कारण है?

बीरबल—ये इनाम न पाने के कारण मुझसे जलते हैं और हाथ मलते रह जाते हैं इससे इनके हाथ में बाल नहीं रहे।

१७२—हिन्दू ही रखते हैं।

अकबर—क्यों बीरबल कल दरबार में किस कारण से नहीं आये?

बीरबल—एकादशी का व्रत था।

एक मुसल्मान दरबारी—एकादशी खुदा की जोरी है न!

बीरबल—पर उसे रखते हिन्दू ही हैं।

—१७३—पत्नी का गाना।

स्त्री—मैं जब गीत गाती हूँ तब आप पड़ोसी के यहाँ क्यों जा बैठते हैं?

पति—इस लिये कि पड़ोसियों को यह सन्देह न हो कि मै तुम्हें मार रहा हूँ।

१७४-गर्मी और ठंढ का अन्तर।

शिक्षक—गर्म और ठंढा में क्या अन्तर है?

विद्यार्थी—गर्मी से पदार्थ फैलते हैं और ठंढ में सिकुड़ते हैं।

शिक्षक—उदाहरण दो ।

विद्यार्थी—गर्मी मे दिन फैल कर वडे हो जाते हैं और ठण्ड में सिकुडकर छोटे हो जाते हैं ।

१७५—क्यों गैरहाजिर थे ।

शिक्षक—ठीक वताओ, जो कहा वह ठीक नहीं जँचता, कि तुम कल क्यों गरहाजिर थे ?

विद्यार्थी—वहुत सोचा, पर इससे अच्छा न सोच सका ।

१७६—आठ में से तीन गये कुछ नहीं वचा ।

मास्टर—मोहन, टेविल पर आठ लड्डू हैं ।

लडका—(वीच ही में) घी के या तेल के ?

मास्टर—घी, तेल मत वोल, सुन ८ में से ३ तुम्हारी वहिन ने खा लिये तो ।

मोहन—(वीच ही में) गुरुजी, उसका नाम मत लेओ वह सव खा जायगी ।

मास्टर—फिर वोला, वता आठ में से तीन लड्डू वह खावे टेविल पर कितने वचेंगे ?

मोहन—कुछ नहीं ।

मास्टर—क्यों ?

मोहन—क्यों कि वाकी मै खा लूँगा ।

१७७—औरगजेब कब पैदा हुआ ?

शिक्षक—गोपाल, औरगजेव कव पैदा हुआ था ?

गोपाल—गुरुजी, मैं कैसे जान सकता हूँ उस समय तो मैं माँ के पेट में भी न आया था।

१७८—आप कुछ नहीं कर सकेंगे।

वकील—डाक्टर साहब इस बच्चे को कौनसी बीमारी है?

डाक्टर—आप वकील जान सकते हैं, पर डाक्टरी नहीं। यदि बता भी दूँ तो आप कुछ न कर सकें।

कुछ दिन बाद डाक्टर साहब एक मुकदमा लेकर वकील के पास गये और बोले।

डाक्टर—वकील साहब यह मुकदमा कैसा है?

वकील—आप डाक्टरी जानते हैं, वकीली नहीं। यदि बता भी दूँ तो आप क्या कर सकेंगे?

१७९—जेल में।

एक मित्र—आजकल डाक्टर साहब कहाँ हैं?

दूसरा—मोतीहारी जेल में।

पहिला—ऐं, जेल में! कब से?

दूसरा—छै माह से।

पहिला—पर वे तो ऐसे आदमी नहीं थे। क्यों गये?

दूसरा—अरे भाई, उन्हें सजा नहीं हुई, वे वहाँ के जेल के डाक्टर हैं।

१८०—चार में से एक गया पाँच।

पुत्र—पिताजी चार में एक गया क्या बचा?

पिता—तीन बचे ।

पुत्र—नहीं, पाँच बचे ।

पिता—वाहरे गधे, कैसे बचे पाँच ।

पुत्र—एक चौकोन कागज में चार कोने हैं, यदि एक कोना कैंची से काट दें तो पाँच न हो जायँगे ।

१८१—तीसरे दर्जे का टिकिट ।

"बाबू जी, तीसरे दर्जे का टिकिट दीजिये ।"

"कहाँ का ?"

"कहीं का भी ।"

"तब तक टिकिट नहीं मिल सकता, जब तक यह न बताओगे कि कहाँ जा रहे हो ।"

"अच्छा मैं प्रेमिका से मिलने जा रहा हूँ, अब तो दे दीजिये ।"

१८२—आँख सिर में है ।

एक यात्री रेल के डब्बे में घुसा, पर भीड बहुत थी, इससे उसका जूता एक आदमी के पैर पर रख गया इससे वह क्रोध से बोला, "क्यों? तेरी आँखें कहाँ हैं ।"

यात्री—सिर में हैं और कहाँ हैं ?

आदमी—क्या तुझे मेरा पैर नहीं दिखा ?

यात्री—तुम्हारा पैर मोजे और बूट के अन्दर था । मैं उसे कैसे देखता ।

१८३—उत्तम जहर ।

एक्टर—जिस समय पार्टी (पगत) का चित्र लिया जावे उस समय मुझे उत्तम शराब होना चाहिये ।

बायोस्कोपर—तो मृत्यु के दृश्य की फोटो (फिल्म) होते समय तुम्हें उत्तम पाहर की जरूरत होगी!

१८४—मोजे का रङ्ग पक्का है।

गाहक—(दूकानदार से) आप तो कहते थे कि मोजे का रंग पक्का है पर उसका रंग तो मेरे पैरों में लग गया जिसे छूटते १५ दिन हो गये छूटता ही नहीं।

दूकानदार—तो रंग के पक्के होने का प्रमाण इससे अधिक और क्या हो सकता है!

१८५—आपका गधा भाई।

सिपाही—(बहुत से सिपाहियों में से एक सिपाही लड़के को गधा ले जाते देखकर) तुम अपने भाई को बाँधकर क्यों ले जाते हो?

लड़का—जिससे कि यह आप लोगों में मिल न जाय। नहीं तो उसे पहिचान कर निकाल लेना बहुत कठिन हो जायेगा।

१८६—डंडों से मारूँगी।

लड़का—माँ यदि कोई फुलवारी तोड़ डाले तो तुम क्या करोगी?

माँ—मै तोड़ने वाले को डंडों से मारूँगी।

लड़का—उसे पिता जी ने ह०० ही में तोड़ा है।

१८७—गिर जायेगा।

एक जाट रेल में से उतर कर स्टेशन के एक नल में पानी पीने लगा इतने में गाड़ी चल दी। तो उसने भाग कर उसे पकड़

की ओर चढ़ने लगा। एक पोटर ने उसे नीचे खींचते हुये यह कहा, "अबे साले गिर जावेगा।" इतने में गार्ड का डब्बा पास आया जिसमें गार्ड साहब झण्डी लिये चढ रहे थे। जाट ने उनका झण्डी वाला हाथ पकड़ कर नीचे खींच लिया और कहा, "अबे साले गिर जायेगा।"

१८८—खाजा।

राम—भाई श्याम, यह कौन सी मिठाई है ?

श्याम—खाजा।

राम—(उसे झट खा गया)

श्याम—हैं, हैं, यह क्या करते हो ?

राम—आपही ने तो कहा था, कि "खाजा।"

१८९–तीन तक टिकिट माफ।

एक स्त्री—(टिकिट वावू से) क्या आप वच्चों का टिकिट भी लेते हैं ?

वावू—तीन से कम वाले माफ हैं।

स्त्री—तव तो मुझे किराया न देना पडेगा, क्यो कि मेरे तो दो ही वच्चे हैं।

१९०–पता चिट्ठी पर लिखा है।

कृष्ण—पोस्टमास्टर सा०, मेरे नाम की चिट्ठी आई है दे दीजिये।

पो० मा०—तुम्हारा नाम और पता क्या है ?

कृष्ण—जी, चिट्ठी पर ही तो लिखा है, पढ़ लीजिये।

१९१–दूर चला गया होगा।

चचा—(भतीजे के विषय में) क्यों भौजी, क्या वह चल सकता है?

भौजी—हाँ वह तो कई माह से चल रहा है।

चचा—शाबाश! तब तो वह बहुत दूर चला गया होगा।

१९२–जमाने की चाल उल्टी है।

पिता—बेटा जमाने की कैसी चाल है? जानते हो?

पुत्र—हाँ पिता जी।

पिता—तो बताओ पुत्र अच्छा हो तो पिता का आचरण कैसा होना चाहिये?

पुत्र—बिलकुल खराब दो कौड़ी का।

पिता—कैसे?

पुत्र—क्यों कि, जमाने की चाल उल्टी है।

१९१–अंधे मत बनो।

"मुन्नू यह क्या हो रहा है"?

"यार अंधे मत बनो अभी तो दिन है"

"मैं तो अन्धा नहीं हूँ"।

"तो फिर पूछते क्यों हो?

१९४–धाय भाई।

अफसर—(सिपाही से) क्या तुम्हारा कोई धाय भाई नहीं है?

वीरबल—जी हाँ, है। पर छोटा है।

अकबर—उसे यहाँ कभी लाये नहीं ?

वीरबल—कल लाऊँगा (दूसरे दिन गाय के बछडे को सजा कर ले आये,)

अकबर—(हँस कर) क्या यही तुम्हारा धाय भाई है ?

वीरबल—जी हाँ।

अकबर—क्यों कर ?

वीरबल—इसी की माँ का मैं दूध पीता हूँ।

१९५--दादः हुजूरस्त।

अकबर—(वीरबल को घोडे पर जाते देख) "ई अस्पपिदर शुमास्त" (इसके दो अर्थ हैं–१ यह तुम्हारे बाप का घोडा है। २ यह घोडा तुम्हारा बाप है)

वीरबल—दाद हुजूरस्त (इसके भी दो अर्थ हैं–१ आप ही का दिया हुआ है। २ आपका दादा है)

१९६–ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

एक समय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्टेशन पर बिल्कुल सादे लिबास में घूम रहे थे। गाडी से एक अपटूडेट साहब उतरा और उन्हें कुली समझा।

साहब–(कुली समझ कर) तुमने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का घर देखा है ?

ईश्वरचन्द्र–हाँ साहब देखा है।

साहब–हमारा सामान उनके घर ले चलो।

ईश्वरचन्द्र उनका सामान लेकर उनके आगे हो लिये और दरवाजे पर आ कर सामान रख दिया।

साहब—(पैसे देते हुए) लो चार पैसे।

ईश्वरचन्द्र—नहीं साहब।

साहब—अच्छा लो ६ पैसे लेलो।

ईश्वरचन्द्र—नहीं, नहीं, साहब।

साहब—(क्रोध में) और क्या चाहता है?

ईश्वरचन्द्र—आप अपने काम के करने में शरमाया न करें, ईश्वर चन्द यही चाहता है। (यह सुन साहब लज्जित हुये और क्षमा माँगी।)

१९७–जूतों का प्रताप।

एक शहर में चार मित्र थे। वे हर माह बारी बारी से आपस में पार्टी दिया करते थे। एक दिन चौथे की बारी आई। उसके पास पैसे न थे।

चौथा–(सबसे) मेरे पास पैसे नहीं हैं, मैं, पार्टी कैसे दूँ?

सब–(सबने उसपर दबाव डाला) नहीं, पार्टी देना होगा।

चौथा–(दबाव में पड़कर) अच्छा कल दूँगा।

दूसरे दिन तीनों चौथे के घर गये और नीचे जूते उतार ऊपर के मकान में जा गपसप करने लगे। बेचारा चौथा बड़ी उलझन में पड़ा और विचार करके उन तीनों मित्रों के जूते गिरवीं रख कर मिठाई लाया और सबको खिलाई।

एक मित्र—(खाते समय) क्यों जी तुम तो कहते थे कि पैसे नहीं है, अब यह सामान काहे से लाये ?

गरीब मित्र—यह सब आपके ही जूतो का प्रताप है।

सब—(भोजन करने पर तथा और अधिक परसने पर) नहीं नहीं अब नहीं चाहिये।

गरीब मित्र—नहीं, लेना पडेगा, सब आप ही का तो है।

भोजनोपरान्त जब सब नीचे आये तब जाते समय अपने २ जूते न देख कर "हमारे जूते कहाँ हैं ?"

गरीब मित्र—मैं पहिले ही तो कह चुका, कि आपही के जूतों का प्रताप है, वह आपही का माल था।

उसने बाकी सब हाल उन्हें सुनाया और उसने पैसे देने पर उनके जूते वापिस लाकर दे दिये।

१५८–अंग्रेजी इनाम।

एक रईस अपनी उदारता के कारण नौकरो को इनाम जरा जरासी बातों पर दिया करते थे। एक दिन रईस ने एक नौकर को बगीचे से जल्दी फल लाने को कहा। और बताया, कि यदि जल्दी आओगे तो अंग्रेजी इनाम देंगे। नौकर यह सोच कर कि जब देशी इनाम में तो इतना मिलता है तो अंग्रेजी मे तो और भी अधिक मिलेगा। वह बहुत ही शीघ्र फल लेकर आया।

रईस—थैंक्स (धन्यवाद)

नौकर—क्या हुजूर मेरा कार्य पसद नहीं हुआ ?

साहब—पसंद आया और मुझे अंग्रेजी इनाम चैंक्स भी दे दिया।

नौकर—(यह समझ कर कि अंग्रेजी इनाम में कुछ नहीं मिलता) मुझे अंग्रेजी इनाम नहीं चाहिये, क्योंकि मेरे घर में इसे रखने की जगह नहीं है आप तो मुझे देशी इनाम ही दें।

१९९—मैं गूँगा हूँ।

एक भिखारी गूँगे होने का बहाना करके भीख माँगता था। उसने अपने गले में एक पट्टा टाँग लिया था, जिसमें लिखा था कि— यह मनुष्य गूँगा है और बड़ा गरीब है, इसे दान देना पुण्य है।"

एक दिन वह एक स्थान पर गले में लटके पट्टे को दिखा कर भीख माँग रहा था। पर वहाँ एक ऐसा मनुष्य भी बैठा था जो उस ढोंगी को जानता था। वह मनुष्य बोला कि इसे भीख मत दो। यह गूँगा नहीं है। धोखेबाज है।

इस प्रकार की बात सुन गूँगे को बड़ा गुस्सा आया और वह क्रोध में कहने लगा "वाह मैं किसे गूँगा नहीं हूँ!"

२००—हाँ, नहीं, जरूर।

एक साहब के नौकर ने तीन शब्द सीख लिये थे। यस=हाँ। नो=नहीं। आफकोर्स=जरूर। परन्तु वह उन शब्दों का अर्थ नहीं समझता था।

एक दिन साहब की घड़ी चोरी गई। तो उन्होंने नौकर से अंग्रेजी में पूछा —

क्या तुमने हमारी घड़ी चुराई है ?

नौकर—Yes, sir यस सर (हाँ महाशय)

साहब—उसे लौटा दो।

नौकर—No, sir नो सर (नहीं महाशय)

साहब—मै तुमको पीटूँगा।

नौकर—आल राइट (जरूर)

यह सुन साहब ने उसे बहुत पीटा, पर इसने घडी नहीं दी। तब इसे पुलिस के हाथ में दे दिया। वहाँ जाँच करने पर मालूम हुआ कि इसने घडी नहीं चुराई। लेकिन बिना समझे अंग्रेजी में उत्तर देनेसे इसे ऐसा कष्ट उठाना पडा। इससे हमें चाहिये कि ऐसे शब्द का प्रयोग बोलचाल में न करें जिनको हम ठीक २ न समझते हों।

२०१--लडके को चिडिया ले गई।

एक मनुष्य चार सोने की ईंटें अपने मित्र के घर रख बाहिर गया और जब कुछ वर्षों में लौट कर उसने ईंटें माँगी तो वह कपटी मित्र बोला—"भाई आपकी ईंटों को चूहे खा गये। अब मैं कहाँ से दूँ!" जब कई बार माँगने पर वे ईंटें नहीं मिलीं, तब वह समझ गया कि मेरा मित्र बेईमान हो गया है। अब उसके लिये युक्ति करूँ। उसने कुछ सोचकर कहा—भाई, मैं यात्रा से खिलौने लाया हूँ। अपने बच्चेको भेज दो। कुछ उसे भी दे दूँ। कपटी ने अपने बालक को उसके घर भेज दिया। इसने बालक को बिना तकलीफ़ के एक कमरे में बंद कर दिया।

जब शाम तक बालक घर न गया तो उसका पिता आया। और बोला—

"मेरा लड़का आपके साथ आया था पर अभी तक घर नहीं पहुँचा। कहाँ है?"

आदमी—उसे चिड़िया उड़ा ले गई।

कपटी मित्र— कहीं चिड़िया लड़के को उड़ा सकती है?

आदमी—कहो चूहे सोने की ईंटें खा सकते हैं!

२०२—मुझे पसंद होगा सो दूँगा।

साधु—(गृहस्थ से) यदि मैं आपको धन से भरा बड़ा बनाऊँ तो मुझे क्या दोगे?

गृहस्थ—जो कुछ मुझे पसंद आयगा।

जब साधुने उसे बड़ा बनाया तो वह गृहस्थ सब धन हड़पने की इच्छा करने लगा। साधुने थोड़ा धन माँगा पर वह बोला—ये मिट्टी का ढेला आप लेव। मुझे यही पसंद है कि आप को यह दूँ। यह टका सा उत्तर सुन साधु न्यायालय में गया। न्यायाधीशने सब बातें सुनने पर विचारा और गृहस्थ से पूछा तुम बड़ा और धन में से क्या पसंद है?

गृहस्थ—धन।

न्यायाधीश—अच्छा तो यह सब साधु को ददो क्योंकि तुमने प्रतिज्ञा की थी कि जो कुछ मुझे पसंद होगा, सो इसे दूँगा।

साधुको धन दिया गया और गृहस्थ मुँह देखता रह गया।

२०३-मेरे पैर अच्छे हैं।

एक समय अकवरशाह और वेगम में हास्य-विवाद छिड गया। दोनों अपने २ पैरो को अच्छा वताते थे। इससे वीरवल को निर्णय के लिये कहा गया।

वीरवल-वेगम साहिवा के पैर वहुत सुन्दर हैं पर वादशाह के पैर सचमुच में वहुत सुन्दर हैं।

वीरवल का निर्णय सुनकर वेगम को वहुत क्रोध आया, क्योंकि उसके पैर वादशाह के पैर से अच्छे थे। पर क्रोध छिपा-कर उसने कोपाध्यक्ष से कहा-वीरवल को पचास जोडे देना।

वीरवल वेगम के कटाक्ष को समझ गया और वोला-"वेगम साहवा, कोपाध्यक्ष आपके मुँह पर तो जोड़ा देने को कहता है,पर पीछे मिलने की आशा नहीं।

वेगम-वीरवल! क्या? क्या कह रहे हो?

क्या कोपाध्यक्ष हमारे मुखपर जूता (जोडा) मारना स्वीकार करता है?

वीरवल-पर सरकार ने मुझे जोडे या जूते देने की आज्ञा कैसे दी?

वेगम-(वात वदलते) मैंने तो तुम्हें कपडे के जोडे (जोडियां) देने को कहा था तुमने जूते मारना कैसे समझ लिया?

वीरवल-मैंने भी तो कोपाध्यक्ष का स्वीकार करना कहा था आपने अपने मुँह पर जूते पडना कैसे समझ लिया?

२०४-राम लंका लूट चुके।

एक सुनार की बहिन अपने ससुरे से सोना लाई और भाई को गहना बनाने के लिये कहा। बहिन वहीं बैठ गई। पिता भी बैठा था। पिता ने सोचा कि शायद लड़का (उसकी) बहिन का सोना न चुराएगा। पर यह प्रगट कह भी नहीं सकता था। इससे उसने गुप्त संकेत में कहा—

हे राम आपकी दृष्टि सब पर बराबर है।

सुनार ने समझा कि शायद लड़का मेरा इशारा समझ नहीं रहा है। इससे उसने कई बार उसी उसी वाक्य को कहना शुरू किया। तब लड़का चिढ़कर बोला—

पिता जी आप ऐसा क्यों कहते हैं। राम तो लंका पहिले ही लूट चुके।

२०५-अकबर भारत।

अकबर ने बीरबल से कहा कि हमारे लिये 'अकबर भारत' बनाओ। बीरबल ने उत्तर दिया कि ऐसा बड़ा ग्रन्थ बनाने में एक लाख रुपये और दो माह का समय लगेगा। बादशाह ने दोनों बातों की स्वीकृती दे दी। अब बीरबल रुपये लेकर चले आये और धन सत्कार्यों में लगा दिया। समय बीतने पर उसने कोरे कागजों की एक मोटी किताब बनाई और उसे अच्छे कपड़े में लपेट कर दरबार में प्रवेश किया।

बीरबल—हुजूर ग्रन्थ तैयार है। केवल एक बात बेगम साहिबा से पूछकर लिखना है।

अकबर—अच्छा, पूछकर लिख लो और हमें फिर ग्रन्थ जल्दी सुनाओ।

बीरबल—(प्रधान बेगम से) सरकार, बादशाह ने 'अकबर भारत' नामी यह ग्रन्थ लिखवाया है। वे महावीर अर्जुन बने हैं। और तुमको श्रेष्ठतम समझकर द्रोपदी बनाया है। आपकी इस विषय में क्या राय है? क्योंकि यही ग्रन्थ में लिखना बाकी है।

बेगम—यह तो बादशाह ने बहुत अच्छा किया है।

बीरबल—जब आप द्रोपदी बनना मजूर करती हैं तो आपको कृपाकरके एक बात और बताना पडेगी।

बेगम—कौनसी?

बीरबल—यही कि, द्रोपदी के एक साथ पाँच पति थे। आपके एक बादशाह हैं। चार और कौन हैं?

यह सुन बेगम आग बबूला हो गई और उसने किताब को जलवाकर बीरबल को निकाल दिया।

बीरबल ने उदासी के साथ सब हाल बादशाह को सुनाकर पूछा—"यदि आप कहें तो फिर से 'अकबर भारत' लिखूँ।"

अकबर—बस रहने दो।

२०६—दौलत हाजिर है।

एक सेठने अपने दौलत नाम के नौकर को हटा दिया। नौकर फिरसे नौकरी पाने की इच्छा करने लगा। उसने एक उपाय सोचा। लक्ष्मी पूजन के दिन धन की पूजन के पश्चात् सब लोग भीतर भोजन कर रहे थे। इतनेमें दौलत ने बाहिर से आवाज लगाई।

"सेठजी दौलत हाजिर है। रहे कि जाय।"

सेठ नौकर को पहिचान गया, पर मुहूर्त के दिन को सोचकर बोला, "दौलत हमारे यहाँ सदा रहे।"

२०७—बैंगन।

रईस—क्यों जी, बैंगन तो बहुत अच्छा होता है।

चापलूस—जी हाँ तभी तो इश्वरने उसके सिर पर हरा मुकुट रखा है।

रईस—पर उसका साग बादी करता है।

चापलूस—जी हाँ, तभी तो उसका नाम बेगुन पड़ा है। रईस—(क्रोधसे) क्या जी अभी तो तुम उसे अच्छा कहते थे और अब बुरा बताने लगे।

चापलूस—हुजूर मैं आपका नौकर हूं या बैंगन का?

२०८—नाव लाने दो।

एक दिन लाल बुझक्कड़ अपने गाँव वालों के साथ तीर्थ जा रहा था। रास्तेमें एक आदमी मिला तो उसका उसने नाम पूछा।

आदमी—मेरा नाम गङ्गा है।

लाल बुझक्कड़—तेरे बाप का क्या नाम है?

आदमी—यमुना।

फिर उस आदमी ने और पूछने पर माँ का नाम सरस्वती और बहिन का नर्मदा बताया। यह सुन लाल बुझक्कड़ साथियों से बोला—जरा ठहरो मुझे नाव का प्रबन्ध करने दो। नहीं तो सबके सब यहीं बह जायेंगे।

२०९—पीर बवर्ची, भिस्ती, खर।

अकबर—ला वीरन कोई ऐसा नर।

पीर, बवर्ची, भिस्ती, खर।

बीरबल—(दूसरे दिन एक ब्राह्मण को पेश करते हुए) ब्राह्मण को सब पूजते है इससे यह पीर है। यह रसोइये का काम भी करता है इससे बवर्ची है। घरो में पानी भरने का काम ब्राह्मण करते हैं इससे यह भिस्ती है और यात्रा में सामान भी उससे ढुलवाते हैं इसमे यह गधे का काम भी करता है।

२१०—बेगम साहबा के आगे अपनी स्त्रीको भूल गये।

अकबर—(बीरबल से) क्यो जी, तुम्हारी बीबी तो बहुत ही सुन्दर है।

बीरबल—जी हाँ समझता तो मैं भी ऐमा ही था, पर जब से मैंने बेगम साहबा को देखा है, तब से उसे भूल गया हूँ।

२११—३६ घंटे की छुट्टी।

एक क्लर्क ने अपने साहब से विवाह में जाने के लिये ३६ घंटे की छुट्टी माँगी, जो साहब ने बडी खुशी से दे दी। पर जब आठवें रोज क्लर्क आया तो साहब बडे नाराज हुए और बिना छुट्टी के इतने रोज रहने पर जुर्माना करने लगे तो क्लर्क बोला—

"मैं एक भी दिन बिना छुट्टी के नहीं रहा।

साहब—मैंने तो ३६ घंटे की छुट्टी दी थी। सो डेढ दिन में आने के बदले तुम ७ दिन बाद आये हो।

नफर—साहब ज़रा सुनिये। मैं आपका प्रतिदिन ६ घंटे का नौकर हूँ न!

साहब—हाँ

नफर—इतवार तो छुट्टी का दिन है न?

साहब—हाँ, तो हुआ क्या!

नफर—मैंने आपसे १६ घंटे की छुट्टी, ६ दिन की ली थी। क्योंकि ६ घंटे के सिवा, दिन का सब समय मेरा है। इसके लिये छुट्टी लेने की ज़रूरत नहीं। रहा इतवार सो उस दिन छुट्टी रहती ही है। बस मैं १६ घंटे की छुट्टी मनाकर ठीक समय पर आया हूँ।

२१२–यारी नईं (नहीं है)।

"थोड़ी आगी दो, थोड़ी भाजी दो, ज़रा गोदी बिठाओ'।
१ २ ३

'यारी नहीं है।

उत्तर—१ जलाए नहीं।

२ मार्डी (बगीचा) नहीं है।

३ व छोटी (यारी) नहीं है।

२१३–म्युनिसिपल कमेटी से आमदनी के जरिये।

शिक्षक—गोपाल म्युनिसिपल कमेटी के आमदनी के जरिये बताओ!

गोपाल—मल फैंकने का टैक्स स्कूलों की फीस और इत्यादि....।

शिक्षक—(बीच ही में) श्यामलाल कैसा ?

गोपाल—वह स्कूल के सामान, जैसे डेस्क, खिडकी, कांच के सामान आदि तोडता है। तो उस पर जुर्माना होता है। बस यह म्युनिसिपल की आमदनी है।

२१४–खूब विचारवान हो।

एक आदमी—(एक दूसरे से जो अपने लडके को अकारण पीटा करता था) क्यों भाई, इसे सबेरे से ही काहे को मारते हो ? इसने अभी इतना बडा कोई कुसूर तो न किया होगा।

दूसरा—यह रोज शिकायत लाता है और पिटता है, पर मैं आज बाहिर जा रहा हूँ, कल आऊँगा। और यह शामको शिकायत जरूर लावेगा, इससे इसे अभी पीट दूँ।

पहिला—वाह ! खूब विचार किया।

२१५–तीन बार।

एक आदमी—(एक मजदूर से) इन लकडी के दो खभों को मेरे घर तक ले चलो ! चार आने दूँगा।

मजदूर—नहीं साहब ६ आने दीजिये क्यो कि मुझे तीनखेप (Turn) करनी पडेंगी।

मनुष्य—तीन खेप क्यों ? दो ही तो होंगी।

मजदूर—नहीं जी, वे तो तीन ही होंगी क्योंकि मुझे तो तीन में ढोना पडेंगे।

२१६—पौने तीन आने।

एक धनी ने मजदूर से ११ पैसे देने को कह कर लकड़ी कटाना तय किया। पैसे देते समय धनी ने उसे एक दुअन्नी और तीन पैसे देकर कहा।

धनी—ले ये पौने तीन आने।

मजदूर—नहीं मालिक मुझे तो ११ पैसे चाहिये पौने तीन आने नहीं।

धनी—(दो एकअन्नी और तीन पैसे देते हुये) ल, ये ११ पैसे ले।

मजदूर—नहीं, मैं तो ११ पैसे लूँगा। मजदूर के न मानने पर धनी को ११ पैसे अलग २ देने पड़े।

२१७—डर नहीं लगता?

गृहस्थ—(मल्लाह से) क्यों भाई तुम्हें नाव पर डर नहीं लगता?

मल्लाह—नहीं, बिल्कुल नहीं।

गृहस्थ—तुम्हारा बाप कहाँ मरा था?

मल्लाह—नाव में से गिरकर नदी में डूबने से मरा था।

गृहस्थ—और तेरे बाबे पराजे?

मल्लाह—वे भी नाव से गिर कर नदी में डूबकर।

गृहस्थ—अरे मूर्ख जब तेरे बाप दादे नाव में डूब कर मरे हैं तो भी तू कहता है कि नाव पर डर नहीं लगता। अब कहना मानकर यह काम छोड़ दे नहीं तो बे मौत मर जायगा।

मल्लाह—पर यह तो बताइये कि आपके बाप कहाँ मरे हैं?

गृहस्थ—पलंग पर।

मल्लाह—और आजा, पराजा?

गृहस्थ—वे भी पलंग पर मरे।

मल्लाह—तो फिर आपको पलंग से डर नहीं लगता? आप भी कहना मान कर पलंग पर सोना छोड़ दें नहीं तो मर जायँगे। जिस तरह आपको पलंग पर डर नहीं लगता ऐसे ही मुझे नाव पर डर नहीं लगता।

२१८—डर क्या है।

शकुन्तला की सखियाँ उसके पुत्र भरत से जो एक हाथ में सिंह के बच्चे को लिये था और दूसरे से क्रोधित सिंहनी को मार रहा था कहा, "बेटा" उस बच्चे को छोड़ दो हम खिलौना देवेंगी।

भरत ने खिलौना लेकर बच्चे को छोड़ दिया।

सखियाँ—(भरत को घर ले जाते समय) क्यों बेटा, तुम्हें सिंहनी से डर नहीं लगता?

भरत—डर क्या है?

२१९—छतरी की भूल।

पति—(पत्नी से तुम कहती थीं कि मैं हमेशा अपनी छतरी भूल आया करता हूँ। देखो आज मैं उसे नहीं भूला।

पत्नी—(घर में से दूसरी छतरी लाकर) धन्य है। न जाने किसकी उठा लाये अपनी तो घरही में रखी थी।

२२०—पूँछ हिलाई ।

एक स्याद कस्ता अपने साथियों को चापलूसी करते देख उन्हें चिढ़ाया करता था। एक दिन उसने एक से कहा, "आज किधर पूँछ हिलाने (चापलूसी करने) गये थे ?"

चापलूस— जहाँ आपने सींग चलाये (स्पष्ट कह कर सबको नाराज किया) वहीं गया था।

२२१—फूटा बैल ।

मूर्ख पुत्र—पिता जी आज एक बैल लेने मेला को जाता हूँ।

पिता—अच्छा लाना । देखो जब दमड़ी की हण्डी भी लाते हैं तो उसे भी ठोंक बजा कर लेते हैं । सो तुम भी साबूत रकम लाना । पुत्र मेला गया और ८) में एक बैल ठीक करके ले लिया और चलने लगा कि इतने ही में बैल ने पेशाब की। पुत्र बैल वापिस करने लगा ।

बैल वाला—अभी के अभी आप क्यों बदल गये ?

पुत्र—इस फूटे बैल को लेकर क्या करूँगा मुझे तो साबूत रकम होना चाहिये ।

२२२—आनरेरी मजिस्ट्रेट ।

चपरासी एक अपराधी को आनरेरी मजिस्ट्रेट के सामने लाकर बोला ।

चपरासी—हुजूर इसे १५७ दफा में लाया हूँ ।

आनरेरी मजिस्ट्रेट—अरे यह तो बड़ा शैतान है, १५७ अपराध कर चुका ।

चपरासी—नहीं हुजूर, इसने सड़क पर पेशाब किया था। इससे मैं इसे १५७ वें नम्बर के जुर्म में लाया हूँ।

अपराधी—(मजिस्ट्रेट से) पर हुजूर और भी तो कई सड़क पर पैखाना और पेशाब कर गये पर यह चपरासी उन्हें न पकड़ कर मुझे ही यहाँ लाया है।

आ० मजिस्ट्रेट—वे कौन थे ?

अपराधी—दो गधे पेशाब कर गये और तीन घोड़े पैखाना कर गये।

आ० मजिस्ट्रेट—(चपरासी को डाटते हुये) उन्हें क्यों नहीं पकड़ा ?

चपरासी—पर हुजूर, कानून मनुष्यों के लिये है न कि पशुओं के लिये।

आनरेरी मजिस्ट्रेट ने अपराधी से १) लिया। ४ आने चपरासी को देकर १२ आने अपने खीसे में डाल लिये और निर्णय में लिख दिया, "अपराधी अपराध साबित न होने से छोड़ दिया गया।"

अपराधी—बोलो अनाड़ी मजिस्ट्रेट की जय।

२२३—कवि।

एक लड़का कविता बनाने के सिवा कुछ भी नहीं करता था और न पढ़ता ही था। उसका पिता उसे बहुत मारा करता था। लड़का मार के डर से कह दिया करता था कि अब कविता न करूँगा, पर आदत से लाचार फिर कविता बनाने लगता था।

इस पर इसके पिता ने उसे खूब मारा, तब बालक रोते रोते चिल्लाने लगा ।

' दया करय कर मानों बात ।
कविता फिर नहिं करिहों तात ॥"

यह सुन पिताने उसे स्वाभाविक कवि समझ कर कविता करने की छुट्टी दे दी।

२२४—बैलों की हजामत ।

नाई—(लकड़ी वाले से) लकड़ी की गाड़ी का क्या लोगे ?

लकड़हारा—२) रुपये ।

नाई ने २) रुपये देकर लकड़ी ले ली और गाड़ी भी मांगी, पर झगड़ा बढ़ने पर आनरेरी मजिस्ट्रेट के पास गये । उसने फैसला कर दिया कि शर्त के मुताबिक गाड़ी भी देना चाहिये । बेचारा गाड़ीवाला बैल लेकर, गाड़ी देकर घर चला गया। थोड़े दिन बाद वह बैलों को बाहर बांध कर नाई की दूकान में गया और बोला, कि मेरी और मेरे दो दोस्तों की मनमानी हजामत बनाने का क्या लोगे ?

नाई—१) एक रुपया लूंगा ।

पहिले उसने अपनी अच्छी हजामत बनवाई तथा खूब मालिश कराया । फिर नाई के कहने से अपने साथी, दोनों बैलों को बताया पर नाई ने हजामत बनाने से इनकार किया । इस झगड़े को लेकर आनरेरी मजिस्ट्रेट के पास गये उसने फैसला किया कि 'हजामत बनाना चाहिये' नाई को बैलों की हजामत

वनाने में ५) खर्च हुआ और पाँच दिन लगे। उसे चालाकी करने का पूरा दण्ड मिला।

२२५—आधा वाप मर गया।

"पिता जी, आप कहते थे कि जिसका वाप मर जाता है वह मूँछ मुड़ाता है"।

"हाँ यही रीति तो है वेटा।"

"तो पिता जी उन साहव की तरफ देखिये शायद उनके आधे वाप मर गये हैं?"

२२६—अस्पताल का रास्ता।

"अरे भाई अस्पताल पहुँचने का रास्ता कौनसा है?"

"किसी भी मोटर के नीचे कुचल जाओ सीधे पहुँच जाओगे।"

२२७—करिये साहव लक्ष्मीनारायण।

एक मनुष्य घोड़े पर वैठा दूसरे गाँव को जा रहा था। नौकर से कहा पीछे चल और कुछ गिरे तो उठा लाना।

मालिक—(थोड़ी देर वाद नीचे उतर कर) क्या कुछ गिरा? नौकर (लीद वताकर) जी हाँ, कहीं २ यही गिरी जिसे मैं लाया हूँ।

मालिक—हट, उल्लू, अव मत उठाना। (और घोड़े पर सवार हो गया) कुछ देर वाद दुशाला गिर गया पर नौकर ने न उठाया क्योंकि ऐसी ही आज्ञा थी।

निश्चित् स्थान पर पहुँच कर दोनों ने अलग अलग रोटी

बनाई मन चुकने पर मालिक भोजन करते समय नौकर से बोला, "छि, आ भाई"। नौकर उसके चौके में आने लगा तो मालिकने उसे मना करते हुये कहा, कि जब कोई ऐसा कहे और बुलावे तो वहाँ न जाकर कहा करो कि "कहिये साहब लक्ष्मीनारायण"। नौकर 'अच्छा' कहकर वापिस हो गया। छोटसे समय मालिक एक नदी में पानी पीने उतरा और फिसल कर उसमें डूबने लगा तो नौकर से कहा, "अरे दौड़ रे, अरे आ भाई"। नौकर ने उपरोक्त समझाई बात याद रक्खी और बोला,"कहिये साहब लक्ष्मीनारायण"।

२२८—बेवकूफ कौन है ?

मल्लू—दुनियाँ में तुम्हीं बेवकूफ हो कि और कोई दूसरा भी!

कल्लू—(सोचकर) जी हाँ, और भी है।

मल्लू—कहाँ पर !

कल्लू—यहीं पर।

मल्लू—कौन !

कल्लू—जो बेवकूफ की बातें शुरू करता है।

२२९—भागते कहाँ ?

एक मनुष्य बाजार में सीढ़ी लेकर जा रहा था तो एक दूकान का काँच सीढ़ी लगने से फूट गया। वह सीढ़ी वहीं पटक कर भागा पर दूकानदार ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया।

दूकानदार—क्यों जी, भागते क्यों हो ! पैसे दो।

सीढ़ीवाला—मैं भागता नहीं हूँ। आपके पैसे लेने जा रहा हूँ।

२३०—रेल बुलाती है ।

एक मनुष्य रेल पर बैठने को ही था कि गाडी ने सीटी दे दी। गार्डने उसे रोका। तो वह बोला, "वाह! साहब रेल तो सीटी देकर मुझे बुला रही है, आप रोकने वाले कौन होते हैं?"

२३१—सोते समय चश्मा ।

एक मित्र—आप रात में चश्मा लगा कर क्यों सोते हैं?

दूसरा—क्यों कि, मै बूढा हो गया हूँ इससे रातके स्वप्न में दिखाई पडने वाले पुरुषों को पहिचानने में कठिनाई पडती है।

२३२—पुजारी को उत्तर ।

पुजारी—(कहीं जाते समय एक लडके को मिट्टी खेलते देख कर) क्यो भाई तुम क्या कर रहे हो?

लडका—मन्दिर बना रहा हूँ।

पुजारी—तब तो एक पुजारी की जरूरत भी पडेगी?

लडका—हाँ, अवश्य, पर मैं अपने मन्दिर के लिये पुजारी भी आपही बना लूँगा,आप जैसे पुजारी की आवश्यकता नहीं होगी।

२३३—फौज की भरती ।

एक आदमी—(एक फौज वाले से) भाई फौज में मुझ भी भरती करवा दो।

फौजवाला—क्या तुम्हें इगलिश बोलने आता है?

आदमी—नहीं आता।

फौजी—पर साहब तो अंग्रेजी में पूछता है।

आदमी—यह जो कुछ पूछता है, उसे आप लिख दो।

फौजी—अच्छा सुन, साहब पूछे कि तुम्हारी क्या उम्र है तब तुम कहना ३ साल की। फिर पूछेगा तुम यहाँ कितने साल से हो, तो तुम कहना कि १० साल से। फिर वह पूछेगा कि खाना खोगे या बन्न। तब तुम कहना दोनों।

साहब—(दूसरे दिन आदमी से प्रार्थना करने पर) तुम यहाँ कितने साल से रहते हो?

आदमी—(कहाये अनुसार) तीस साल से।

साहब—तुम्हारी उम्र क्या है!

आदमी—१० साल की।

साहब—(हँसकर) मैं बेवकूफ हूँ या तुम?

आदमी—दोनों।

२३४—तुम्हें नचाया।

मोहन—मैंने कल तुम्हें फुटबाल मैच में खूब नचाया।

सोहन—क्या नहीं। जब तुमने मुझे नचाया था तो तुम्हें भी तो नाचना पड़ा था।

२३५—मैं कहाँ बचा?

मास्टर—कन्हैया, तुम्हारा पिता कौन जात है?

कन्हैया—कहार।

मास्टर—तब तो बेचारा पानी ढोते ढोते मर मिटा होगा। तुम अच्छे रहे जो इस आफत से बचे।

कन्हैया—नहीं मास्टर साहब, मै भी कहाँ बचा ? मुझे भी स्कूल के लिये ढेर किताबें ढोनी पड़ती हैं।

२३६—आज्ञापालन।

हरीराम—भाई, गुरुजी कहते थे कि लड़कों को माता पिता का कहना मानना चाहिये, मैं उनकी बात मानने लगा।

कृष्ण—अच्छा, यह तो बताओ, कल स्कूल क्यो नहीं आये थे ?

हरीराम—पिताजी ने कहा था कि बाहिर कहीं मत जाया करो, इससे मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया।

२३७—गिलास कैसे फोड़ा ?

माँ—मोहन मै तुम्हें पीटूँगी। तुमने गिलास (काँचका) कैसे फोड़ा ?

मोहन—दूसरा गिलास (काँचका) मुझे दो तो मै फोड कर बता सकता हूँ।

२३८—फकीर की माँग।

स्वामिनी—(फकीर से) मै तुम्हें अपने पतिकी कमीज देती, पर वह तुम्हारे बदन में फिट न बैठेगी। क्योंकि तुम दुबले हो।

फकीर—माताजी पहिले मुझे एक, दो माह को भोजन दे दीजिये, फिर कमीज आपही फिट बैठ जायगी।

२३९—टिकिट दो।

टिकिट कलेक्टर—(एक गँवार से) लाओ टिकिट दो।

गँवार—(जो पहिली ही बार गाड़ी पर बैठा था) फिक्र करो मत, जैसे एक टिकिट हम सामने के घर से लाये हैं वैसे ही तुम भी बाबू से ले आओ। मैने बेचने के लिये टिकिट नहीं खरीदी।

२४०—मैं नहीं था।

मास्टर—(विद्यार्थियों को पढ़ाते हुये एकाएक) हरी क्या तुम बता सकते हो कि ५० वर्ष पूर्व कौनसी विचित्र वस्तु नहीं थी?

हरी—मैं नहीं था।

२४१—लड़ाई होगी।

मास्टर-तेरे पास तीन आम और तेरे भाई के पास ५ आम है। यदि तू उसके सब आम ले ले तो तेरे पास क्या होगा?

विद्यार्थी—लड़ाई! क्योंकि वह मुझसे लड़ पड़ेगा।

२४२—झूठ क्यों बोला?

"मैं आज तक कभी झूठ नहीं बोला।"

"तो आज क्यों बोल रहा है?"

२४३—सबेरे उठो।

पिता—बेटा मैंने तुम्हें सैकड़ों बार समझाया कि सबेरे उठा करो। देखो विहक आज वह सबेरे उठा था तो उसे एक रुपयों का बटुआ सड़क पर मिला।

पुत्र—पिताजी जिसका बटुआ गिरा था वह तो विहक से भी पहिले उठा होगा।

२४४—पाँच दिन में बम्बई देखना ।

एक गुरुजी एक आँख से अंधे थे, पाठशाला में भूगोल पढ़ा रहे थे। पढ़ाते समय वे बोले, "बालको, बम्बई इतना बड़ा शहर है, कि हम उसे १० रोजमें देख सकते हैं।"

लड़का—(जो बदमाश था) गुरुजी मैं तो उसे पाँचही दिन में देख सकता हूँ।

मास्टर—(बदमाश से) बदमाश ! कैसे ?

लड़का—क्योंकि मैं उसे दोनों आँखों से देखूँगा ।

२४५—मूसा जी प्रणाम ।

पिता—(छोटे बच्चे से) बेटा, तुम्हारे मौसा जी आये हैं उनसे प्रणाम करो ।

बच्चा—(मौसा जी को देखकर) मूसाजी प्रणाम ।

२४६—क्या उस पार निकल जायगा ?

एक हिन्दू और एक मुसल्मान अचानक कुयें में गिर पड़े ।

हिन्दू—हे राम, जल्दी निकालो ।

मुसल्मान—या खुदा जल्दी पार कर।

हिन्दू ने खुदा शब्द ईश्वर के लिये कभी न सुना था, इससे उसने मुसल्मान को चटाचट चपत जमाना शुरू किया और बोला, "अबे खुदाते खुदाते तो इतने गहरे में ले आया फिर भी अभी धीरज नहीं है; और कहता है खुदा पार लगा। क्या धरती फोड़ कर उस पार हो जायगा । अब ऐसा कहेगा तो जान से मार डालूँगा। बेचारा मुसल्मान चुप हो गया ।

२४७—हा हुसेन हम न हुए।

एक ठाकुर साहब ने पहिले पहिल ताजिये देखे और मुसल्मानों को कहते सुना कि "हा हुसेन हम न हुये"। ठाकुर साहब ने अपने साथियों से ऐसा कहने का कारण पूछा। वह बोला, "हुसेन इनका पुरखा था" जो लड़ाई में मारा गया था। अब ये कहते हैं कि "हम न हुये नहीं तो दुश्मन को देख लेते"। ठाकुर साहब एक चिल्लाते हुये मुसल्मान से बोले "अब तू होता तो क्या कर लेता?

मुसल्मान—मैं मारने वाले को देख लेता।

ऐसा सुन ठाकुर साहब ने उसे दे मारा और लगे घूंसे जमाने और कहने, "तुम न हुये तो हम भी न हुये। तुम देख लेते तो हम भी देख लेते।"

२४८—तीसरा दर्जा बनाया।

एक जाट रेल यात्रा कर रहा था।

चेकर—(टिकट देखकर) क्यों तेरा टिकट तो तीसरे दर्जेका है पर तू बैठ गया इंटर में?

जाट—आप मुझे बता दीजिये कि इंटर और तीसरा कैसा होता है?

चेकर—इन्टर में गद्दा होता है तीसरे में नहीं।

जाट (गद्देला फेंक कर) बाबूजी अब तो यह तीसरा हो गया।

२४९—छोटा बच्चा आवेगा।

मास्टर—आज तुम देर से क्यों आये ?

बच्चा—(प्रसन्न हो कर) आज हमारे घर छोटासा बच्चा आवेगा।

मास्टर—तुमने कैसे जाना ?

बच्चा—पिछले वर्ष जब माता जी के पेट में दर्द हुआ था तो एक छोटी सी लड़की आई थी आज पिताजी के पेटमें दर्द है।

२५०-चिट्ठी नहीं मिली।

एक मित्र—(दूसरे से कई दिन बाद) आपने मेरी चिट्ठी का जवाब क्यों नहीं दिया ?

दूसरा—आपकी चिट्ठी मुझे मिली नहीं।

पहिला—ऐं ! नहीं मिली।

दूसरा—हाँ नहीं मिली। इसके अलावा उसमें लिखी एक भी बात मुझे पसन्द नहीं आई।

२५१—और सालों से अच्छा किया।

विद्यार्थी—(अपने एक साथी से जो कई बार फेल हो चुका था तथा इस बार परचा करके आ रहा था) कहो यार, कैसा परचा किया ?

वह—(बिगड़कर) और सालों से तो अच्छा ही किया।

२५२—मादक पदार्थों से दूर।

मोहन—यह क्या बात है ? आज तुम सिगरेट को इतनी लम्बी नली लगाकर क्यों पी रहे हो ?

सोहन—क्यों मैंने 'स्वास्थ्य रक्षा' में पढ़ा था कि नवयुवकों को मादक पदार्थों से सदा दूर रहना चाहिये।

२५३—मेम स्वर्ग पहुँच गई।

एक साहब अपनी मेम से बहुत डरते थे क्योंकि वह पहलवान की तरह थी। उसके हाथ भी चलते थे। वह मर गई और जब उसे दफना कर साहब घर आये तो आते ही एक खपरैल (कवेलू) अचानक उनके सिर पर गिर पड़ी।

साहब—मालूम होता है कि मेरी स्त्री स्वर्ग पहुँच गई।

२५४—अब आपकी चाल है।

दो आदमी एक रेल में जा रहे थे। गाड़ी चलने पर एक ने खिड़की खोल दी तो दूसरे ने उसे बन्द कर दिया। पहिले ने उसे फिर खोल दिया।

दूसरा—(वेगी से) तुम यह क्या खेल कर रहे हो?

पहिला—शतरंज। अब आपकी चाल है, चलिये।

२५५—मुवक्किल।

मुवक्किल—वकील साहब, जो आदमी आपके पास किसी मुकदमे वाले को लाता है उसे आप क्या कमीशन देते हैं?

वकील—अपनी फीसका चौथाई भाग। अच्छा मुकदमे वाला कहाँ है?

मुवक्किल—मैं खुद ही अपना मुकदमा लाया हूँ। आप अपनी फीस का चौथाई भाग छोड़ दीजिये।

२५६—मरने का दुख ।

मोहन—भाई, जान पड़ता है आपको रामलाल के मरने का बड़ा दुःख है । क्या आपका उससे इतना अधिक प्रेम था ?

सोहन—प्रेम तो नहीं था, पर मैंने उसे गये साल १०) उधार दिये थे वे वापिस न ले सका ।

२५७—भला आदमी समझा था ।

एक आदमी—(अपने बगलवाले दूसरे से) कृपा करके जरा पानदान उठा दीजिये ।

दूसरा—(क्रोध से घूर कर) शायद भूल से आपने मुझे नौकर समझा है ?

पहिला—माफ कीजिये मैंने भूल से आपको भला आदमी समझा था ।

२५८—कामचोर नौकर ।

मालिक— तूने अभी तक छत पर मिट्टी क्यों नहीं डाली ?

नौकर—कैसे डालता ? कल दिन भर पानी गिरा ।

मालिक—लेकिन आज तो पानी नहीं गिरता ?

नौकर—आज जरूरत ही क्या है ? आज छत नहीं चुएगी ।

२५९—आपने कहा था ।

"किस बेवकूफ ने तुझसे कहा था कि कागज यहाँ रख देना ।"

"हुजूर आपने ही तो कहा था ।"

—

२९०—कहाँ बोलते हो ?

देवीराम—अपनी मौत का झूठा समाचार पढ़कर और नाराज होकर अपने मित्र से टेलीफोन में कहा, देखो अखबार में मेरी मौत की खबर छाप दी गई।

कामताप्रसाद—जी हाँ, पर आप कहाँ बोल रहे हैं, स्वर्ग से या नर्क से!

२९१—बदमाश औरत।

जज—तुम बड़ी बदचलन औरत हो। हर एक बदमाश आदमी के साथ तुम्हारा नाम लिया जाता है।

औरत—हुजूर लोगों के कहने पर मत जाइये, वे तो आपके साथ भी मेरा नाम लेते हैं।

२९२—जैसेको तैसा।

मालिक—(नौकर से) तुमने अभी तक जूते साफ क्यों नहीं किये!

नौकर—हुजूर, वे तो फिर खराब हो जायेंगे क्योंकि आप तो अभी घूमने जा रहे हैं। साफ करने से अभी क्या फायदा!

मालिक—अच्छा जाओ घोड़ा कस लाओ।

नौकर—मैंने तो अभी खाना भी नहीं खाया!

मालिक—लेकिन खाने से क्या फायदा! तुम्हें फिर भूख लग जायेगी!

२६३—चिहरे में शैतान।

जज—(अपराधी से) तुम्हारे चिहरे में शैतान दिखाई देता है।

अपराधी—हुजूर, मुझे यह नहीं मालूम था कि मेरे चिहरे में दर्पण है, जिसमें आप अपनी शक्ल देख सकते हैं।

२६४—असफल प्रयत्न।

लेखक—देखिये सपादक जी, मैंने आपकी आज्ञानुसार कागज के एक ही तरफ लिखा है।

सपादक—ठीक है, मगर अच्छा हो किसी भी तरफ न लिखें।

२६५—टुकडे को तरसोगे।

पिता—थाली में जूठा क्यो छोडते हो ? इन टुकडों के लिये भी तरसोगे।

पुत्र—पिता जी, इसी लिये छोडता हूँ कि आगे चल कर ये काम आवेंगे।

२६६—करीब करीव तुम्हारे पिता को देख लिया।

सुरेश—मैने तुम्हारे पिता को करीब्र करीब्र देख ही लिया।

महेश—कैसे ?

सुरेश—तुम्हारे पिता का पुलिस कान्स्टेब्रिल नम्बर ९८ है और मैंने ९७ नम्बर का कान्स्टेब्रिल देख लिया है।

२६७—विचित्र नाम।

एक ड्राइवर को तेजी से मोटर चलाते देख कान्स्टेब्रिल ने उसे रोका और डायरी निकाल कर नाम पूछा।

ड्राइवर—मेरा नाम कलतसमम्न, पन्दातसकल कलकत्तीम्नु है।

कान्स्टेबिल—(जेब में डायरी रखते हुये) अच्छा जाओ अब ऐसे जोर से गाड़ी न चलाना।

२६८—कायर नहीं हूँ।

एक—तुम बड़े कायर हो, जब उस दुष्ट ने मुझे मारना शुरू किया तो तुम दुम दबाकर क्यों भाग गये ?

दूसरा—भाग न जाता तो क्या वहाँ खड़ा खड़ा मित्र को पिटते देखता।

२६९—काने की आधी टिकिट।

दर्शक—क्या मैं आधा टिकिट खरीद कर तमाशा देख सकता हूँ।

मैनेजर—क्यों ? तुम बच्चे नहीं हो, पूरे आदमी हो।

दर्शक—पर क्या आप नहीं देख सकते कि मैं काना हूँ ? सब दो आँखों से देखेंगे पर मैं एक ही आँख से देखूँगा।

२७०—मैं पालक हूँ।

थानेदार मुसल्मान थे उनके चोटी न थी। एक बार एक गड़रिये का लड़का थाने में बुलाया गया। लड़का थानेदार को देख हँसा।

थानेदार—(लड़के को हँसते देख) क्यों हँसता है बे ?

लड़का—आपके चोटी नहीं है यदि किसी से लड़ाई हुई तो वह आपको क्या पकड़ कर मारेगा ? इसी कारण से हँसी आ गई।

यह सुन थानेदार ने उसे हवालात में बन्द कर दिया। जब लडके की माँ आई और थाने में लड़के को बन्द करने का कारण पूछा तो थानेदार ने सब कह सुनाया। स्त्री ने लड़के से कहा, कि तूने ऐसा क्यों कहा। अरे जिसे मारना होगा वह इन्हें मारे लातों गेंद के समान लुढ़का देगा। थानेदार ने स्त्री को भी बन्द कर दिया। अब लडके का बाप आया और कारण पूछा।

थानेदार—तुम कौन हो?

गडरिया—मैं पालक हूँ।

थानेदार—पालक क्या होता है?

गड़रिया—सा० जैसे आप का बाप मर जावे और आपकी माँ मुझे करले तो मै आपका पालक हुआ।

यह सुन कर थानेदार ने सोचा ये सब बड़े मूर्ख हैं और उन्हें छोड़ दिया।

२७१—स्याही सोख खा लीजिए।

एक नौकर ने गल्ती से मालिक को दवा के बदले स्याही पिला दी तो वह बड़े नाराज हुये। इस पर नौकर ने उत्तर दिया, कि सरकार, माफ कीजिये गल्ती हो गई, पर अब कृपा करके एक स्याही सोख कागज खा जाइये जिससे स्याही सूख जावे।

२७२—चूरन का लटका।

बाबू रामअवतार ने एक चूरन वाले के चार पैसे रख लिये

कई दिन तक न दिये। एक दिन बाबू सा० अपने मित्रों के साथ घूमने जा रहे थे उन्हें देख कर चूरन वाले ने यह लटका गाया।

'मेरा चूरन मजेदार, जिसे खावें रामऔतार, जिस पर पैसे चार उधार; अब तक दिये नहीं हैं यार।" यह सुन बाबू साहब शर्माये और दूसरे रोज उसके पैसे दे दिये।

२७३—आप साहब की गाय नहीं हैं।

साहब—(पहरेदार से) संत्री, बँगले के हाते की घास में हमारी गाय के सिवा और कोई न घुस सके। यह ध्यान रखना।

संत्री—जी हुजूर।

कुछ देर बाद साहब की मेम ही घूमते घूमते घास में से जाने लगी तो संत्री ने रोका। मेम नाराज हो गई।

मेम—जानता नहीं मैं कौन हूँ!

संत्री—आप जो हैं सो बनी रहें; पर आप साहब की गाय नहीं हैं।

२७४—गधे से टेक्स माँगो।

एक आदमी गधे को गाड़ी में जोत कर पुल पार करना चाहता था। उससे पुल का टेक्स माँगा गया क्योंकि नियम ऐसा था कि गाड़ी में चौपाया जुतेगा तो टेक्स लगेगा। उसको अन्त में टेक्स देना पड़ा। अब वह कौड़ा तन गधे को गाड़ी में बैठाकर

कर खुद से गाटी खींच पुल पार किया। उससे फिर टैक्स माँगा तो वह बोला, "नियम तो ऐसा है कि गाडी में चौपाया जुता हो तो टैक्स लगेगा मैं तो चौपाया नहीं हूँ।" पर टैक्स वाला न माना। तब उसने कहा, "अच्छा, तो टैक्स गाडी हाँकने वाले से माँगिये।"

२७५--चकमा दिया।

हरीश ने स्कूल जाते समय एक मेहतर को नाला साफ करते देखा तो उससे कहा, कल मेरे चाचाजी का एक रुपया यहाँ गिर गया था।

मेहतर—(यह सुनकर) वच्चू जल्दी स्कूल जाइये नहीं तो देर होने से मास्टर मारेगा।

जब हरीश वापिस आया तो मेहतर को वहीं काम करते पाया और खडा होकर देखने लगा।

मेहतर—क्या आपको ठीक याद है कि रुपया यहीं गिरा था?

हरीश—हाँ, पर दो पैसा देकर एक मेहतर के लटके से निकलवा लिया था।

मेहतर—तो क्या ढुँढवाकर निकलवा भी लिया?

हरीश—हाँ।

मेहतर—वाह राजा खूब चकमा दिया।

२०६—अमृतदान की भेंट।

एक कलमस चीनी मिट्टी के बर्तनों की दूकान पर गया। पर कीमत सुन कर घबरा गया। उसे एक फूटी बरनी पसन्द आई क्योंकि उसकी कीमत बहुत कम थी। उसने सोचा यह बरनी (अमृतदान) अपने मित्र को भेज दूँगा जिससे मित्रता का भाव निभ जायेगा। जब बरनी पारसल से पहुँचेगी तो वे समझेंगे कि यह रेल में फूट गई। ऐसा सोच उसने बरनी के दाम चुका कर दूकानदार से कहा कि इसे अमुक पते पर भेज देना। दूकानदार ने वैसे ही किया। कुछ दिनों बाद मित्र का पत्र कलमस के पास आया जिसमें लिखा था। "धन्यवाद" दर्शन बड़े यत्न से भेजा। हरएक टुकड़ा कागज में सावधानी से लिपटा था। पुनः धन्यवाद।"

२०७—नव-सिक्खड़ वैद्य।

एक वैद्यराज अपने शिष्य को ले रोगी को देखने गये। और वहाँ रोगी की नाड़ी देख कर कहा कि इसने तो इमली खाई है। कुपथ्य किया है दवाई बदलूँगा। जब वे लौटे तो राह में शिष्य ने पूछा, "पंडित जी आपने कैसे जाना कि उसने इमली खाई है?"

वैद्य—रोगी के आस पास इमली के छिलके और बिये पड़े थे। अनुमान तो इसी तरह लगाया जाता है।

कुछ दिनों बाद शिष्य को एक रोगी को देखने जाना पड़ा।

वहाँ जाकर वह रोगी की खटिया के आसपास चूर-चूर कर देखने लगा, पर कुछ न पाया, पर पास ही भैंस बँधी थी उसे देख झट बोला कि "रोगी ने भैंस खाई।" घर के लोग नाराज हुये। इस पर शिष्य वैद्य बोला "भैंस नहीं तो घास या गोबर जरूर खाया होगा।" घर वाले इसे पागल समझ कर मारने दौडे, वह जान लेकर भागा।

२७८—पाँचवाँ और सातवाँ आसमान।

एक ईसाई, एक मुसलमान तथा एक हिन्दू भिखारी एक जगह मिल गये। वे आपस में मित्र हो गये। एक दिन वे तीनों बहुत भूखे थे। एक दयालु आदमी ने इन्हें डेढ़ सेर मिठाई दिलाई। ये खुश हुये और शर्त बदी कि जिसे सब से अच्छा स्वप्न आवे वही यह मिठाई खा लेवे। तीनों सो गये। हिन्दू को ज्यादा भूख लगी थी। उसे नींद ही न आई अत वह सब मिठाई खाकर सो गया। जब सब जागे तो अपना अपना स्वप्न सुनाने लगे।

ईसाई—ज्यों ही मैं सोया त्यों ही ईसामसीह मुझे पाँचवे आसमान पर ले गये मेरा खूब आदर किया।

मुसलमान—मुझे तो मुहम्मद साहब सातवें आसमान पर ले गये और खुदा के सामने हाजिर किया। वहाँ खूब हूरों का नाच देखा।

हिन्दू—भाई, मेरी तो पूरी नींद भी न लगी थी कि इतने में

हनूमानजी गदा लेकर आये और बोले कि मिठाई खा नहीं तो मार डालूँगा। और ऐसा कहकर गदा उठाई। मैंने झट सब मिठाई खा ली।

ईसाई—पर तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया? मैं देखता हनूमान को।

हिन्दू—पर तुम तो उस समय पाँचवें आसमान पर थे न!

मुसल्मान—पर मैं तो यहीं था।

हिन्दू—वाह, आप तो सातवें आसमान पर हूरों का नाच देख रहे थे।

२७९—बिल्ली की टाँग पर नालिश।

चार मनुष्यों ने कपास का रोजगार किया और चूहों से कपास की रक्षा के लिये एक बिल्ली पाली। जिसकी एक एक टाँग अपने नामें लिखाय ली। एक बिल्ली की एक टाँग में चोट लग जाने से उसके मालिक ने उस पर पट्टी बाँध दी और मिट्टी का तेल डाल दिया। उसमें अचानक आग लग गई। बिल्ली घबराकर कपास के कोठे में भाग गई। सब कपास आग से जल गया। बाकी तीन हिस्सेदारों ने उसकी नालिश की कि यह हमारा नुकसान देवे क्योंकि उसके हिस्से की टाँग से आग लगी थी। जज ने फैसला दिया कि तीनों मिलकर उस चौथे का हरजाना देवें क्योंकि उनके हिस्से वाली टाँगों ने दौड़ कर आग लगाई थी।

२८०—वकील साहब को आने दीजिये।

एक आदमी जब काटने के अपराध में पकड़ा गया। उसने अपराध स्वीकार कर लिया। उसे १ साल की सजा हुई। पर वह जज से बोला। "हुजूर, जरा वकील सा० को आजाने दीजिये, फिर सजा दीजिये क्योंकि उन्होंने मुझे छुडाने का वचन दिया था।"

२८१—ऊँट पर चढ़कर मारूँगा।

एक ठिगने मियाँ साहब की बीबी बडी लटाक और ऊँची थी। उनकी आपस मे लडाइ होती रहती थी। मियाँ यदि मुक्का मारते तो बीबी की कमर में लगाता और यदि बीबी चाँटा मारती तो मियाँ के सिर में लगता। मियाँ बडे तग आगये थे। एक दिन मियाँ को बाजार मे उनका साला मिला। उसे देख मियाँ साहब ने मुँह फेर लिया।

साला—(ऐसा देख कर) अजी जनाब, क्या सबब ? आज इतनी नाराजी।

मियाँ—बस जनाब, आप अपनी बहिन को समझा दीजिये नहीं तो मैं अब एक ऊँट पर चढकर ऐसी मार लगाऊँगा कि याद पड़ेगी।

साला—अजी बात क्या है ?

मियाँ—बस अब कह चुका, ऊँट पर चढकर मारूँगा।

२८४—बम बनाता हूँ।

एक सिपाही ने एक आदमी को सुनार से यह कहते सुना,—"क्यों जी! हमारा बम तैयार किया या नहीं?" ऐसा सुन सिपाही ने थाने में रिपोर्ट कर दी। इससे कई कान्स्टेबिल और थानेदार तथा एक सारजेन्ट सुनार के घर पहुँचे और उसे दरवाजे पर ही घेर कर लिया।

सारजेन्ट—(सुनार से) तुम बम बनाते हो!

सुनार—जी हाँ।

सारजेन्ट—अभी कितने बने हुये बम तुम्हारे यहाँ है!

सुनार—चार तैयार हैं दो शाम तक बन जायँगे।

सारजेन्ट—हमें बताओगे!

सुनार-हाँ कहकर उन्हें दुकान पर ले गया और तमि के बम (धुरे या Shofts) बताये यह देख पुलिस वाले बड़े शरमाये।

२८५—देशभक्त।

एक मित्र—आप देशभक्ति की बात बहुत करते हैं पर आप कुछ नहीं करते।

दूसरा मित्र—मैं देश के लिये प्राण दे दूँगा, पर काम करने में अपना समय नष्ट न करूँगा जब तक कि कार्यकर्ता हैं।

पहिला—याने आप देश के लिए रक्त बहा सकते हैं पसीना नहीं।

२८४—एक गिलास शराब के लिये।

एक मजदूर चिमनी साफ करते २ ऊपर से गिर कर वेहोश हो गया। मैनेजर आदि कर्मचारियो ने उसे वडे यत्न से सचेत किया और कहा, "इसे एक गिलास भर ठडा पानी लाओ।" इस पर वह वोला, "साहव, एक गिलास शराव के लिये कितने ऊपर से गिरना पडेगा?"

२८५—काने की शर्त।

एक काने ने दूसरे दोनों आँख वाले से शर्त वदी, कि "मैं तुमसे अधिक देख सकता हूँ।" दूसरे ने पूछा "कैसे? सिद्ध करो।"

काना—जितना तुम दोनों आँखों से देख सकते हो उतना मैं एक ही आँख से देख सकता हूँ।

२८६—वगीचा साफ किया।

एक कैदी को जेलर ने हुक्म दिया कि जाकर वगीचा साफ करो। कैदी ने कहा,—आप मुझे लिख कर दीजिये तव मैं काम करूँगा। जेलर ने लिख कर दे दिया। कैदी ने सव वगीचे को जड़ से साफ कर दिया। जव शाम को उसकी शैतानी पर जेलर विगडा तो उसने वह लिखा हुआ वताते हुये कहा, "आप ही ने तो लिखकर दिया था कि आज वाग साफ करो, मैंने वगीचा साफ कर दिया।"

२८७—मैं हूँ बैरिस्टर का बाप।

एक वकील का लड़का बैरिस्टर था। एक दिन कोर्ट में उसमें और एक बैरिस्टर से बहस हुई।

बैरिस्टर—देखो, तुम वकील हो और मैं एक बैरिस्टर। तुम मेरे बराबर नहीं जानते।

वकील—तुम तो सिर्फ बैरिस्टर हो और मैं हूँ बैरिस्टर का बाप! तुम मेरे बराबर नहीं जान सकते।

२८८—उछल कूद कर दवा मिलाना।

एक रोगी को दो दवायें मिलाकर पीने को कहा गया, पर उसने गल्ती से अलग अलग पी ली। जब उसे मिलाकर पीने की याद आई तो वह खूब उछलने और कूदने लगा।

घर के लोग—(उसे कूदते देखकर) बाबू आज कैसा कर रहे हो!

रोगी—मैं इसलिये कूद रहा हूँ, कि पेट में दोनों दवायें मिल जावें।

२८९—कान की सूझ।

एक वैद्य एक रोगी को देखने जा रहे थे, रास्ते में काना मिल गया। काना एकदम वैद्य को गाली देने लगा। वैद्य बोला—"भाई मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मुझे गालियाँ दे रहे हो?"

काना—आपने मुझे देखकर गाली जरूर दी होगी ?

२९०--चूरन को जगह कहाँ।

एक चौबे का एक यजमान ने निमन्त्रण किया। चौबे ने तना खाया कि उसके पेट में दर्द होने लगा।

यजमान–(यह देखकर) महाराज थोड़ा चूरण खा लीजिये।

चौबेजी–(ऐसा सुन) यजमान, चूरण खाने को पेट में जगह होती तो मै दो लड्डू और न खा लेता।

२९१--ताड की दतौन।

एक मित्र अपने मित्र को उसके घर पुकारने लगा। वह कुछ देर वाद निकला।

दूसरा मित्र–भाई माफ करना वीवी के मुँह धोने को कुआँ खोद रहा था, इससे देर होगई। कहिये कैसे पधारे ?

पहिला मित्र–कुछ नहीं, घर में बिल्ली ऊधम मचाती है सो तुमसे यह ताड का पेड माँगने आया हूँ कि जिसकी छटी बना कर मैं उसे पीट सकूँ।

दूसरा मित्र–पर मेरा लडका कल दतौन काहे को करेगा ?

२९२--कपटी नौकर।

एक स्टेशन पर मालिक ने नौकर से कहा जाओ एक सेर सेव (फल) हमारे लिये और आधा सेर अपने लिये ले आओ।

नौकर गया और आधा सेर फल लेकर लौट आया। मालिक ने फल माँग तो बोला, "मैं आपने लिये आधा सेर ले आया। अब उसके पास सिर्फ आधा सेर रूपे थे इससे म आपके लिये सेर भर न ला सका।" इतने में गाडी चल दी।

२९३—मूर्ख चिट्ठी पढता है।

एक आदमी पत्र लिख रहा था। पास ही में आकर उसका मित्र बैठ गया और पत्र पढने लगा। तो वह आदमी अपने पत्र में आगे लिखने लगा "भाई, मुझे लिखना तो बहुत है पर एक मूर्खचन्द मेरे पास बैठे मेरे पत्र पढ रहे हैं, इससे लिखना बन्द करता हूँ।'

मित्र—(झुंझलाकर) मैं आपकी चिट्ठी कब पढता हूँ!

आदमी—नहीं पढ़ते तो कैसे मालूम हुआ कि इसमें क्या लिखा है।

२९४—पार्सल भारी हो जायगा।

डाकबाबू—(पारसल तौलकर) यह भारी है इस पर और टिकिट लगेगा।

पारसलवाला—पर टिकट लगाने से तो यह और भी भारी हो जायेगा!

२९५—बैल का मेम साहब ।

साहब—क्यों माली, पौदा कौन तोड गया ?

माली—गाय ।

साहब—गाय क्या होटा है ? हमको बटाओ ।

माली—(गाय दिखा कर) ऐसा क्यो नहीं बोलटा कि बैल का मेम साहब पौटा खा गया । गाय, गाय क्यो बकटा है ?

२९६—अफीमची की पुकार ।

एक अफीमची—(नशे मे खटिया से गिरने पर और आवाज सुनकर नौकर से) देखना रे काहे का आवाज हुआ ?

नोकर—आपही के गिरने का आवाज तो हुआ है ।

अफीमची—अरे रे ! तब तो सब हड्डी टूट गई होगी ।

२९७—कुआँ बेचा, पानी नहीं ।

एक आदमी ने कुआँ बेच दिया। जब खरीददार पानी भरने लगा तब कुयें वाला बोला, "मैंने कुआँ बेचा है, पानी नहीं बेचा इससे पानी मत भरो ।" कुयें के खरीददार ने नालिश की। जज ने फैसला दिया कि, "लेने वाला बेचने वाले को नोटिस देवे कि वह तीन दिन के अन्दर कुये का पानी निकाल ले जावे नहीं तो पानी पर कुआँ लेने वाले का अधिकार हो जावेगा ।" यह फैसला सुनकर बदमाश आदमी पछताया ।

२९८—दाँत लगे हैं।

एक दाँत लगाने वाले डाक्टर से उनके एक मित्र ने हँसी में कहा "कई क दाँत आपके यहाँ लगे हैं।"

डाक्टर—जी हाँ, कह एक घरों में मेरे दाँत लगे हैं।

२९९—गजब का लड़का।

मास्टर—(एक शैतान लड़के से) हरीसींग तुम्हो गजब के लटके हो। तुम्ने इतनी शैतानी कहाँ से सीखी?

हरीसींग—पंडितजी मै गजब (गजब सींग) का लड़का नहीं हूँ। गजब (गजब सींग) का लड़का तो मगन (मगन सींग) है।

३ —में में में में।

एक गड़रिये ने अपने साथी को मार डाला था। उस पर मुकदमा चला। उसने एक वकील किया। वकील ने गड़रिये से कहा यदि तुम मुझे १ ०) एक हजार रुपया दो तो मैं तुम्हें फाँसी से बचा सकता हूँ। गड़रिये ने मन्जूर किया।

अब वकील सा ने कहा कि जब जब तुमसे कुछ भी बात पूछें तो तुम सिर्फ में, में में, में कहना और कुछ मत बोलना। बस फिर मै तुम्हें बचा लेंगा।

जज—(अदालत में गड़रिया से) तेरा क्या नाम है ?

गड़रिया—में, में, में, में, ।

जज—तेरे बाप का नाम क्या है ?

गड़रिया—में, में, में, में ।

इस प्रकार उसने सब प्रश्नो का उत्तर में, मे, में, मे दिया। तब तो मजिस्ट्रेट बडे नाराज हुये। वकील ने उन्हें समझा दिया कि साहब, यह बचपन से ही पशुओं में रहा है, इससे इसकी पशुओं जैसी आदतें पड गई हैं। यह भला बुरा कुछ समझ ही नहीं सकता। इस प्रकार गडरिया बच गया।

अदालत से बाहर जाकर वकील ने उससे रुपये मांगे। इस समय भी गडरिये ने पूर्ववत् में, में, में, में, बोलना शुरू किया। वकील ने उसे इस पर बुरा डाँटा। तो वह बोला, "वकील सा० जिस में, में, में, में, से मेरे प्राण बच गये उससे क्या १०००) एक हजार रुपया न बचेंगे ? यदि आप न मानें तो नालिश कर लीजिये।

२०१—सबेरे ही घडी देख ली थी।

मालिक—अरे हरी, जरा देख तो क्या बजा है ? (हरी नौकर था)

हरी—६ बजे हैं बाबूजी।

मालिक—वाह रे पागल, इस वक्त १० या ११ का समय है जरा देख तो।

हरी—बाबूजी मुझे तो मालूम था, कि आप समय पूछेंगे, इससे मैंने सबेरे ही घड़ी देख ली है, बार-बार देखने से क्या लाभ!

२०२—जनानी टिकिट।

मसखरा—(एक को टिकिट पास देखकर और रोक कर) अरे यह तो जनानी टिकिट है, जाओ बदल कर मरदानी टिकिट लाओ।

आदमी—(वापिस आकर) बाबू साहब यह तो जनानी टिकिट है मरदानी दीजिये।

२०३—भेड़िया छकड़ा लेकर नहीं आया।

सेठ जी बहुत दुबले थे और सेठानीजी बहुत मोटी थीं। एक भेड़िया एक दिन गाँव में आया। सेठजी मारे डर के सन्दूक में बन्द हो गये।

सेठानीजी—मुझे भी किसी जगह बन्द कर दीजिये।

सेठजी—भेड़िया छकड़ा लेकर थोड़े ही आया है जो तुम्हें ले जावेगा?

१०४—आपही का नाम लिख लीजिये।

जज—(एक बच्चा से जिस पर मुकदमा था) तुम्हारा क्या नाम है!

वेश्या—गुलनार।

जज—तुम्हारे पति का क्या नाम है?

वेश्या—(हिचकते हुए) आप ही का नाम लिख लीजिये।

३०५—मर्द पान।

आदमी—(अपने मित्र से जो पान के बाद तम्बाखू खाता था) भाई! पान के बाद तम्बाखू क्यों खाते हो?

मित्र—जब तक पान के बाद तम्बाखू न खाई जाय तब तक वह पान मर्द नहीं बनता। मर्द तो मर्द पान ही खाते हैं?

आदमी—तो क्या आप मर्द हैं?

मित्र—इसमें क्या शक है?

आदमी—शक यही कि पान खुद पुल्लिंग है, स्त्रीलिंग तम्बाखू मिलने से वह नपुंसकलिंग हो जावेगा, फिर आप कैसे मर्द रहे?

३०६—उसका बाप पियेगा।

पति—(स्त्री से बच्चे के रोने के कारण नाराज होते हुए) उसे दूध क्यों नहीं पिला देती?

स्त्री—वह पीता तो है ही नहीं। रोता है।

पति—पियेगा क्यों नहीं? वह पियेगा और उसका बाप पियेगा। पिला तो सही।

१०७–एक घमंडी।

बिहारी—(हरी से जिसे कविता करने का बड़ा घमंड था) तुलसीदास जी हिन्दी के एक बड़े कवि हैं।

हरी—नहीं वह बड़े नहीं हो सकते। लोगों का कथन ठीक नहीं है।

बिहारी—(उसे घमंडी सोचकर) पर लोग ऐसा नहीं कहते कि वे तुम से भी बड़े हैं। वे कहते हैं कि वे एक महा कवि थे।

हरी—हाँ तो मैं यह मान सकता हूँ।

१०८–आपके पास लियाकत नहीं।

फकीर—(एक भले आदमी से) बाबू साहब एक पैसा मिल जाय।

बाबू सा—यदि तुम, लोगो से लियाकत माँगते तो अब तक तुम कैसे लायक हो जाते?

फकीर—पर मैं जिसके पास जो कुछ देखता हूँ उससे वही माँगता हूँ।

१०९–खुशी का इनाम।

एक गवैये ने एक धनवान को अच्छे अच्छे गाने सुनाये, उसने प्रसन्न होकर कहा तुम कल इसी समय आओ, तुम्हें २०)

रु० दूँगा। गवैये ने घर जाकर खुशी में अपनी सारी सम्पत्ति खर्च कर दी। दूसरे दिन उसने जाकर धनवान से रुपये माँगे।

धनवान—काहे के रुपये चाहिये ?

गवैया—कल मैंने आपको २ घंटे गाना गाकर खुश किया था और आपने इनाम देने का वादा किया था। वे इनाम के रुपये।

धनवान—यदि तुमने मुझे दो घंटे खुश किया तो मैंने भी तुम्हें २४ घंटे खुश किया। न तुमने मुझे कुछ दिया और न मैं तुम्हें कुछ दूँगा।

२१०—आँख बिगड़ गई।

एक धनवान् स्त्री की आँखों में कम दिखाई पड़ने लगा था। उसने एक वैद्य से शर्त की कि यदि उसे आँखों से फिर से अच्छी तरह दिखाने लगे तो वह ५००) देगी। वैद्यने इलाज किया आँखों में पट्टी चढ़ा दी और उसके घर की अच्छी २ और कीमती चीजें उड़ाना भी शुरू कर दिया। जब कुछ दिनों में उस स्त्री की आँखें अच्छी हो गई तो वैद्य ने रुपये माँगे। वह बोली कि मेरे घर की कुछ चीजें दिखाई नहीं पड़तीं कहाँ गई ? वैद्य बोले मुझे क्या मालूम, मुझे तो शर्त के अनुसार रुपये देना होगा। स्त्री ने कहा कि आप को रुपया माँगने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मैं तो अभी भी अपनी चीजों को अच्छी तरह नहीं देख सकती। आपने मेरी आँखें और भी अधिक खराब

कर दी। वैद्य ने उसके मन की बात जान कर चुपचाप अपनी राह ली।

३११—दूध कितने ऊपर से पिऊँ।

वैद्य ने रोगी को दवा देकर कहा—"जाओ रोज चार चमचे खाकर ऊपर से थोड़ा दूध पीना।"

रोगी—पर मेरे यहाँ तो एक ही चम्मच है, तीन और कहाँ से लाऊंगा! और दूध कितने ऊपर से पिऊँगा!

३१२—घास के आगे घोड़ा नहीं है।

एक मालगुजारने एक आदमी से घोड़ा लिया और ५) माहवार पर उसे नौकर रख लिया। दो दिन बाद नौकर बोला, "हुजूर मेरी तनख्वाह कब बढ़ेगी।

मालगुजार—जब हम तुम्हारे काम से बहुत खुश होंगे तब बढ़ेगी।

एक दिन मालगुजार और नौकर बोनी के कारण खेत में सो रहे थे पास ही घोड़ा बँधा था। आधीरात को मालिक ने नौकर से कहा, "अरे क्या कर रहा है?"

नौकर—विचार कर रहा हूँ।

मालिक—काहे का विचार कर रहा है?

नौकर—घोडा बाँधने की खूँटी के नीचे की मिट्टी कहाँ गई ?

मालिक—(सोकर और थोडी देर बाद जागकर) क्या करता है ?

नौकर—विचार करता हूँ।

मालिक—काहे का ?

नौकर—बकरी के पेट में बैठ कर कौन एक सी मेंगनी (लेंडी) बनाता है ?

मालिक—बेवकूफ, ऊटपटाग बातें सोचता है । देख घोड़े के आगे घास है या नहीं ?

नौकर—घास तो है। पर घास के आगे घोटा नहीं है

मालिक—घोडा कहाँ गया ?

नौकर—वे चोर ले जा रहे हैं।

मालिक—(कुछ साथियो को लेकर चोर का पीछा करते हुये) जा तलवार ले कर जल्दी आ।

नौकर गया और जल्दी में म्यान खींच लाया पर तलवार वहीं टँगी रही। उधर मालिक ने चोरों को बाँध लिया था। जब नौकर ने मालिक को केवल म्यान ही दी। तो वह यह देख कर खूब हँसा।

नौकर—(हँसते देख) अब आप मेरी तनख्वाह बढ़ा दीजिये क्योंकि अब आप मेरे काम से बहुत खुश हैं।

२१३—काल्पनिक रोग ।

डाक्टर—महाशय आपकी स्त्री को जो रोग है वह काल्पनिक है । इससे मैं कोई काल्पनिक दवा तजवीज करूँगा ।

प्रार्थी—अच्छी बात है पर मूल्य और फीस भी काल्पनिक ही लीजियेगा ।

२१४—गड्ढा लाना चाहता है ।

माँ (बड़ी लड़की से) बिन्नी छोटा भैया क्या रोता है ?

लड़की—उसने बाग में एक गड्ढा खोदा है और उसे उठा कर लाना चाहता है, पर वह आ नहीं सकता इससे रोता है ।

२१५—गधी के बच्चे ।

स्त्री—(बच्चे से प्यार के साथ जो उसकी माँ की गोद में था) ऐ रे गधी के बच्चे ।

माँ—(बच्चे की माँ उसके पति से) तब तो आपको एक दुलत्ती खानी पड़ेगी ।

२१६—मैं ही पसंद न आया ।

एक महाशय को अंग्रेजी ढंग से विवाह करने की सूझी ।

वे जौहरी से एक अँगूठी अपनी प्रेमिका के लिये लाये; पर शीघ्र ही वापिस करने चले गये।

जौहरी—क्यो ? क्या उन्हे अँगूठी पसद नहीं आई ?

महाशय—अँगूठी तो पसद आई पर मै ही पसद नहीं आया।

२१७--किसी की भलाई की है ?

स्त्री—कभी आपने किसी की कोई भलाई की है ?

पति—हाँ की है, तुम्हारे साथ विवाह करके तुम्हारी।

२१८--गरीबी यहाँ लाई।

जेलर—(कैदी से) मै समझता हूँ, गरीबी तुम्हें यहाँ लाई ?

कैदी—जी नहीं, यहाँ आने के पहिले मे रुपये बना रहा था।

२१९—तीन मादा मक्खी थीं।

"आज मैंने ५ मक्खियाँ मारीं, तीन मादा थीं और दो नर"।

"क्यो ? नर मादा कैसे जाना ?"

"पहुत ही सड़क में, तीन तो पाड़ी पर बैठी थीं और दो छोटे पर।"

१२०—वकील हिम्मतवर है।

मेरा वकील हिम्मतवर है।'

"कैसे जाना?"

"उसने मेरे मुकद्दमे पर रात को विचार किया। जरा उसका बिल देखो, लिखा है,—मैंने तुम्हारे मुकद्दमे पर रात को विचार किया जिसकी फीस आठ रुपया हुई।"

१२१—खर्चीली चीजें गईं।

एक—(मित्र से) आज उदास क्यों हो?

दूसरा—(वह नमकहराम शूफर) मोटर के साथ मेरी स्त्री भी ले भागा।

एक—(मजाक के साथ) उसने आपके साथ बड़ा उपकार किया।

दूसरा—(झल्लाकर) क्यों?

एक—येही दोनों चीजें आपके पास अधिक खर्चीली थीं।

१२२—घी से चींटी निकाली।

जज—तुम स्वीकार करते हो, कि कल रात को तुम इस-

शकर के घर में घुसे थे। वहाँ तुम्हें रात को क्या काम था ?

कैदी—हुजूर, मैंने समझा वह मेरा घर है।

जज—पर तुमने वहाँ किया क्या ?

कैदी—घी के वर्तन में एक चींटी गिर गई थी उसे निकाल रहा था।

जज—लेकिन जब उसकी स्त्री आई तब इधर उधर क्यों लुकते फिरे ?

कैदी—सरकार, मैंने समझा कि वह मेरी स्त्री है।

३२३--कमजोर मोटर।

एक मोटर के धक्के से एक वूढ़ा आदमी गिर पड़ा मोटर भी दूसरी तरफ खड़ी होते समय एक लारी से धक्का खाकर गिर पड़ी। वुड्ढे को चोट नहीं थी। वह जब धूल झाडते हुये उठा और मोटर को गिरी और टूटी देखी तो कहता है, "ओह! ओह!! मुझसे धक्का खाने से यह हाल ? वडी कमजोर मोटर वनी है।

३२४--मटका लो।

एक मित्र—(कुम्हारिन को मटका वेचते देखकर) अजी यह मटका ले लो।

दूसरा मित्र—मुझे तो जरूरत नहीं है तुम्हीं मटकालो।

३२५—हाथों ने चोरी की।

राजा—(चोर से) तुमने चोरी क्यों की ?

चोर—सरकार, मैंने तो नहीं की।

राजा—तो फिर किसने की ?

चोर—मेरे हाथों ने।

राजा—(दरबान से) अच्छा इसके हाथों ही को कैद कर लो।

३२६—'नहीं' मत कहना।

एक लड़का सबक याद नहीं करता था।

मास्टर—क्यों सबक याद है ?

लड़का—(हमेशा) नहीं।

मास्टर—अब कल से सबक याद कर के आना और नहीं" मत करना।

मास्टर—(दूसरे दिन) क्यों सबक याद है ?

लड़का—(याद न होते हुये भी) जी हाँ।

मास्टर—(कई प्रश्न करने और उत्तर न मिलने पर) क्यों तुम तो कहते थे जी हाँ। पर सबक तो तुम्हें याद नहीं है।

लड़का--मास्टर साहब आपने कल कह दिया था, कि कल से "नहीं" शब्द मत कहना। इससे मैंने जी हाँ कह दिया था।

६२७—मुँह में आग।

एक पिता ने अपने पुत्र को उपदेश किया कि यदि कहीं आग लग जाय या धुआँ निकलता हो तो उसपर राख या धूल डालना चाहिये। दूसरे दिन पिता जी हुक्का पी रहे थे। उनके मुँह से धुआँ निकल रहा था। लडका गया और दोनों मुट्ठियों में राख भर लाया। उसी मौके पर पिता जी ने जँभाई ली और मुँह से कुछ धुआँ भी निकल रहा था। लडके ने झट पिता के मुँह में राख डाल दी। पिता ने मुँह साफ किया और लडके से नाराज होकर कहा, तो उसने पिछले दिन का उपदेश याद दिलाया। वे बहुत सर्माये।

३२८—कुली की जरूरत नहीं।

मुसाफिर—(घबराया हुआ) कुली! कुली!! मेरा असबाब गुम गया।

कुली—अच्छा हुआ, अब आपको कुली की जरूर नहीं रही।

३२९—मैं भी तो भूला हुआ हूँ।

"ऐ भाई, जरा हमारी बहिन को घर पहुँचा दो।"
"महाशय आप ही क्यों नहीं पहुँचा देते !"
"मित्र, मैं भी तो भटका हुआ हूँ।"

३३०—घड़ी तो बैठी है।

पिता—(पुत्र से) बेटा, देखो तो घड़ी चल रही है क्या ?

पुत्र—(लौट कर) पिताजी, घड़ी तो बैठी है और कुत्ते के समान उसकी जीभ हिल रही है।

३३१—स्कूल नहीं जाता।

माँ—(पुत्र से) बेटा बुरे लड़कों के साथ नहीं रहना चाहिये।

पुत्र—हाँ माता जी इस लिये तो मैं स्कूल नहीं जाता।

३३२—पिता से शादी कर लीजिये।

गोविन्द—मोहन तुम शान्ति से शादी करने का हठ छोड़ दो।

मोहन—पर आप ही क्यों नहीं छोड़ देते ! मैं तो विवाह उसीसे करूँगा।

गोविन्द—लेकिन वह तो मुझे ही पसन्द करती है ।

मोहन—वाह, उसके पिता की तो पक्की राय मेरे साथ विवाह करने की है ।

गोविन्द—बस आप उसके पिता से शादी कर लीजिये और मै उस सुन्दरी के साथ शादी कर लूँगा ।

२२३—लौकी का झगड़ा ।

"कहिये महाशय, कल क्या झगटा सा हो रहा था ?"

"कुछ नहीं, यों ही एक छोटी सी बात थी। मैंने एक लौकी का बीज बोया था । वह उगा और बेल बढ़ गई ।"

"जी हाँ बेल तो बढेगी ही ।"

"पर वह बढ़कर मेरे पडोसी की हद में पहुँच गई और उधर उसमे लौकी लगी ।"

"जरूर लौकी लगेगी । जब बेल है तो लौकी लगेगी ही ।"

"पर लौकी पडोसी ने तोड ली ।"

"वह तो तोडेगा ही क्यों कि उसकी हद में थी ।"

"मैंने लौकी माँगी ।"

"आपने ठीक किया। क्यो कि बेल तो आपकी ही थी ।"

"पर उसने न दी और आँख बताने लगा ।"

"उसने जैसा उचित समझा वैसा ही तो किया ।"

"क्यों ही उसने आँखें बनाईं कि मेरा मुँह छूटा।"

"यह छूटे क्यों नहीं! वह आँख बनावे और आप सहते रहें।"

"इसी पर उसने नाराज होकर मेरे कान खींच लिये।"

"उसने ठीक किया, भला कोई भी गालियाँ सुन सकता है!"

"पर मैने भी उसे चार चपतें चटकाई।"

"सो तो आपने बहादुरी का काम किया।"

"पर फिर उसने मुझे डंडे मारना शुरू किया।"

"वह भी आदमी था। आप उसे चपत जमावें और वह कुछ भी न कहे!"

'फिर तो मैंने गुस्सा होकर उसे पत्थर पर पछाड़ दिया।'

"यह तो आपने बहुत अच्छा किया, पर जरा जोर से और पटका होता, ताकि वह फिर चीं—चपड़ ही न करता।"

'अब तो हमारी कुश्तमकुश्ता शुरू हो गई।"

'तब तो बड़ा मजा आया होगा!'

अरे मजा काहे का तमाम हड्डी टूट गई और लोहू लुहान हो गये।'

"पर झगड़े में ऐसी बात तो होती ही है उसका क्या डर!"

"अब क्या करना चाहिये!"

"अब मुकदमा लड़ना चाहिये।"

"इससे तो सब धन खर्च हो जावेगा। फिर क्या करूँगा?"

"पहिले ख़र्च कर डालो फिर बताऊँगा।"

"अरे भाई अभी बताओ फिर क्या बताओगे?"

"यही कि फिर एक लौकी के लिये लड़ो।"

३३४—विट्ठलभाई पटेल।

स्वर्गीय पटेल विट्ठलभाई विश्राम कर रहे थे। एक अंग्रेजी पत्र का सम्वाददाता आया। उसे देखकर पटेल ने अपने सेक्रेटरी से कहा कि यह भूत कहाँ से आया?

सेक्रेटरी—एक सम्वाददाता है और आपसे मिलना चाहता है।

पटेल—अच्छा उससे कह दो, कि मुझे नींद आ गई है।

सेक्रेटरी—पर आप तो जाग रहे हैं।

पटेल—अच्छा तो कह दो कि मुझे बुखार आ गया है।

सेक्रेटरी—पर आपका शरीर तो ठंडा है।

पटेल—क्योंकि मुझे ठंडा बुखार आया है।

सेक्रेटरी के अधिक निवेदन पर मिलने की आज्ञा मिल गई।

सम्वाददाता—(जाते समय) मि पटेल, आपकी क्या उमर है ?

पटेल—शायद मेरे पिता बता सकें।

सम्वाददाता—(आश्चर्य से) हैं !

पटेल—क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं ?

सम्वाददाता—यदि आपकी ऐसी कृपा हो तो क्या कहना है !

पटेल—(आकाश की ओर हाथ बताकर) अच्छा उधर जाइये।

१२५—जेल में पटेल।

जेलर—कहिये मिस्टर पटेल, कैसे हैं !

पटेल—(जब जेल में थे) अभी तक तो जीता हूँ, पर मिस्टर सेक्सटन (जेलर) यह जीवन मुझसे बर्दाश्त न होगा मैं माफी माँगूँगा।

जेलर—हाँ है तो ठीक विचार कहिये कार्यवाही की जाय ?

पटेल—पर आपने दाढ़ी देखी है ! क्या यह बुढ़ापे में माफी माँगेगी ?

जेलर—झेंप कर चल दिया।

३३६–पटेल की विनोदप्रियता।

देशबन्धु के अवसान पर बम्बई में एक सभा थी। विट्ठल भाई पटेल अध्यक्ष चुने गये, पर ठीक समय पर सभा मे न पहुच-ने से उन्हें एक कार्यकर्त्ता बुलाने गया।

पटेल—(अनजान की तरह) कहिये कैसा आना हुआ ?

कार्यकर्त्ता—आज मीटिंग है न ?

पटेल—कैसी मीटिंग ? कहाँ जाना है ? क्यो जाना है ?

कार्यकर्त्ता—आज देशबन्धु के सम्बन्ध मे सभा है न ?

पटेल—तो क्या आज की सभा में दासबाबू भाषण करेंगे ?

कार्यकर्त्ता—नहीं साहब, देशबन्धु का गुणगान उनकी स्मृति में पटेल साहब करेंगे।

पटेल—अरे क्या कहते हो ? क्या दासबाबू चल दिये ? कब ? क्या हुआ ? खैर, अब भगवान् को भी दासबाबू से कुछ सलाह लेनी होगी। भला ऐसे वैरिस्टर की किसे जरूरत नहीं पड़ता ?

३३७–पटेल की विनोदप्रियता।

एक बार पटेल साहब स्टेशन तक किराये के ताँगे पर आये और बिना पैसे चुकाये ही प्लेटफार्म पर चले गये। ताँगे

बाला उनके पीछे २ मीतर चला गया और धीरे से कहा "साहब पैसे"।

फ्रेंच साहब—(हँसकर) अरे भाई कैसे पैसे ? पहिचानते भी हो कि येही ? डाकीयाक तो बहुत होते हैं। जल्दी जाओ नहीं तो टिकट कलक्टर फिकिट माँगेगा।

तांगेवाला—(बड़ा उलझन में) साहब ताँगा खड़ा है। दर होती है।

फ्रेंच—अरे भाई पैसे तो गये ही, ताँगा कहीं चला न जाय। इतने में गाड़ी आगई तो फ्रेंच साहब ने तांगेवाले को १) देकर विदा किया।

११८—मेरे पीछे मत आ।

हीरालाल और जवाहरलाल दो भाई थे। बड़ा भाई हीरा खेल खेलने जाने लगा तो उसका छोटा भाई उसके पीछे हो लिया तो हीरालाल बोला "मेरे पीछे मत आ नहीं तो मारूँगा।" जवाहरलाल न माना और दोनों चले। इतने में उधर से एक व्यक्ति (आदमी या साँड) आ पहुँचा। इसमे दोनों भाई पीछे भागे। अब जवाहरलाल बोला, मेरे पीछे मत आ नहीं तो मारूँगा।

११९—बीबी पास हैं।

एक खाँ साहब तहसीलदार थ। एक दिन वे जनानखाने में

थे। चपरासी विसिटिंग कार्ड लेकर आया क्योंकि तहसीलदार के एक मित्र अये हुए थे।

कार्ड पर लिखा था, "रहमत खाँ बी ए।"

तहसीलदार ने चपरासी से कहा, कि जाओ उनसे कहो कि वे बी ए पास हैं तो हम बीबी पास हैं। नहीं मिल सकते।

३४०—आपका पसीना।

एक मौल्वी का रंग काला था। एक दिन पढ़ाते पढ़ाते वे बाहर चले गये। लड़कों ने स्याही ढोल दी। जब मौलवी लौटे तो उन्होंने काला धब्बा देखा। उन्होंने उसके बारे में पूछा—लड़कों ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। पर एक शरारती ने कहा—"जनाब, यह कहीं आप ही का पसीना तो नहीं है?"

३४१—डेढमन का कुरान।

जज—(एक अपराधी से जो अपराध कबूल नहीं करता था) यदि तुमने अपराध नहीं किया है तो कुरान उठाना पड़ेगा।

मियाँ—हुजूर, डेढ़ मन तक का तो उठा सकूँगा, पर इससे भारी न उठेगा।

३४२—अकबर की खोपड़ी।

एक बाजीगर एक खोपड़ी लिए था। वह कहता था कि यह अकबर की खोपड़ी है। यह सुन एक तमाशगीर बोल उठा—"जनाब, हमने मिस्त्री के अजायब घर में जो खोपड़ी देखी थी वह खोपड़ी तो छोटी थी।"

बाजीगर—हाँ होगी, पर वह बचपन की होगी यह तो बुढ़ापे की है।

३४३—दो हिकलाने वाले।

एक जगह कई पटवारी और रेवन्यू इन्स्पेक्टर इकट्ठे कार्य करने पहुँचे। उनमें एक इन्स्पेक्टर और एक पटवारी हिकलाते थे। एक मसखरे पटवारी ने उस हिकलाने वाले पटवारी को बुलाकर कहा कि "जाओ यह कागज (एक फालतू कागज) अमुक इन्स्पेक्टर को दे आओ। क्योंकि यह उनकी जेब से गिर गया था।"

पटवारी—(इन्स्पेक्टर से) हु हु हु जूर य य मे अ आपका क क कागज गि गि गिर गया था।

इन्स्पेक्टर—न न न नहीं, य य ये कागज मेरा न न नहीं है।

पटवारी—न न नहीं य य यह आपका ह ह ही गि गि गिर ग ग गया था।

इन्सेक्टर (क्रोध मे)—क क क क्यों रे मे मे मेरी न न नकल करता ह ह है।

पटवारी—न न नहीं साहब अ अ आप ही मे मे मेरी न न नकल करते हैं।

इन्सेपेक्टर—फि फि फिर न न नकल की। द द द दश क क कोडे लगाऊँगा।

पटवारी–अ अ आप न न न नहीं म मार स स सकते। जब ज्यादा झगड़ा बढ़ा तो लोगो ने आकर समझाया।

३४४–जहन्नुम में अग्रेजों का पहरा।

एक अग्रेज अपने हिन्दुस्थानी नौकर पर कुछ नुकसान करने के कारण बड़ा नाराज हुआ।

नौकर—(डॉटे जाने पर) हुजूर, अब मुझसे यहाँ काम नहीं बनेगा। मैं दूसरी जगह चला जाऊँगा।

साहब—जा, चला जा जहन्नुम (नरक) में।

नौकर—साहब, जहन्नुम में तो गया था।

साहब—फिर लौट कैसे आया?

नौकर—साहब, वहाँ अंग्रेजों का पहरा दरवाजे पर है, वे भीतर नहीं जाने देते। मैंने आपका नौकर होने का प्रमाण भी दिया तो भी मुझे भीतर न जाने दिया। और कहा कि "पहिले अपने साहब को लेकर आओ।" अब आपकी क्या आज्ञा है?

३४५—तीनों खराब। ✓

एक सेठ ने बुलाये तीन मजदूर।
दो लूले एक के हाथ ही नाहीं।
उन्होंने खोदे तीन तालाब।
दो सूखे एक में पानी ही नाहीं॥
उन्हें मजूरी दी तीन मिश्री।
दो खोटी एक चली ही नाहीं॥
मजदूरों ने न्योते तीन ब्राह्मण।
दो काने एक के आँख ही नाहीं॥
उन्होंने पकाये तीन हंडे।
दो कच्चे एक पका ही नाहीं॥
फिर बैठे सब भोजन करने।
दो भूखे एक ने जीमा ही नाहीं॥
उन्हें दक्षिणा दी तीन रुपये।
दो खसखट एक खनकिन ही नाहीं॥
उन्होंने खरीदे तीन बैल।
दो ऊँगाड़ एक के पैर ही नाहीं॥
बैलों से जोते तीन खेत।
दो पथरीले एक में मिट्टी ही नाहीं॥
उनमें बोई तीन फसल।
दो उजड़ी एक उगी ही नाहीं॥

३४६—अध्यापिका की आवश्यकता।

एक मित्र—कहो जी, आजकल समाचार पत्रों में अध्यापिकाओ की बहुत माँग आती है?

दूसरा मित्र—हाँ भाई, प्राय हर एक पत्र में एक दो माँग रहती ही है।

पहिला—तो फिर आप भी एक माँग छपवा दो।

दूसरा—किस प्रकार का नमूना छपवाना चाहिये।

पहिला—इस तरह—"एक हिन्दी अध्यापिका की आवश्यकता है। इग्लिश का ज्ञान विशेष योग्यता समझी जायगी। पर गाना और सीना उत्तम होना चाहिये। वेतन २५—१—५०। प्रार्थना पत्र १—१२—३४ तक आना चाहिये।

दूसरा—पर कहाँ के लिये अध्यापिका की आवश्यकता है?

पहिला—एक अध्यापक के घर के लिये।

३४७—आलसी नौकर।

महाशय—(एक इजिनियर के नौकर से आवश्यक काय के लिये) क्या इजीनियर साहब घर में हैं?

नौकर—कह नहीं सकता सरकार।

महाशय—क्यों? क्या तेरे जबान नहीं है?

नौकर—है क्यों नहीं? पर बिना जाने कैसे कह दूँ कि भीतर हैं कि बाहिर?

महाशय—हट बातें न कर, जा देख।

नौकर—तो क्या आप चाहते हैं कि आपकी बातों का उत्तर न दूँ?

महाशय—कमबख्त, पाजी जो कहता हूँ सो सुनता है कि नहीं?

नौकर—सुन तो रहा हूँ सरकार, बहरा थोड़े ही हूँ?

महाशय—अरे बहिरे के बच्चे कहता हूँ कि साहब मकान में हैं या नहीं? सुना?

नौकर—(कान पर हाथ रखकर बैठते हुये) सुन लिया सरकार।

२४८—दरख्वास्त का नमूना।

गोविन्द—क्यों भाई पोस्ट आफिस में जगह खाली है। दरख्वास्त दी या नहीं?

हरी—कल की ही दे दी और अच्छी तरह से बना कर जिससे कि साहब खुश हो जावें।

गोविन्द—आपने कैसा आवेदन पत्र लिखा? जरा मुझे बताओ।

हरी—ऐसा—

श्रीमान् पोस्टमास्टर जनरल साहब

नागपुर। C. P

इश्तहार में एक क्लर्क की जगह खाली होने का विज्ञापन

देख उस स्थान के लिये मेरे मुँह में पानी आ गया। मै एन्ट्रेन्स तक पढ़ा हूँ, पर घर के नोन, तेल, लकड़ी ने मेरी कालिज की पढ़ाई को गुड गोवर कर दिया। यह आवेदन पत्र भेजकर इस आशा मे हूँ, कि देखे ऊँट किस करवट बैठता है। कृपया, "तुलसी सत सुअत्र तरु फूल फलें पर हेत"। का परिचय देते हुए मेरी दाल वाटी का प्रबन्ध कर दीजिये।

गोविन्द—वाह ? क्या खूब ! साहब प्रसन्न तो क्या ? लोट-पोट हो जावेगा। पर देखना, कहीं आशा को भी चूर चूर न कर दे।

२४९—सब ठीक हैं।

मालिक—(नौकर से) क्यों रे सदू, कैसे आया ?

नौकर—हुजूर, आपकी खबर लेने आया हूँ।

मालिक—घर के क्या हाल—चाल हैं ?

नौकर—सब अच्छे हैं।

मालिक—हमारे भाई का क्या समाचार है ?

नौकर—वे तो अच्छे पर हैजे से चल बसे।

मालिक—ऐं, हाय ! हाय !! अरे और हमारी माँ का क्या हाल है ?

नौकर—सरकार, वे आपके भाई के दुःख में रो रो कर मर गईं।

मालिक—(लम्बी साँस लेकर) हा! ईश्वर! अरे हमारे बच्चे तो मजे में हैं!

नौकर—साहब चार दिन हुए घर में आग लग गई और सब स्वाहा हो गये।

मालिक—(शोक और क्रोध से) क्यों रे, तू तो कहता था कि सब अच्छे हैं और वहाँ तो सर्वनाश हो गया।

नौकर—हाँ मालिक, क्योंकि आपको इनकी चिन्ता से दुःखी न होना पड़ेगा।

मालिक—चचेरे नौकर की। हर—

३५—हाथ में क्या आता है ?

एक दिन हेडमास्टर ने कक्षा के कई लड़कों को इसलिये ..J कि वे ऊधम मचा रहे थे। अब वे आपस में यों त्यों बातें करने लगे।

एक—व्यर्थ ही मुझको मारा।

दूसरा—पर ऐसे व्यर्थ मारने में उनके हाथ में क्या रहता है।

तीसरा—उनके हाथ में छड़ी रहती है।

दूसरा—नहीं जी उनके हाथ में आता क्या है!

तीसरा—यह उनके हाथ में तुम्हारी चोटी और चोटी दोनो आती हैं।

३५१—मुझे पुकारा ?

मोतीलाल—(पुकार कर) ओ भाई हीरालाल ।

हीरालाल—ऐं, क्या मुझे पुकारा ।

मोतीलाल—हाँ आप ही को तो पुकारा ।

हीरालाल—मैं समझा कि आप मुझे पुकारते हैं ।

३५२—अकेले का डर ।

शौकीन लेडी—(पति से) क्या कारण है कि युवक रात्रि में घर नहीं रहते ।

पति—उन्हें डर रहता है, कि कहीं घर रात्रि भर अकेले न रहना पड़े ।

३५३—वकील की बहस ।

वकील—(जज से) महाशय, मुझे इस गवाह को क्रास करने की आज्ञा दीजिये ।

गवाह—(बीच ही में) क्या आप मुझे क्रास करेंगे ?

वकील—हाँ करूँगा ।

गवाह—नाव से या पुल से ?

वकील—इसके क्या माने ?

गवाह—अजी वकील साहब, उपाधि की पूँछ लगाने पर भी

तुम इतने बड़े हनूमान नहीं हो गये, कि मुझ चिदानन्द (गवाह का नाम) सागर को पार कर सको।

३५४—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम सच २ बताओ कि मुकदमें के बारे में क्या जानते हो ?

गवाह—यही जानता हूँ, कि मुकदमें में आप वकील हैं, श्यामलाल नालिश करने वाला है असामी राम है और मैं गवाह हूँ।

३५५—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम फर्यादी को जानते हो ?

गवाह—नहीं।

फर्यादी—(गवाह से) महाराज, इतने दिनो तक मेरा दूध खाया और अब कहते हो कि "मैं नहीं पहिचानता"।

गवाह—यह तो मै नहीं कहता, कि तुम्हारे दूध दही को नहीं पहिचानता। उसे तो मै खूब पहिचानता हूँ। जब देखता हूँ कि पाव भर दूध में तीन पाव पानी और दही में सोड भरा है तभी समझ जाता हूँ कि यह मोहनी (फर्यादी) ग्वालिन का ही दूध है और नहीं है। दूध दही तो खूब पहिचानता हूँ।

फर्यादी—(गवाह से) दूध दही पहिचानते हो पर मुझे नहीं पहिचानते ?

गवाह—औरतों को कब कौन पहिचान सकता है वहिन ? विशेष कर ग्वालिन को सिर पर मटकी होने पर किसकी ताकत है कि पहिचान सके ?

३५६—वकली की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम्हारा निवास कहाँ है ?

गवाह—मेरा निवास नहीं है

वकील—अजी मै पूछता हूँ कि तुम्हारा घर कहाँ है ?

गवाह—घर क्या कोठरी भी नहीं है।

वकील—तो फिर रहते कहाँ हो ?

गवाह—कभी यहाँ कभी वहाँ।

वकील—कोई अड्डा तो है न ?

गवाह—था, जब रसिक बाबू थे। अब नहीं है।

वकील—अब कहाँ है ?

गवाह—अदालत में।

३५७—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम्हारा पेशा क्या है ?

गवाह—पेशा कैसा ? मै न तो रंडी हूँ और न वकील ही हूँ।

वकील—मेरा मतलब यह है, कि आप खाते पीते कैसे हैं ?

गवाह—भात में दाल डाल कर दाहिने हाथ से मुँह में रख कर निगल जाता हूँ।

तुम इतने बड़े हनूमान नहीं हो गये, कि तुम चिदानन्द (गवाह का नाम) सागर को पार कर सको।

९५४—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम सच २ बताओ कि मुकदमें के बारे में क्या जानते हो?

गवाह—यही जानता हूँ, कि मुकदमें में आप वकील हैं, इस्तगासा नालिश करने वाला है असामी रामू है और मैं गवाह हूँ।

९५५—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम फर्यादी को जानते हो?

गवाह—नहीं।

फर्यादी—(गवाह से) महाराज इतने दिनों तक मेरा दूध दही खाया और अब कहते हो कि "मैं नहीं पहिचानता"।

गवाह—यह तो मैं नहीं कहता, कि तुम्हारे दूध दही को नहीं पहिचानता। उसे तो मैं खूब पहिचानता हूँ। जब देखता हूँ कि पाव भर दूध में तीन पाव पानी और दही में ठोड़ भरा है तभी समझ जाता हूँ कि यह मोहनी (फर्यादी) ग्वालिन का ही दूध है और दही है। दूध दही तो खूब पहिचानता हूँ।

फर्यादी—(गवाह से) दूध दही पहिचानते हो पर मुझे नहीं पहिचानते?

गवाह—औरतों को कब कौन पहिचान सकता है वहिन ? विशेष कर ग्वालिन को सिर पर मटकी होने पर किसकी ताकत है कि पहिचान सके ?

३५६—वकली की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम्हारा निवास कहाँ है ?

गवाह—मेरा निवास नहीं है

वकील—अजी मैं पूछता हूँ कि तुम्हारा घर कहाँ है ?

गवाह—घर क्या कोठरी भी नहीं है।

वकील—तो फिर रहते कहाँ हो ?

गवाह—कभी यहाँ कभी वहाँ।

वकील—कोई अड्डा तो है न ?

गवाह—था, जब रसिक बाबू थे। अब नहीं है।

वकील—अब कहाँ है ?

गवाह—अदालत में।

३५७—वकील की बहस।

वकील—(गवाह से) तुम्हारा पेशा क्या है ?

गवाह—पेशा कैसा ? मै न तो रंडी हूँ और न वकील ही हूँ।

वकील—मेरा मतलब यह है, कि आप खाते पीते कैसे हैं ?

गवाह—भात में दाल डाल कर दाहिने हाथ से मुँह में रख कर निगल जाता हूँ।

वकील—दाल भात कहाँ से मिलता है ?

गवाह—भगवान देते हैं तो मिलता है, नहीं तो नहीं।

वकील—कुछ पैदा करते हो ?

गवाह—हाँ साहब, एक लड़का पदा किया था, पर मर गया।

वकील—नहीं जी, कुछ धन कमाते हो ?

गवाह—एक पैसा नहीं।

वकील—तो क्या चोरी करते हो ?

गवाह—ऐसा होता तो इससे पहिले ही मुझे आपकी शरण में आना पड़ता और आप भी उसमें से कुछ हिस्सा पाते।

वकील—तो फिर क्या भीख माँगते हो ?

गवाह—(चौंक पा) क्या ! चौबे की वृत्ति भीख ?

वकील—तो धंधा क्या लिखें ?

गवाह—लिख लीजिये ब्राह्मण भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करना।

१५८—वकील की सहस।

वकील—तुम कौन जाति हो ?

गवाह—हिन्दू।

वकील—नहीं कौन वर्ण ?

गवाह—एकदम काला वर्ण।

वकील—(क्रोध में) मै पूछता हूँ, कि तुम्हारी जाति है या नहीं ?

गवाह—है नहीं तो ले कौन गया ?

३५९—गो ऑन।

मास्टर—(अंग्रेजी स्कूल का, पहिली रीडर पढ़ने वाले लड़के से आगे पढ़ने के लिये) गो आन (Go on)

लडका—(जो नीचे खड़ा था झट बैठने की बेंच पर खडा हो गया)

मास्टर—गो ऑन बॉय (Go on boy)

लडका—मास्टर साहब, अब ऊपर कहाँ जाऊँ ?

३६०—इसी गाड़ी से आये।

टिकिट चेकर—(प्लेटफार्म पर एक से) तुम्हारा टिकट ?

आदमी—मै कहीं से नहीं आया।

चेकर—प्लेटफार्म वताओ, कहाँ है ?

आदमी—प्लेटफार्म यहाँ बिकता ही नहीं।

चेकर—पर, क्या तुम इस रेल्गाडी से आये हो ?

आदमी—वाह ! आता तो आप मुझे राह ही में न पकड़ लेते ? जैसा कि आपने मेल्सा पर कुछ लोगों को पकड़ा था।

वकील—दाल भात कहां से मिलता है?

गवाह—भगवान देते हैं तो मिलता है, नहीं तो नहीं।

वकील—कुछ पैदा करते हो?

गवाह—हाँ साहब, एक लड़का पैदा किया था, पर मर गया।

वकील—नहीं जी, कुछ धन कमाते हो?

गवाह—एक पैसा नहीं।

वकील—तो क्या चोरी करते हो?

गवाह—ऐसा होता तो इससे पहिले ही मुझे आपकी शरण में आना पड़ता और आप भी उसमें से कुछ हिस्सा पाते।

वकील—तो फिर क्या भीख माँगते हो?

गवाह—(चौबे था) क्या? चौबे की वृत्ति भीख?

वकील—तो पेशा क्या लिखें?

गवाह—लिख लीजिये ब्राह्मण भोजन का निमंत्रण स्वीकार करना।

२५८—वकील की बहस।

वकील—तुम कौन जाति हो?

गवाह—हिन्दू।

वकील—नहीं कौन वर्ण?

३६३—राणा प्रताप के दिन।

शिक्षक–(महाराणा प्रताप का पाठ पढ़ा कर) क्यों, राणा प्रताप ने अपने आपत्ति के दिन कैसे व्यतीत किये?

शिष्य–(असावधानी से) उन्होंने अपने दिन कनाड़ी गुट खाकर विताये कभी कभी एक दो फूट भी मिल जाती थी।

३६४–भूगोल का प्रश्न।

शिक्षक–(भूगोल के प्रश्न में) वर्षा के लिये कौन कौनसी बातों का होना आवश्यक है?

विद्यार्थी–(पर्चे में लिखा) वर्षा के लिये छाता होना बहुत आवश्यक है।

३६५–श्राद्ध पक्ष।

ब्राह्मण–(निमन्त्रण श्राद्ध का खाकर आये और अपने मित्र से)

आये कनागत (श्राद्ध) बाढ़ी आस।
हम तो कूदें नौ नौ हाथ॥
मित्र–(व्यंग से) गये कनागत टूटी आस।
ब्राह्मण रोवे चूल्हे पास॥

जेलर—तुम्हें कैसे मालूम, कि उन्हें मैंने मेलसा में पकड़ा था ?

आदमी—क्यों कि, वे मेरे साथी थे और आप उन्हें दूसरे डब्बे में छ गये थे।

जेलर—अब कैसे नहीं आये ?

२६१—छोड़ दो।

एक जेलर अपने तीन वर्ष के बच्चे के साथ कैदियों को देखने जेल में गया। एक कैदी ने सुन्दर बच्चे को देख प्यार से उठा लिया।

जेलर—(कैदी को डाँट कर) तुमने बच्चे को क्यों उठाया ! छोड़ो उसे। (ऐसा सुन कैदी ने बच्चे को करीब ४ फीट ऊपर से छोड़ दिया। बच्चे के गिरने पर) क्यों, क्या बच्चे की जान ले लेता !

कैदी—आप ही ने तो कहा था एक दम छोड़ दो सो मैंने एक दम हाथ छोड़ दिये। अब बच्चा गिर गया तो मैं क्या करूँ !

२६२—नदी का उपयोग।

शिक्षक—(भूगोल प्रश्न में) क्यों नदी का क्या उपयोग है ?

शिष्य—नदी का यही उपयोग है कि उसमें तैरने से मजा आता है।

मालगुजार—क्या तुम अपने पहिले दिन भूल गये ? जो मुझसे ऐसी चढ़कर बातें करते हो ?

थानेदार—वाह! वे दिन भूल जाता तो आज आपसे ऐसी बातें क्यों करता ? अब जरा देखते जाइये, आपको भी ये दिन याद रखने पड़ेंगे।

३६८—आपको भी माँ ने मारा ?

एक बालक को उसकी माँ ने मारा तो वह डर के मारे एक खाट के नीचे छिप कर बैठ गया। कुछ समय के पश्चात् लड़के का बाप आया और बालक की माँ से पूछा कि बालक कहाँ है ? वह न बोली। यहाँ वहाँ देखने पर पिता को खटिया के नीचे बालक उदास पड़ा दिखाई दिया। उसने बालक को बुलाया, पर वह न आया। इससे वह खुद ही बालक को खटिया के नीचे झुक कर उठाने लगा। बालक को ऐसा मालूम पड़ा कि पिता भी खटिया के नीचे घुस रहे हैं। वह बोला—"पिताजी क्या आपको भी माँ ने मारा ?"

३६९—जूते चाहिये।

एक व्यक्ति—(जूते की दूकान पर जाकर) मुझे जूते चाहिये ?

दूकानदार—(दिल्लगी से) कितने ?

२६६—हाथ से बनाओ ।

ड्राइंग मास्टर—कोई भी लड़का इन चित्रों को स्केल से न बनावे । हाथ से बनावे । थोड़ी देर बाद मास्टर साहब को एक लड़का ऐसा मिला जिसने स्केल पट्टी की सहायता से चित्र बनाया था ।

मास्टर—चित्र स्केल से क्यों बनाया ? हाथ से क्यों नहीं बनाया ?

लड़का—नहीं मास्टर साहब, मैंने हाथ से ही तो बनाया है ।

मास्टर—पर यह तो स्केल से बना हुआ मालूम पड़ता है ।

लड़का—जी हाँ मालूम पड़ता होगा क्योंकि चित्र में स्केल की सहायता से रेखायें खींची गई हैं ।

२६७—पहिले दिन भूल गये ।

एक अत्याचारी मालगुजार एक किसान पर बहुत अत्याचार करता । कुछ समय पश्चात् उस किसान का लड़का थानेदार होगया और उसी सर्किल में बदल कर आया । उसी समय दूसरे किसान ने मालगुजार पर फौजदारी का मुकदमा चलाया । तहकीकात उसी थानेदार ने की । थानेदार ने अपना पुराना बदला लेने को मालगुजार को मूर्ख बना लिया ।

मिती निकल रही थी। इससे वे बहुधा साहूकार से बचते फिरते थे। एक दिन वह घोडे पर सवार होकर उनके सामने से ही आ रहा था भागने का मौका न देखकर शेरीडन उसकी ओर बढे ।

शेरीडन–(बडी बेफिक्री से) अहा, आज तो आप बडे अच्छे घोडे पर सवार हैं।

साहूकार—तो क्या यह घोडा आपको पसन्द है ?

शेरीडन—बहुत ज्यादा ! पर देखें यह कितना तेज दौडता है ?

साहूकार—अपने घोड़े की तारीफ सुन कर वडा खुश हुआ और उसकी चाल दिखाने कुछ दूर दौडा ले गया । पर जब उसने अधिक तारीफ सुनने को पीछे फिर कर देखा, तो शेरीडन महोदय ला पता हो गये थे।

२७३—किसकी बीबी लाऊँ ।

शेरीडन ने अपने लडके को विवाहयोग्य देखकर उससे कहा, कि तुम अब अपने लिये एक बीबी लाओ ।"

लडका—किसकी बीबी ले आऊँ ।

२७४—चौथा दर्जा नहीं है ।

लार्ड ग्लेड्स्टन सदा तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। एक

२७०—गेहूँ का झाड़ कैसा होता है ?

महाशय—(अंग्रेजी पढ़े लिखे थे) जो लोग अंग्रेजी नहीं पढ़ उन्हें दुनियाँ का साधारण ज्ञान भी नहीं रहता।

जैसे—एक सज्जन के विद्वान् तार द्वारा पारसल भेजना चा रहे थे। उन्हें यह भी नहीं मालूम कि तार द्वारा पारसल नहीं जाती।

विद्वान्—(सज्जन के) पर कई एम एस सी० तक को यह नहीं मालूम रहता कि गेहूँ कैसे पैदा होते हैं ! वे पूछते थे, "गेहूँ का झाड़ कैसा होता है ?"

२७१—सम्राट् कम मिलते हैं।

सम्राट् जहाँगीर सफर करते समय किसी गाँव में पड़ाव डाल कर डेरे में विश्राम कर रहे थे। एक देहाती से उन्होंने अंगूर लाने को कहा। देहाती ने अंगूर लाकर उनसे २) माँगे।

सम्राट्—(आश्चर्य से) क्या इस गाँव में अंगूर कम मिलते हैं !

देहाती—जी नहीं अंगूर तो काफी मिलते हैं, पर सम्राट् यहाँ कम मिलते हैं।

२७२—शेरीडन की चालाकी।

शेरीडन ने किसी से कुछ रुपये उधार लिये थे। देने की

मिती निकल रही थी। इससे वे बहुधा साहूकार से बचते फिरते थे। एक दिन वह घोडे पर सवार होकर उनके सामने से ही आ रहा था भागने का मौका न देखकर शेरीडन उसकी ओर बढे ।

शेरीडन—(बडी बेफिक्री से) अहा, आज तो आप बडे अच्छे घोडे पर सवार हैं।

साहूकार—तो क्या यह घोडा आपको पसन्द है ?

शेरीडन—बहुत ज्यादा ! पर देखें यह कितना तेज दौडता है ?

साहूकार—अपने घोडे की तारीफ सुन कर बडा खुश हुआ और उसकी चाल दिखाने कुछ दूर दौडा ले गया । पर जब उसने अधिक तारीफ सुनने को पीछे फिर कर देखा, तो शेरीडन महोदय ला पता हो गये थे ।

३७३—किसकी बीबी लाऊँ ।

शेरीडन ने अपने लडके को विवाहयोग्य देखकर उससे कहा, कि तुम अब अपने लिये एक बीबी लाओ ।"

लडका—किसकी बीबी ले आऊँ ।

३७४—चौथा दर्जा नहीं है ।

लार्ड ग्लेड्स्टन सदा तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। एक

बार उनसे किसी ने पूछा कि "आप इतने बड़े आदमी हैं फिर तीसरे दर्जे में ही सफर क्यों करते हैं ?"

आप—इसलिये कि रेल में कोई चौथा दर्जा नहीं है ।

१७५—छोट सेठानी ।

बम्बई के एक प्रसिद्ध महाजन सेठ छोटामी ने किसी संस्था को कुछ दान दिया । संस्था के मन्त्री ने धन्यवाद देते हुए सभा में कहा कि "मुझे बड़ा हर्ष है कि हमारे नगर के दानवीर, छोट सेठानी ने १००) रुपया देकर हमें कृतार्थ किया है । (जनता इस "छोट सेठानी" पर हँस पड़ी)

१७६—रसीद की युक्ति ।

एक फेलर से किसी महाजन ने कहा कि "मैंने एक आदमी को दस हजार डालर कर्ज दिया है, पर उसने मुझे रसीद नहीं दी अब क्या करूँ ?"

राकफेलर ने कहा "आप उसे लिखिये कि जो पचास हजार डालर आप मुझसे ले गये हैं; उन्हें जल्दी वापिस करो ।" इस पर वह उत्तर देगा कि आप बेइमान हैं । मैंने तो दस हजार डालर ही लिये थे । बस यह तुम्हारी रसीद हो जायेगी ।

१७७—खुदा की सुरमादानी ।

एक गाँवके पास एक कोल्हू पड़ा था । उसे देख कुछ

उजबक इकट्ठे हो गये । इतने में लालबुझक्कड भी आ पहुँचे। फिर उन उजबकों ने उन्हें घेर लिया और कहा, "बताओ उस्ताद यह क्या है?" आपने मुँह बना कर बडी सजीदगी से कहा—

"लाल बुझकड बूझते, वे तो हैं गुरु ज्ञानी।
पुरानी होकर गिर पडी, खुदा की सुरमादानी॥

३७८—जैसा आया वैसा ही गया।

एक चोर एक घडी चुराकर बेचने ले गया। रास्ते में किसी जेबकट ने उसकी जेब काट कर वह घडी लेली। वापिस होते समय मित्र ने पूछा कि "घडी कितने में बिकी"?

चोर—जितने में ली थी उतने में बिकी?

३७९--ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का स्वाभिमान।

प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर बगाल प्रान्त में शिक्षाविभाग के उच्च अधिकारी थे। एक बार वे अपने डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन के पास जो अंग्रेज था, मिलने गये। साहब ने कुर्सी पर बैठे हुए और टेबिल पर पैर फैलाये हुए ही पडितजी से बातें की। कुछ समय बाद साहब पडितजी के घर उन साहब को किसी कार्य के लिये जाना पडा। प० विद्यासागर ने भी कुर्सी पर बैठ कर और टेबिल पर पैर फैलाते हुए बातचीत की। साहब को बड़ा बुरा लगा। उन्होंने सामने तो

कुछ न कहा पर शिक्षा-कमेटी के मेम्बर माट सा० से इसकी शिकायत की। विद्यासागर से कैफियत की गई। कैफियत में विद्यासागरजी ने लिखा।

'जब मैं साहब बहादुर से अमुक दिवस मिलने गया था तब वे मुझसे ठीक इसी ढंग से मिले थे। मैंने समझा कि शायद सभ्य अंग्रेज लोग इस प्रकार दूसरों से मिलते होंगे, अतएव मैं भी उसी प्रकार मिला।' अन्त में माट सा० के कहने पर सा० बहादुर को प० जी से क्षमा माँगनी पड़ी।

२८०—मैं उसे नहीं जानती।

पति—(अपनी चंचल स्त्री से) वह कौन था?

पत्नी मैं उसे नहीं जानती।

पति—पर तुमने उसे प्रियवर क्यों कहा?

पत्नी—क्योंकि मुझे उसका नाम नहीं मालूम था।

२८१—तार से पार्सल।

एक सेठ बीमार था। लोगों ने उसके दामाद को आने के लिये तार दिया। दामाद बहुत जल्दी आ गया। उसे देख सेठ ने पूछा कि आप इतने जल्दी कैसे आये। दामाद बोला, "तार से"। कुछ समय के बाद सेठ चंगा हो गया। एक दिन वह घड़े में लड्डू भर कर डाक घर में पहुँचा और बाबू से बोला "इस घड़े को मेरे दामाद के पास तार द्वारा भेज दीजिये"।

वावू-तार द्वारा समाचार जा सकते हैं, चीजें नही जातीं।

सेठ—वाह! चीजें कैसे नहीं जातीं? मेरा दामाद भी तो तार से आया था।

वावू-तुम समझते नहीं। यह घडा तार से नहीं जा सकता।

सेठ—(जिद करके) नहीं वावू साहव ५) रुपये ले लीजिये, पर घड़ा भेज दीजिये। (वावू ने रुपये लेकर जाली रसीद देदी)।

सेठ—(पत्र द्वारा दामाद से लड्डूओं का हाल पूछकर वावू से) क्यों वावू, लड्डू क्यों नहीं पहुँचे?

वावू—मैने आप से कहा था, कि इतना वडा घडा तार से न जावेगा, पर आप न माने। मैंने घडा तार में लटका कर भेजा। वह थोडी दूर गयाही था कि उधर से किसी का तार द्वारा भेजा हुआ मूसल सनसनाता आ पहुँचा। वस मूसल की चोट घडे में जोर से पडी तो वह फूट गया और लड्डू नष्ट हो गये।

३८२-साफ कपडे कव पहिनोगे?

गुरु—(पांच साल के वालक से) आज तुमने मैला कुरता क्यों पहना है।

वालक—आज हमारे घर कोई मर गया।

गुरु—साफ कपड़े कव पहिनोगे?

वालक—जव कोई नहीं मरेगा।

१८३—आपका क्या रिश्ता है ।

एक सेठ मर गया । उसका लड़का दुराचारी था । सेठानी ने उसे धन नहीं दिया । लड़के ने शाहजहाँ बादशाह से रिपोर्ट की । बादशाह ने सेठानी को तुलवाकर कहा ।

बादशाह—पचास हजार रुपये इस लड़के को दो और एक लाख खजाने में जमा करो ।

सेठानी—(आश्चर्य से) हुजूर, मेरे लड़के को तो रुपये मिलना ही चाहिये क्योंकि यह उसके पिता का पुत्र होनेसे उत्तराधिकारी है । पर मुझे यह समझ में न आया कि गरीब निवाज का मेरे पति से क्या रिश्ता है जो १ लाख रुपया चाहते हैं।

१८४—खिचड़ी खायँगे ।

बादशाह—(राजदूत को खड़ी चूसते देख) अजी, क्या हथियाँ भी खा लेंगे ! कुत्ते क्या खायँगे ।

राजदूत—(बादशाह से जो बीमारी के कारण खिचड़ी खा रहे थे) खिचड़ी खायँगे ।

१८५—जैसे के पास वैसा ।

शाहजहाँ—(ईरानी दूत से नाराज होकर) क्या तुम्हारे बादशाह के पास होशियार दूत नहीं थे जो तुम्हारे समान मूर्ख को राजदूत बनाकर भेजा ?

राजदूत—हुजूर उनके पास सब प्रकार के आदमी हैं। वे जैसे बादशाह के पास वैसे ही राजदूत भेजते हैं।

३८६—पैरों से आया।

दूकानदार—(घूमने वाले से जो उसकी दूकान के सामने व्यर्थ ही खड़ा हो गया था) कहिये आप यहाँ कैसे आये।

आदमी—मैं यहाँ पैरों से आया हूँ।

३८७—मूर्ख पूछ बैठे तो ?

वकील—(विपक्षी के गवाह से) क्योंजी, ये लडे थे उस समय आप इनसे कितनी दूर खडे थे ?

गवाह—७ फुट ६॥ इंच।

वकील—क्या आपने अन्तर नापा था ?

गवाह—हाँ।

वकील—क्यों ?

गवाह—इस लिये कि कभी कोई मूर्ख पूछ बैठे तो ?

३८८—लगभग सब।

जज—(गवाह-बहिरे वैद्य से) तुम्हारी दवाइ से कितने आदमी मर जाते हैं ?

वैद्य—(यह समझ कर कि "कितने अच्छे हो जाते हैं") लगभग सब।

३८९—सोने की खदान। ✓

परीक्षक—बताओ सोने की खान कहाँ कहाँ है?
विद्यार्थी—रात को प्रायः सभी घरों में।

३९०—पी मत जाना? /

"यार तुम्हारी बोली बड़ी मीठी लगती है।"
"देखना कहीं चाय में डाल कर पी मत जाना।"

३९१—आप ही बड़े हैं। ✓

हेडमास्टर—(नायब से) मास्टर तुम बड़े गधे हो हर एक काम बिगाड़ देते हो।

नायब—जी नहीं हुजूर बड़े तो आपही हैं मैं तो छोटा हूँ।

३९२—मनुष्य की जान कहाँ है?

"क्यों यार मनुष्य की जान कहाँ रहती है?"

"भाई मनुष्य की बात तो मनुष्य जाने पर मेरी जान तो घर पर है।"

३९३—आँख में आँज लीजिये।

पंडित जी—भाई, इस प्रसाद को तो बाँट दो।

शिष्य—अजी पंडित जी! प्रसाद थोर [illegible]। मैं ऐसा महीन बाँट दूँगा कि आँख में आँज लीजिये।

३९४--छेड़ने ...छोड़ने वाला था ?

शेर वहादुर—(खिताव पाये हुये) आज लडाई में मैंने वह वहादुरी का काम किया, कि कुछ न पूछो।

मित्र—कुछ क्यो न पूछो ? क्या कहने में शर्म आती है ?

शेर वहादुर—वहादुरी में शर्म कैसे ? अच्छा तो सुन लो, एक ही निशाने में मैंने एक सिपाही का पैर काट डाला।

मित्र—अरे ! पर उसका सर कैसे छोड दिया ?

शेर वहादुर—यही तो अफसोस है, कि विचारे का सिर ही न था। यदि उसका सिर होता तो भला मैं उसे छेडने . (वाला था) अरे भूला, छोडने वाला था ?

३९५--दो लड्डू कैसे छोडता ?✓

"चलिये न पंडितजी, जरा हवा खा आवे।"

"ना भाई, यदि पेट में जगह होती तो पत्तल पर के दो लड्डू कैसे छोडता ?"

३९६--एक सॉस में रामायण।

"क्यो भाई रामायण को तुम एक घंटे में पूरी पढ़ सकते हो ?"

"आप तो एक घंटे की कहते हो, पर मैं तो एक ही सांस में पढ़ने की ताकत रखता हूँ।"

"मै तुलसीकृत रामायण की बात कर रहा हूँ।"
"जी हाँ! मै भी उसी की बात कर रहा हूँ।'
"(रामायण देकर) अच्छा पढ़िये इसे एकही साँस में!"
'(पढ़ा) रा.......मा ....य ....ण।"

१९७—पिताजी तुम।

एक कविजी के एक ही लड़का था। कविजी ने उसे बता रखा था कि सदा तुकबन्दी से बातचीत करने से कविता करना आ जाता है। एक रोज लड़के ने कहा, "गधे की दुम!"

कविजी ने पूछा, "कौन?"

लड़का (तुक मिलाकर) "पिताजी तुम!"

१९८—बहुत अच्छा (वैरी गुड)।

एक बढ़ई किसी अंग्रेज की कुर्सी सुधार कर ले गया।

अंग्रेज—(अंग्रेजी में) वैरी गुड (बहुत अच्छा)।

बढ़ई—हुजूर मैने तो अच्छी सुधारी है अब यह वैरी गुड हो गई तो मै क्या करूँ!

१९९—कहीं २ चावल भी हैं।

एक बार एक नाई किसी परेश के साथ उसके ससुराल गया। रात को भोजन परसा गया। नाई के भोजन में एक कौर

में एक ककर आ गया था। उसने उसे जोर से दाँतों से मसका। उसमें आवाज हुई जिसे मकान मालिक ने सुना और बोला, "क्यों खवास क्या ककर है?"

नाई—नहीं तो साहब, कहीं कहीं चावल भी हैं।

४००—आग लग गई है।

सबसे पहिले वाल्टर रेले नाम के व्यक्ति ने तमाखू पीना आरम्भ किया एक दिन वह कुर्सी पर बैठा चुरुट पी रहा था, इससे उसके सिर पर उसका धुँआ छा गया था। नौकर ने यह देख कर घबरा गया। (उसने सोचा बिना आगी के धुँआ नहीं हो सकता। शायद मालिक के सिर में आग लग गई है इससे मुँह से धुआँ निकल रहा है) उसने जल्दी जाकर एक वाल्टी पानी लाकर वाल्टर रेले के ऊपर डाल दिया।

वाल्टर रेले—(नाराज होकर) क्यों रे, पानी क्यों ऊपर डाल दिया?

नौकर—सरकार, मैंने समझा आपके सिर में आग लग गई है।

४०१--कल से पढाई होगी।

मास्टर—(लड़को से) अब कल से पढाई शुरू होगी, इससे सब अपनी अपनी किताबें लेकर आना।

एक लड़का—मास्टर साहब, जब कल (मशीन) से पढ़ाई होगी तो किताबों की क्या आवश्यकता है!

४०२—नये वर्ष का भाग्य। ✓

बालक—पिताजी, इस वर्ष आपका भाग्य बड़ा तेज है।

पिता—क्यों, क्यों?

बालक—इस वर्ष आपको मेरे लिये पुस्तकें नहीं लेनी पड़ेंगी। क्यों कि इस वर्ष मै इसी क्लास में रह गया।

४०३—घोड़ा पाँव से ही तो चलता है।

एक आदमी फुट-पाथ (सड़क के किनारे आदमियों के चलने का मार्ग) में घोड़े पर बैठकर चल रहा था।

सिपाही—(घोड़ेवाले से) जानते नहीं यह रास्ता पाँव से चलनेवालों के लिये है?

आदमी—मेरा घोड़ा भी तो पाँव से चलता है।

४०४—त मुर्गी का।

एक आदमी—(मुर्गीवाले से) ए, मुर्गी के! क्या दाम लेगा?

मुर्गीवाला—मेरी मुर्गी के आठ आने। ए मुर्गी का, क्या देगा?

४०५--गिर पड़ा और लग गई।

मास्टर—भागवत, आज तुम देर से स्कूल क्यों आये?

भागवत—मैं गिर पडा था और लग गई थी।

मास्टर—कहाँ गिर पडा था? और क्या लग गई थी?

भागवत—चारपाई पर गिर पड़ा था और नींद लग गई थी।

४०६--आप ही आदमी बन जाइये।

भिखारी—बाबूजी थोडासा आटा मिल जाय।

बाबूजी—जाओ फिर आना। इस समय कोई आदमी नहीं है जिससे दिला दूँ।

भिखारी—आप ही थोड़ी देर के लिये आदमी बन जाइये।

४०७--फीस न लेंगे?

रोगी—धन्य डाक्टर साहब! आपने मेरी जान बचा ली।

डाक्टर—नहीं नहीं, सब ईश्वर की कृपा है।

रोगी—तो क्या डाक्टर साहब आप फीस न लेंगे?

४०८--ऐसा सम्बन्ध हमारे यहाँ नहीं है।

डिप्टीइंस्पेक्टर—तुम्हारे नाना का दामाद तुम्हारा कौन हुआ?

लड़का—ऐसा सम्बन्ध हमारे यहाँ नहीं होता।

४०९—मास्टर साहब की गल्ती।

पिता—राम, पहिले तो तू अच्छे नम्बर लेता था, पर दो दिन से गोला क्यों मिलता है?

राम—यह मास्टर साहब की गल्ती है। जो लड़का मेरे पास बैठता था उसे अब दूसरी जगह बैठाते हैं।

४१०—नर्क भी गय हैं?

एक—यह शहर आपको कैसा लगता है?

दूसरा—नर्क के समान।

एक—तो क्या आप नर्क भी हो आये?

४११—पहिले फीस देओ।

"तुम चोरी करना खूब जानते हो, कृपा कर मुझे भी सिखला दो।

"पहिले मेरी फीस ले आओ।

४१२—आप हैं।

भद्र पुरुष—(दुष्ट लड़के से) क्या तुम्हारे जैसा शैतान भी कोई है?

दुष्ट लड़का—आप।

४१३—पाँच देव रक्षा करें।

एक नदी के तट पर विशाल वृक्ष के नीचे दो यात्री ठहरे हुये थे। वहाँ एक ग्वाला भी भैंसों को चराता हुआ बैठा था। एक यात्री ने जो ब्राह्मण था, स्नान करके पूजा आरम्भ की और यह स्तुति कहना शुरू किया—

सदा भवानी दाहिनी, सनमुख रहत गनेश।
पाँचदेव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु महेश॥

यह सुन दूसरा यात्री जो भोजन बना रहा था। पंडित जी को व्यंग करते हुये बोला—

सदा आग रहे सामने, ऊपर ताके भटा।
पाँच देव रक्षा करें, मिर्ची, नमक अटा॥ (आटा)॥

यह सुन ग्वाल को भी हँसी आ गई और उसने अपना सप्तम स्वर खोला—

सदा भैंसिया दाहिनी, सनमुख रहत लठा।
पाँच देव रक्षा करें, दूध, दही और मठा॥

४१४--आप कर सकते हैं।

एक दिन राजा भोज ने अपनी सभा में यह प्रश्न पूछा—"जो ईश्वर नहीं कर सकता वह मैं कर सकता हूँ।"

जब कोई भी पण्डित इस प्रश्न की सत्यता या असत्यता को सिद्ध नहीं कर सका, तब कविवर कालिदास ने कहा—

"महाराज, आपका कहना बिल्कुल ठीक है।"

राजा भोज—क्यों ठीक है?"

कालिदास—ईश्वर का राज्य सारे संसार और ब्रह्माण्ड में है। यदि वह किसी से नाराज हो जाय तो इसे अपने राज्य में से नहीं निकाल सकता। पर आप ऐसे मनुष्य को अपने राज्य से निकाल सकते हैं।

४१५—कितने कौए हैं?

अकबर—दिल्ली में कितने कौए हैं?

बीरबल—९ ९ ९ ९ हैं।

अकबर—कम ज्यादा तो न होंगे।

बीरबल—कभी नहीं। गिनवाकर देख लीजिये।

अकबर—यदि कम हुए तो?

बीरबल—तो इसका कारण होगा। यदि ज्यादा निकलें तो समझिये कि बाहर से कुछ कौए मेहमानी खाने आये हैं पर कम निकलें तो समझिये कि बाकी बाहर गये हैं।

४१६—लेने वाले का हाथ ऊँचा।

भोज—लेने वालों का हाथ नीचा और देने वाले का ऊँचा रहता है। क्या कभी इसका उल्टा भी होता है?

कालिदास—जी हाँ, जब पान दिये जाते है, तब लेने वाले का हाथ ऊँचा रहता है।

४१७-बाप को बाप न कहे।

एक चपरासी का लड़का पढ़ लिखकर थानेदार हो गया। एक दिन पिता अपने पुत्र से मिलने के लिये गया। पुत्र अपने प्रतिष्ठित मित्रों के साथ बैठकर गपशप कर रहा था। पिता के वस्त्र अच्छे नहीं थे। इससे पुत्र ने उसका यथोचित आदर सत्कार न किया। साधारण नमस्कार किया। पिता भी मडली में बैठ गया। कुछ समय के पश्चात् एक मित्र ने अंग्रेजी मे थानेदार से पूछा—"ये आपके कौन है।"

थानेदार—My friend मेरे दोस्त।

चपरासी ने दोस्त (friend) शब्द अटकल से दोनो की बात चीत का अर्थ समझ लिया और उस पूछने वाले से कहा। "नहीं जी, मैं इनका दोस्त नहीं, इनकी माँ का दोस्त हूँ।" इतना कह क्रोध और दुख से विह्वल हो वह वापिस लौट आया।

४१८-उष्ट पीठ देउन टाक।

एक मराठा शहर के होटल में गया और भोजन के लिये कहा। मैनेजर ने उसे ठीक स्थान पर बैठाकर नौकर से भोजन

मेरे निदान कुछ कर जाय या कर जाय। जाहे जिनमे जैसा चाहूँ वैसा करा सकता हूँ। तभी तो आफीसर, देशसुधारक, समाज-सुधारक, किसान, मजदूर आदि सभी मेरी ओर ताकते रहते हैं। अत मै ही सर्वश्रेष्ठ हूँ।

४२०—किस दिन की बात है ?

वकील—(गवाह से) किस दिन इनका झगड़ा हुआ ? जानते हो ?

गवाह—अच्छीतरह से।

वकील—किस दिन ?

गवाह—जिस दिन पानी गिरता था।

वकील—झगड़ा किस समय हुआ ?

गवाह—दिन के समय।

वकील—नहीं, कितने बजे।

गवाह—हमारे गाँव में कुछ नहीं बजते।

वकील—दिन कितना चढ़ा था ?

गवाह—चढ़ा नहीं था। उतर गया था।

वकील—कितना उतर गया था ?

गवाह—दो पिराना (हल हाँकने की लकड़ी)

४२१—डर शब्द के माने।

शिक्षक—(विद्यार्थियों से) नैपोलियन इतना बलवान और

बहादुर था कि वह डर शब्द के माने भी नहीं जानता था।

एक विद्यार्थी—वह बड़ा मूर्ख था।

शिक्षक—क्यों ?

विद्यार्थी—इस जरा से शब्द का माने नहीं मालूम। इससे ज्यादा बेवकूफी और क्या होगी। नहीं मालूम था तो डिक्शनरी देख लेता।

(शब्द कोष)

४२२—कहके बताऊँ या करके ?

एक—आपका नाम क्या है ?

दूसरा—कहके बताऊँ या करके ?

एक—करके बताना तो अधिक अच्छा है।

दूसरे—न एक घोंटा लगाया।

एक—अरे यह क्या करता है ?

दूसरा—(घोंटा मारते हुए) देख, यह तो घोंटा और यह दीन (दिया)। समझा ! मेरा नाम घोंटा दीन।

४२३—लड़कों की दुआ।

एक—कहिये मौल्वी साहब लड़कों को कहाँ ए जाते हो ?

मौल्वी—इन्हें मसजिद में ले जाता हूँ। ये वहाँ खुदा से दुआ माँगेंगे, ताकि पानी वरसे। क्योकि वालको की वातें खुदा जल्दी मानता है।

एक—यदि ऐसा होता तो, मौल्वी साहव! अवतक आप भी इस दुनियाँ में न रहते। क्योंकि आपकी मार के कारण लड़के रोज ही खुदा से विनती करते हैं।

४२४—एक बजा है।

एक शैतान लड़का हमेशा एक दर्जी के पास जा पूछा करता था कि क्या वजा है? एक दिन दर्जी काम में लगा था कि इस लड़के ने वार २ वही प्रश्न पूछकर उसे तग करना शुरू किया इस पर दर्जी ने उसे पास में रखा हुआ डडा एक जमाकर कहा

"देखा! एक बजा है।"

४२५—तीन बजे हैं।

पत्नि—(रात में तीन बजे आये हुए पति को डाँटते हुए) अव तीन वजे घर की याद आई होगी?

पति—अभी तीन नहीं वजे। एक वजा है।

पत्नि—वाह! मैंने अभी तीन वजते सुना है।

पति—तुम ने एकही वार सुना होगा पर मैंने भी तो अभी एक वजते सुना। सो भी एक वार नहीं तीन वार। क्या मैं झूठ कहता हूँ?

४२६—मेरी बात नहीं मानते ?

एक सज्जन दूसरे के यहाँ मिलने गये। वह घर में था। जब नौकर ने कहा तो उसने कह दिया कि "उनसे कह दो कि घर नहीं हैं।" नौकर ने कह दिया। पर उस सज्जन ने उनकी बातें सुन ली थी। वह कुछ न बोला और घर चला गया।

एक दिन इस मनुष्य को उस सज्जन के घर जाने का काम आया। वह भीतर था। ज्योंही इसने आवाज लगाई त्योंही उसने कहा—"भीतर नहीं हैं।"

मनुष्य—वाह! भीतर कैसे नहीं हैं? मैंने आवाज पहिचान ली।

सज्जन—नहीं। नहीं हैं। आपको मानना चाहिये क्योंकि मैंने तो तुम्हारे नौकर का कहना मान लिया था। क्या तुम मेरी बात न मानोगे?

❁ समाप्त ❁